Read and Laugh Series हास्यरस-धारा

और

जवानी बनाम बुढ़ापा

उर्फ़

(मियांकी जूती मियांके सर)

हास्य-पूर्ण नाटक

(सचित्र)

Moliere—4-6.

लेखक—

श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए० एल० एल० बी०

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी,
२०३, हरिसन रोड, कलकत्ता।
शाखा—ज्ञानवापी, काशी।

तृतीय बार] १९३२ [मूल्य १॥)

प्रकाशक—
बैजनाथ केडिया,
प्रोप्राइटर—
हिन्दी पुस्तक एजेन्सी,
२०३, हरिसन रोड,
कलकत्ता।

मुद्रक—
किशोरीलाल केडिया,
"वणिक् प्रेस"
१, सरकार, लेन,
कलकत्ता।

वक्तव्य

प्रिय पाठक !

आज मैं फिर आप लोगोंके सामने अपने गुरु मोलियरके दो नाटकोंको हिन्दुस्तानी बनाकर लाया हूं। गो आप पहले इनको "मासिक मनोरंजन" और 'हिन्दी सर्वस्व' में देख चुके हैं तो भी आपसे इनपर एक नज़र डालनेके लिये मैं अनुरोध कर रहा हूं। क्योंकि पहलेसे अब इनमें बहुत कुछ फ़र्क हो गया है। उम्मीद है कि जिस तरह से आपने 'मार-मारकर हकीम' 'आँखोंमें धूल' और 'हवाई डाक्टर' को खुले दिलसे अपनाया है उसी तरहसे और उसी तपाकसे इनको भी आप आवभगत करके अपनायेंगे। यह हिन्दुस्तानियोंकी अपूर्व अतिथिसेवा और कोमल हृदयकी प्रशंसा सुनकर फ्रांससे आपसे मिलनेके लिये आये हैं। मगर विदेशी भाईकी सूरतमें नहीं बल्कि प्यारे हिन्दुस्तानी बनकर। देखूं तो सही आप इनसे कैसा बर्ताव करते हैं।

पाठकगण, सम्पादकगण और नाटकमण्डलियोंके एक्टरगण, जिस तरहसे आप सब लोगोंने मेरे नाटकोंको चावसे पढ़कर, बढ़ियासे बढ़िया उनकी समालोचनाएं करके, उनको स्टेजपर बार-बार खूबीके साथ खेलकर मेरा उत्साह बढ़ाया है उसके लिये मैं आप सब लोगोंको किन शब्दोंमें धन्यवाद दूं?

ईश्वरसे मेरी यही प्रार्थना है कि मुझे शक्ति दे कि जबतक जीवित रहूं तबतक मातृभाषा तथा आप लोगोंकी सेवामें उपस्थित रहूं। और अपने परम पूजनीय गुरु मोलियरके सब नाटकोंको अपनाकर हिन्दुस्तानी बना डालूं। और यों मोलियरको हिन्दुस्तानमें भी जीवित करके उनके नामकी धूम मचा दूं। यही मेरी गुरु-दक्षिणा है। इसके सिवा अपने गुरुको और क्या दे सकता हूं?

गोंडा
२ नवम्बर १९१८ } —जी० पी० श्रीवास्तव।

नाकमें दम

(Moliere No 4 Le Mariage Force)

मोलियरका यह नाटक पहलेपहल तीन अङ्कोंमें २९ जनवरी १६६४ को Louvre में खेला गया था। बादशाह Luus XIV ने जिनकी उमर उस वक्त २६ बरसकी थी इसमें Gipsy का पार्ट खेला था। इसलिये इसका नाम उस वक्त Ballet du Roi पड़ गया था। उसके बाद १५ फ़्रेब्रुअरीको यह एक ही अङ्कमें Palais Roal में खेला गया। मोलियर मुसीबतमलका पार्ट करते थे।

M. Taschareau साहब फरमाते हैं कि इस नाटकमें दो मुख्य दृश्य हैं जिसमें फिलासफरोंका खाका उड़ाया गया है। मोलियरने इन दोनों दृश्योंको सिर्फ हंसानेहीकी गरजसे नहीं, बल्कि एक खास मतलबसे लिखा था। और उनका वह मतलब बड़ी खूबसूरतीसे पूरा भी हो गया। बात यह थी कि उन दिनों फिलासफर Aristotle के मतका प्रचार इस बुरी तरह हो रहा था और लोग उसकी तरफदारी करनेमें ऐसे खसी और जिद्दी हो रहे थे कि इस मतके खिलाफ जबान हिलाना एक बड़ा भारी जुर्म समझा जाता था। यहांतक कि पेरिसका विश्व-विद्यालय भी इस मतके तरफ़दारोंके जुल्मका ऐसा प्यासा हुआ कि उनको मौतकी सजा दिलानेकी नीयतसे पेरिसकी पार्लियामेंटसे १६२४ के चौथी सितम्बरवाले कानूनको जारी करानेवाला ही था कि ऐसे नाजुक वक्तमें मोलियरकी हास्यरसपूर्ण लेखनीने Aristotle के मतकी हँसी उड़ाकर फ्रांसमें इस होनेवाले

अन्धेरको रोका। उनके दो फिलासफर Pancrace (मौलाना अब्दुल हुवास) और Marphurius (पं० लक्कोबानन्द) ने स्टेजपर आकर वह धूम मचाई कि लोग शर्मसे कट-कट गये। और विश्व-विद्यालयको इस खूनी कानून जारी करानेकी फिर हिम्मत न पड़ी। मौलाना अब्दुलहुवासवाला दृश्य बेहद हंसानेवाला है बशर्ते कि ऐक्टिंग पूरे तरहसे हो। क्योंकि यह सीन एक्टिंगके लिहाज से ज़रा मुशकिल है।

मैंने इसके आधारपर हिन्दीमें यह 'नाकमें दम' पहिले १९१२ में लिखा था जो आरेके "मासिक मनोरंजन" में प्रकाशित हुआ। उसके बाद १९१७ में मैंने फिर इसको नए सिरेसे लिखकर जहांतक मुमकिन हो सका मोलियरके मज़ाकको निबाहते हुए इसे हिन्दुस्तानी बनानेकी कोशिश की। इस दफे संन्यासियोंके दो नये दृश्य मिलाकर कुछ शिक्षा लानेकी भी चेष्टा की गई है। Gipsies के ballet नाचका अभाव लक्कानन्दके मजाकसे पूरा किया गया है। जहां फ्रांसीसी मज़ाक हिन्दुस्तानी रंगमें भद्दा मालूम हुआ, वहां उसी वज़नके हिन्दुस्तानी मज़ाकसे काम लिया गया है। १९२२ में गोंडा और फैज़ाबादमें इसके अभिनय दो बार हो चुके हैं। दोनों स्थानोंपर अब्दुलहुवासका पार्ट मुझीको करना पड़ा था। सौभाग्यसे हिन्दुस्तानी स्टेजपर भी इस नाटककी पूरी सफलता प्राप्त हुई।

पात्र

१-मुसीबतमल ... ... कुलच्छनीके साथ शादी करने-वाला एक बूढ़ा अमीर

२-सलाहबख्श ... ... मुसीबतमलका दोस्त

३-झटपटराय ... ... कुलच्छनीका चचा

४-बिगड़ेदिल ... ... झटपटरायका लड़का

६-मौलाना खप्तुलहवास ... ... यूनानी दार्शनिक

७-पं० सङ्कोचानन्द ... ... तत्वज्ञानी

८-उचक्कानन्द ... ... ज्योतिषी

९-घरबिगाड़ ... ... कुलच्छनीका प्रेमी और संन्यासी

पात्री

१०-मैडम कुलच्छनी ... ... झटपटरायकी भतीजी

पहला दृश्य

गोवर्द्धनचन्दके मकानका सामना

[चार संन्यासियोंका मिलकर गाते हुए आना]

कोरस

"दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसंतौ पुनरायातः ।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुस्तदपि न मुंचत्याशावायुः ॥
भज गोविंदं भज गोविंदं भज गोविंदं मूढमते ॥१॥
प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणं ॥ध्रुव०॥
अग्रे वह्निः पृष्ठे भानू रात्रौ चिबुकसमर्पितजानुः ।
करतल भिक्षा तरुतलवासस्तदपि न मुंचत्याशापाशः ॥२॥
यावद्वित्तोपार्जनसक्तस्तावन्निजपरिवारो रक्तः ।
पश्चाद्धावति जर्जरदेहे वार्तां पृच्छति कोऽपि न गेहे ॥३॥

जटिली मुण्डी लुंचितकेशः काषायांबरबहुकृतवेषः ।
पश्यन्नपि च न पश्यति मूढ उदरनिमित्तं बहुकृतवेषः ॥४॥

भगवद्गीता किंचिदधीता गङ्गाजललवकणिका पीता ।
सकृदपि यस्य मुरारिसमर्चा तस्य यमः किं कुरुते चर्चा ॥

अंगं गलितं पलितं मुंडं दशनविहीनं जातं तुंडम् ।
वृद्धो याति गृहीत्वा दंडं तदपि न मुंचत्याशापिंडम् ॥६॥

बालस्तावत् क्रीडासक्तस्तरुणस्तावत्तरुणीरक्तः ।
वृद्धस्तावच्चिंतामग्नः परे ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः ॥७॥

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननीजठरे शयनम् ।
इह संसारे खलुदुस्तारे कृपया पारे पाहि मुरारे ॥८॥

पुनरपि रजनी पुनरपि दिवसः पुनरपि पक्षः पुनरपि मासः ।
पुनरप्ययनं पुनरपि वर्षं तदपि न मुंचत्याशामर्षम् ॥९॥

वयसि गते कः कामविकारः शुष्के नीरे कः कासारः ।
नष्टे द्रव्ये कः परिवारो ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः ॥१०॥

नारीस्तनभरनाभिनिवेशं मिथ्यामायामोहावेशम् ।
एतन्मांसवसादिविकारं मनसि विचारय वारंवारम् ॥११॥

कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः का मे जननी को मे तातः ।
इति परिभावय सर्वमसारं विश्वं त्यक्त्वा स्वप्नविचारम् ॥

पहला अङ्क

गेयं गीता नामसहस्रं ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्रम् ।
नेयं सज्जनसंगे चित्तं देयं दीनजनाय च वित्तम् ॥१३॥
यावज्जीवो निवसति देहे कुशलं तावत्पृच्छति गेहे ।
गतवति वायौ देहापाये भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये ॥
सुखतः क्रियते रामाभोगः पश्चाद्धन्त शरीरे रोगः ।
यद्यपि लोके मरणं शरणं तदपि न मुंचति पापाचरणम् ॥

—श्रीशंकराचार्य

[मुसीबत मलका अपने मकानकी खिड़कीपर दिखाई देना]

मुसीबत०—(खिड़कीपर) कौन हो भाई? क्यों सुबह सुबह आस्मान सरपर उठा रखा है?

१ संन्यासी—ईश्वरका भजन करते हुए जाते हैं बाबा।

मुसीबत०—तो इतना गला फाड़नेकी क्या जरूरत है? क्या ईश्वर आजकल ऊँचा सुनने लगे हैं?

२ संन्यासी—आहा! प्रातःकालमें तो ईश्वर भजनसे सकल संसार गूंज उठना चाहिये। परन्तु हा! अब भारत-की गति कैसी हो गयी कि ईश्वरभजन भी अब लोगोंके कानोंमें बुरा मालूम होने लगा!

मुसीबत०—आखिर इस भजन-भजनकी जरूरत क्या है? ईश्वर अच्छे हों चाहे बुरे हों। तुमसे मतलब?

३ संन्यासी—लालाजी, ईश्वर सकल संसारका सिर-

जनहार है, पालनहार है। वह परमात्मा परम दयालु जगदीश्वर है।

मुसीबत०—अच्छा, तो परम नहीं परम परम परम-दयालु जगदीश्वर हैं, होंगे। हमसे क्या सरोकार? दुनिया-को बनाया। हमको पैदा किया। अच्छा किया। जब उन्हें ग़रज़ थी तब तो ऐसा किया। हम तो उनसे कहने नहीं गये कि ऐसा कीजिये, वैसा कीजिये। तो फिर हमसे उनसे कैसा सरोकार? तुम्हीं बताओ, ठीक है न?

१ संन्यासी—नहीं दाताजी। ऐसा कहना उचित नहीं है। हमको आपको क्या—वरन् सकल जीव-जन्तुओंको उसका गुण गाना चाहिये।

मुसीबत०—जी हां, तुम्हारी तरह दुनियामें सब थोड़े ही फ़ालतू हैं, जो अपना काम छोड़के इसमें अपना वक्त ख़राब करें?

२ संन्यासी—बाबा, यह भी तो अपना ही काम है। मनुष्य तो स्वार्थी जीव है। वह ईश्वरका स्मरण करता है तो अपने ही किसी न किसी स्वार्थके लिये।

मुसीबत०—तो क्या उनकी याद करनेसे लोगोंका मतलब पूरा हो जाता है?

३ संन्यासी—बाबा, ईश्वर नाममें तो वह गुण है कि

सकल मनोकामना सिद्ध हो जाती है। कोई सत्य भावसे उनका स्मरण भी तो करे।

मुसीबत०—अगर ऐसा है, तो कहिये अपनी शादीके लिये उनका फिर ध्यान करूं ?

१-२-३-४-संन्यासी—अयं ! इस अवस्थामें विवाह !!!

मुसीबत०--क्यों क्या, हर्ज है ? तुम लोग तो ऐसे चकराये कि जैसे मैं फांसीपर चढ़ने जाता हूं।

१-संन्यासी--दाताजी, इस अवस्थामें अब अपनी मुक्तिके लिये ईश्वरका ध्यान कीजिये। इस लोकसे संबन्ध तोड़िये। अपना परलोक बनाइये।

२ संन्यासी—इस अवस्थामें विवाहकी वेदीपर चढ़ना फाँसी चढ़नेसे भी कठिनतर है। क्योंकि इसकी फंसरी तो कुछ ही घड़ीमें छुटकारा दे देती है ; परन्तु उसकी फंसरी शिरपर चिन्ताओंका टोप पहनाकर सदैव दम घोंटती रहती है। और—

"चिता चिन्ता समायुक्ता बिन्दुमात्रं विशेषतः।
सजीवं दहते चिन्ता निर्जीवं दहते चिता ॥"

३ संन्यासी—हा भारतमाता ! जहां तेरे पुत्र जब वृद्धावस्थाको प्राप्त होते थे, संसारके झगड़ोंसे दूर भागते थे। पर्वतों और तपोवनोंको निकल जाते थे और एकान्तमें

उस दाताके ध्यानमें अपने अन्तिम दिवस बिताकर जीवन सुफल करते थे। तहां धर्म कर्मकी अब यह दशा हो गयी!

"प्रथमे नार्जिता विद्या द्वितीये नार्जितं धनम्।
तृतीये न तपस्तप्तं चतुर्थे किं करिष्यसि॥"

मुसीबत०—वाह! वाह! क्या अच्छी सलाह है। अगर किसीको मरनेमें अभी सालभरकी देर हो, तो इस सलाहपर चलनेसे कल ही मर जाय। जब घरपर मौत न आती हो, तो अलबत्ता जङ्गलों पहाड़ोंकी ख़ाक छाने और चीते और भेड़ियेके पेटमें जाय। मगर आपकी दुआसे यमराज साहब हैज़ा ताऊन तपेदिक डङ्गो डिङ्गोफ़ीवर इन्फ्लुइञ्ज़ा और निमोनियाके रूपमें फ़ैशन बदलकर हर तीसरे महीने देखिये तो मौजूद रहते हैं। अगर ईश्वरको यही मञ्ज़ूर होता कि दुनियाके लोग जङ्गलोंमें ठोकरें खायं, तो वह इतने दुनियामें मजे क्यों पैदा किये हैं? इतनी प्यारी प्यारी सूरतें फिर किसके लिये बनायी हैं? सोचो तो। दो दिनकी ज़िन्दगी है। आख़िर मरना तो है ही। इसको क्यों वाही तबाहीमें बिताते हो? धोबीके कुत्तेकी तरह मारे-मारे फिरते हो? लड़कपन खेल-कूदमें गुज़रा। जवानी पेटके धन्धेमें बीती। अरे अब बुढ़ापेमें तो आराम कर लो। दुनियाके कुछ मज़े उठा लो। यही बुढ़ापा तो

एक इतमीनानका वक्त है। अगर दुनियामें आकर बेरङ्ग ही वापस गये तो यहां पैदा होनेका फ़ायदा क्या ?

गाना।

मुसीबत०—बेकार यार करते हो जीवन बरबाद।
दरदरका फिरना छोड़ो, दुनियासे मत मुख मोड़ो।
वृद्धावस्था आयी है, अब भी तो कुछ सुख भोगो।
हुए क्यों तुम बैरागी, रोती होगी घरवाली।
बे घर हो तो घर कर लो, हैं लाखों जोबनवाली।
हां, एकसे एक हैं अल्हड़ वो कमासिन हैं भोली वो
भाली हैं आँखे तो खोलो ज़रा। बेकार०।

१ संन्यासी—

"न भूतपूर्वं न कदापि वार्ता, हेम्नः कुरंगो न कदापि दृष्टः।
तथापितृष्णा रघुनन्दनस्य, विनाशकाले विपरीत बुद्धिः॥"

२ - संन्यासी—

"स्त्रियो हि मूलं निधनस्य पुंसः, स्त्रियो हि मूलं व्यसनस्य पुंसः
स्त्रियो हि मूलं नरकस्य पुंसः, स्त्रियो हि मूलं कलहस्य पुंसः।

१-२-३-४-सं—बेकार यार करते हो जीवन बरबाद।
"अनभ्यासे विषं शास्त्रं अजीर्णे भोजनं विषम्॥
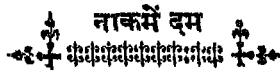
मूर्खस्य च विपं गोष्ठी वृद्धस्य तरुणी विषम् ।"
यह बात यार रखना हमारी भी याद ।

(संन्यासियोंका प्रस्थान)

[मुसीबतमलका अपने मकानसे बाहर निकलना और फिर अपने दरवाजेकी तरफ़ घूमकर कहना ।

मुसीबत०—(अपने घरके आदमियोंसे) सुना ? मैं अभी लौट आता हूं । घरकी हिफ़ाज़त अच्छी तरहसे करना । ख़बरदार, कोई चीज़ गड़बड़ न होने पावे । अगर कोई मुझे रुपये देनेके लिये आवे, तो मुझे फ़ौरन मुन्शी सलाहबख़्शके यहांसे बुलवा लेना । मगर कोई मांगने आवे तो कह देना कि वह देहली चले गये । समझे ?

(सलाहबख़्शका आना)

सलाह०—(आख़िरी बात सुनकर) शाबाश ! हुकुम दें तो इस तरहका ।

मुसीबत०—अख़्ख़ाह ! मुन्शी सलाहबख़्श ! ख़ूब आये आप इस वक्त । मैं आपहीके यहां जा रहा था ।

सलाह०—क्यों ? क्यों ? ख़ैरियत तो है न ?

मुसीबत०—आपसे बड़े ज़रूरी मामलेमें सलाह लेनी है ।

सलाह०—मैं हर तरहसे ख़िदमत करनेके लिये तैयार हूं । कहिये तो सही, मा॰ ॰ क्या है ।

मुसीबत०—अच्छा तो फिर ज़रा ग़ौरसे सुनिये,क्योंकि बिना दोस्तोंकी रायके कोई काम करना मेरे ख़्यालमें ठीक नहीं।

सलाह०—मैं साहब भला किस क़ाबिल हूं, जो आपको राय दे सकूं। यह सब आपकी क़दरदानी है। अच्छा कहिये, बात क्या है।

मुसीबत०—मगर पहले आप मुझसे वादा कीजिये कि इस मामलेमें मुझे आप अपनी सच्ची राय बताइयेगा।

सलाह०—तो झूठी राय देनेकी मुझे क्या ज़रूरत पड़ी है?

मुसीबत०—देखिये, कोई बात मुँहदेखी न कहियेगा न ख़ुशामदाना कहियेगा। क्योंकि ऐसी बातें सच्ची नहीं होतीं।

सलाह०—जी हाँ, कभी नहीं।

मुसीबत०—मेरी रायमें जो दोस्त सच्चे दिलसे बातें नहीं करता, वह दोस्त नहीं दुश्मन है।

सलाह०—बेशक।

मुसीबत०—मगर सच्चे दोस्त आजकल कहाँ मिलते हैं?

सलाह०—यह भी आपका कहना ठीक है।

मुसीबत०—अच्छा, तो आप मुझसे वादा करते हैं कि आप मुझे अपनी सच्ची और सही राय देंगे?

सलाह०—हाँ साहब, वादा करता हूँ।

मुसीबत०—अच्छा, क़सम खाइये।

सलाह०—लीजिये,यह भी सही (मुसीबतमलके सरपर हाथ रखकर) आपके क़दम मुबारककी क़सम। मगर वह आखिर कौन-सी बात है,जिसमें इस क़द्र पाबन्दियोंकी ज़रूरत है?

मुसीबत०—मैं आपसे यह जानना चाहता हूं कि मैं दाढ़ी-मूछें मुंड़ा डालूं।

सलाह०—क्यों? क्या जूंए पड़ गये हैं या कोई मर गया है?

मुसीबत०—ईश्वर न करे। मगर बात यह है कि दाढ़ीमें इतना बोझ होता है कि कमर झुका देती है। इसीलिये अगर हम लोग भी अपना लङ्गर कटा दें तो ज़रूर कमर सीधी हो जायगी। और असल बात यह है कि औरतको प्यार करनेमें दाढ़ीकी वजहसे बड़ी उलझन होती है।

सलाह०—अजी हज़रत, अब आपको औरतसे क्या सरोकार?

मुसीबत०—नहीं सरोकार है तो अब हो जायगा। सरोकार करनेसे सरोकार होता है। यही तो मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि शादी करूँ?

सलाह०— कौन ?—आप ?

मुसीबत०—हाँ, मैं, मैं, मैं, खुद।

सलाह०—तो दाढ़ीकी फ़िक्र आप फ़जूल करते हैं। ईश्वर चाहेगा तो शादी होते ही आप अच्छी तरह मुड़ जायेंगे।

मुसीबत०—वाह! वाह! तो इससे बेहतर फिर क्या चाहिये? जोरूकी जोरू और बाल-सफ़ाकी पुड़ियाकी पुड़िया।

सलाह०—आप होशमें हैं न?

मुसीबत०—क्यों, आखिर इस सवालसे मतलब?

सलाह०—आप मुझे एक बात बताइये।

मुसीबत०—कहिये।

सलाह०—आपकी उमर क्या होगी?

मुसीबत०—मेरी उमर?

सलाह०—जी हां, आपहीकी।

मुसीबत०—क्या मालूम? मुझे कुछ ख्याल नहीं है। मगर मैं बिलकुल भला चंगा हूं।

सलाह०—तो भी अन्दाज़न कुछ तो मालूम होगा।

मुसीबत०—कुछ भी नहीं। कहीं उमरका ख्याल किसीको रहता है?

सलाह०—अच्छा, यह बताइये कि पहले पहल जब हमसे आपसे जान पहचान हुई थी उस वक्त आप के बरसके थे।

मुसीबत०—तब तो मैं सिर्फ बीस ही बरसका था।

सलाह०—देहलीमें हम आप के साल रहे?

मुसीबत०—आठ बरस।

सलाह०—और मुरादाबादमें?

मुसीबत०—सात बरस।

सलाह० उसके बाद आप कलकत्ते चले गये थे।

मुसीबत०—हां, वहां साढ़े पांच बरसतक रहा।

सलाह०—और वहांसे यहां कब आये?

मुसीबत०—सन् अंठानबेमें।

सलाह०—अच्छा, तो अंठानबेसे सन् बारहतक चौदह बरस। आठ बरस देहलीमें रहे बाईस। सात बरस मुरादाबादमें उन्तीस। पांच बरस कलकत्तेमें चौंतीस और बीस बरस जान-पहचान होनेके पहले, चौव्वन। इसलिये आपही-के हिसाबसे आप इस वक्त कमसे कम चौवन बरसके हैं।

मुसीबत०—मैं? मैं चौवन बरसका? क्या गज़ब करते हैं आप? यह कभी मुमकिन ही नहीं जनाब।

सलाह०—अजी नहीं साहब, मेरे जोड़नेमें कभी गल्ती

नहीं हो सकती। जब आपने सच्चा राय देनेके लिये मुझसे वादा करा लिया है, कसमें खिला ली हैं तो मैं आपसे यह ज़रूर कहूंगा कि आपके लिये शादी करना ठीक नहीं। यह सब झगड़े नवजवानोंहोके लिये छोड़ दीजिये। आपकी उमरवाले लोगोंको तो इसका ख़्यालतक भी नहीं करना चाहिये। शादी बरबादी तो मशहूर ही है। उसपर भी किसीने क्या ही अच्छा कहा है कि ब्याह करना दुनिया-भरकी सब बेवकूफियोंसे बढ़कर है। और फिर ख़ासकर इस उमरमें जब हम लोग बुज़ुर्ग और अक्लमन्द समझे जाते हैं। हम लोगोंको अब भगवद्भजन करना चाहिये न कि ऐसी बेवक़ूफ़ीमें फँसना। यही मेरी दोस्ताना सादी-सी सच्ची राय है। मैं आपको सलाह देता हूं कि शादी करनेका ख़्याल एकदम छोड़ दीजिये। और नहीं तो बूढ़े के मरनेके बाद इतने रोज़ आज़ाद रहकर अब आप अपने पैरोंमें सबसे कड़ी ज़ञ्जीर बांधना चाहते हैं तो वही 'मियांकी जूती मियांके सर' वाला हाल होगा। मैं क्या—सब लोग आपको बेवक़ूफ़ोंका सरदार कहेंगे और आप बुरी तरह हँसे जायंगे।

मुसीबत०—कभी नहीं। मैं तो शादी करनेपर तुला बैठा हूं। और ख़ासकर उस रंगीली रसीली अलबेलीके साथ शादी करनेमें कभी नहीं हँसा जा सकता।

सलाह०—आह ! तब तो बात ही और है। यह पहले आपने क्यों नहीं बताया ?

मुसीबत०—और क्या कहूं ? ऐसी ग़ज़बकी खूब सूरत है वह कि कुछ पूछिये नहीं। अभी सिन ही क्या है ? चढ़ती जवानी है। पूरी जवानीमें देखियेगा।

सलाह०—ओहो ! तब तो मैं ही ग़लतीपर था। आप ज़रूर शादी कीजिये। ऐसी शादी तो हर वक्त हर सिनमें रायज है।

"सद्यमन्नं फलं पक्वं नारी प्रथमयौवनम्।
सुभाषितं च ताम्बूलं सद्यः गृह्णाति बुद्धिमान्॥"

मुसीबत०—वाह ! वाह ! शास्त्रमें भी क्या ऐसा लिखा है ? ज़रूर लिखा होगा। लाइये, हाथ मुन्शी सलाहराम और क्या कहूं मैं आपसे। उस लड़कीको देखते ही मैं उसपर चपरगट्टू भी हो गया हूं।

सलाह०—तब आप फ़जूल किसीसे पूछ-तांछ करते हैं। अजी जनाब, ऐसी शादी तो मरनेके बाद भी रायज है।

"पसे मुरदन बनाए जाएंगे सागर मेरे गिलके।
लबे जां बख़्शके बोसे मिलेंगे खाकमें मिलके॥"

मुसीबत०—तो मुनासिब यही है कि मैं शादी कर डालूं।

सलाह० ज़रूर। क्योंकि मरनेके बाद कोई घरमें रोनेवाली भी तो चाहिये।

मुसीबत०—तभी तो मैं उसके चचासे मिल अपनी चटपट शादी ते कर ली है।

सलाह०—वाह! वाह! ख़ूब किया।

मुसीबत०—और शादी कलही होगी। अब देर नहीं सही जाती।

सलाह०—वाह! वाह!

मुसीबत० -क्यों मुन्शी सलाहबख़्श, आख़िर मैं शादी क्यों न करूं? क्या आप समझते हैं कि मैं शादी करनेके काबिल नहीं हूं? अजी उमरका ख्याल छोड़िये। असल चीज़ तो देखिये। क्या मेरे हाथ काम नहीं देते कि टांगें काम नहीं देतीं। किसी जवानको मेरे सामने खड़ा कर दीजिये फिर देखिये, किसके चेहरेपर ज्यादा दमक मालूम होती है। बाल सफेद हो गये हैं तो इससे क्या? यह तो दवोंके भी हो जाते हैं। (दांत दिखाता है) देखिये दांत, इसमें तो कोई ख़राबी नहीं है। अगर हो भी तो क्या? चार वक्त मैं ख़ूब चाब चाबके खाना नहीं खाता हूं? और हाज़मा मेरा देखिये कितना ज़बरदस्त है। अब तो आपके दिलसे हिचकिचाहट दूर हुई?

सलाह०—जी हां, बिलकुल। आपका कहना बहुत ठीक है। ज़रूर शादी कीजिये। पड़ोसी बड़ी दोआएँ देंगे।

मुसीबत०—शादी करनेके पहले मेरी भी राय नहीं थी। मगर अब जब इतनी-इतनी ज़बरदस्त वजूहात मुझे शादी करनेके लिये मजबूर कर रही है, तो फिर शादी क्यों न की जाये? जनाब, बड़ी क़िस्मतसे किसीको ऐसी फ़ैशनेबिल जोरू नसीब होती है। यह क्या कम ख़ुशी है कि जब मैं कहींसे थका-मान्दा घर आऊंगा तो वह मुझे हिलायगी, डोलायगी, खेलायगी, झुलायगी। और दूसरी बात यह है कि जहां शादी की तहां दो-चार दर्जन ताबड़-तोड़ बच्चे हो पड़े। फिर देखियेगा तमाशा। कोई इधर चहक रहा है। कोई उधर कूद रहा है। कोई चिल्लायगा—ओ मेले फ़ादल! कोई हाथ पकड़के खींचेगा—अले पापा दमलीका गुल आन दो। अः! अः! अः! मुझे तो अब सचमुच मालूम होता है कि मेरे बच्चे चारों तरफ़ खेल खेलकर मेरी दाढ़ी नोच रहे हैं।

सलाह०—बेशक! बेशक! इससे बढ़कर कौनसी ख़ुशी हो सकती है? ज़रूर शादी कीजिये। बहुत जल्द शादी कीजिये। मगर ज़रा ख्याल रखियेगा कि जब बच्चे हों तो एक जोड़ा हमको भी दीजियेगा।

मुसीबत०—तो आपकी इजाज़त है न ?

सलाह०—जी हां, भला मैं ऐसे नेक काममें क्यों बाधा डालने लगा !

मुसीबत०—बड़ी खुशीकी बात है कि अब आप मुझे यह सच्चे दोस्तकी तरह सलाह दे रहे हैं।

सलाह०—मगर यह तो बताइये, किससे आप शादी करनेवाले हैं ?

मुसीबत०—मिस कुलछनीके साथ।

सलाह०—अच्छा, वह···वह मैं समझ गया। तब तो ईश्वर ही खैर करे।

मुसीबत०—क्या कहा ?

सलाह०—यही कि जोड़ी बड़ी अच्छी है। चूकिये मत इनसे शादी कर डालिये।

मुसीबत०—न कहियेगा कैसा पसन्द किया है ?

सलाह०—क्या कहना है ! तक़दीर हो तो आपकीसी !

मुसीबत०—अह ! अह ! अह ! मारे खुशीके मैं तो घुला जा रहा हूं। आपका इस नेक सलाहके लिये हज़ार हज़ार शुक्रिया अदा करता हूं। इस शादीकी खुशीमें जो जलसा करूंगा उसमें आप जरूर शरीक होइयेगा। मैं आपको न्योता दे देता हूं।

सलाह०—न्योता देनेकी क्या ज़रूरत ? शादी होने तो दीजिये, फिर देखियेगा बिना बुलाये ईश्वर चाहेगा तो सैकड़ों रोज़ आपके घर पहुंचेंगे।

मुसीबत०—ईश्वर वह दिन तो दिखाये। जाइयेगा ? अच्छा, आदाबर्ज़।

सलाह०—(अलग) जब चूंटीके पर निकलते हैं तो उसके मरनेका दिन नज़दीक होता है। जब चिराग़की टेममें लपट उठती है तो वह बुझनेके क़रीब होता है। जब बुड्ढोंके दिलमें शादीका शौक़ चर्राता है तो उनकी बरबादी शुरू हो जाती है। कहां कुलच्छनी चढ़ी जवानीमें मस्त। ज़माने-की हवा खाये हुई, दुनियाको चराये हुई, और कहां यह काठके उल्लू मुसीबतमल। क़बरमें पांव लटकाये हुए। अक्लसे हाथ धोये हुए। जोड़ी हो तो ऐसी हो! जोड़ी हो तो ऐसी हो! (कहता हुआ जाता है)।

मुसीबत०—(अकेला) इस शादीसे ख़ुशी-ही-ख़ुशी होगी; क्योंकि इसका ज़िक्र सबको ख़ुश करता है। जिससे कहता हूं, वही ख़ूब हँसता है। वाह रे मैं! मैं ही मैं हूं इस वक्त। क़िस्मत हो तो ऐसी हो! क़िस्मत हो तो ऐसी हो!

दूसरा दृश्य

सड़क

(कुलच्छनीका गाते हुए आना)

गाना

बनूं बांकी दुल्हानियांरी प्यारी प्यारी जो शौहरको पाऊं ।
ब्याही जाऊं, मैडम कहलाऊं फिरतो मोटरपर थेटरको जाऊं
वहां यारोंसे होगा शेकहैण्ड, बैठा देखेगा मेरा हसबैण्ड ।
कोई डियर कहे, कोई दिलबर कहे, कोई डारलिंग मैडम ।
मैं नखरेसे बोलूं डियर कम, डियर कम ।
सबसे चुहल करूंगी, मटक मटक चलूंगी ।
फ़ैशनसे बन जोबन फबन संवर दिलको हरूंगी ॥

(मुसीबतमलका आना)

मुसीबत०—(अलग) अह ! अह ! अह ! देखते ही राल टपक पड़ी । क्या चाल है । क्या ढाल है । क्या आन है । क्या बान है । लचक देखो । अह ! अह ! कमरका पता ही नहीं मिलता किधर है ।

"एक तो हुस्न बला उस पे बनावट आफ़त,
घर बिगाड़ेंगे हजारोंके सँवरनेवाले ।"

भला ऐसा भी कोई आदमी निपोड़संख होगा जो इन-को देखे और उसका जी इनके साथ शादी करनेको न चाहे ? (कुलच्छनीसे) अरे ओ अपने आइन्दा शौहरकी प्यारी आइन्दा बीबी, क्या मैं आपसे पूछ सकता हूं कि आप इस वक्त कहां तशरीफ़ ले जा रही हैं ?

कुलच्छनी—आपका टोकना बिल्कुल बेजा और फ़ैशन-के ख़िलाफ़ है, इसलिये मैं इसका जवाब देनेसे इनकार करती हूं ।

मुसीबत०—अच्छा प्यारी, कल जब हमारी आपकी दोनोंको ख़ुशी-ख़ुशी शादी होगी, तब तो आप मुझे किसी चीजके लिये इनकार नहीं कर सकती हैं। क्योंकि आप कलसे मेरी चीज कहलायेंगी। आप मेरी, आपका सब बदन सरसे पैरतक मेरा। आपकी कनखियोंका सलकियोंका मैं ही अकेला मालिक। आपके पौडरवाले गालोंका मैं ही मालिक। दिल भड़कानेवाले आपके ओठोंका मैं ही मालिक। आपके नन्हें-नन्हें हाथोंका मैं ही मालिक। आपके······ ग़रज़ यह है कि आपके रोएं रोएंतक सब मेरे। जिस तरहसे चाहूंगा, मैं आपको प्यार करूंगा! क्यों प्यारी, इस शादीसे आप ख़ुश हैं न ?

कुलच्छनी०—आपका टोकना बिल्कुल बेजा और फ़ैशनके
[ख़िला]फ़ है, इसलिये मैं इसका जवाब देनेसे इनकार करती हूं।

कुलच्छनी—जी हाँ, खुशी तो जरूर है। क्योंकि घर-वालोंके हर वक्तके दबावसे मेरा नाकमें दम हो गया था। धन्य भाग! मैं उनके पंजोसे छूटती हूं। इसलिये नहीं कि कढ़ाईसे निकलूं और आगमें गिरूं। बल्कि इसलिये कि आज़ादीसे जिन्दगी गुजारूं और दुनियाके मजे उड़ाऊं, मगर आपकी बातोंसे मुझे मालूम होता है कि अभी आप-को फ़ैशनेबिल जेण्टिलमैन होनेमें बहुत कसर बाकी है। खैर, मैं इस कसरको पूरी कर दूंगी और आपके बदलेमें भी मैं ही खुद और ज्यादा फ़ैशनेबिल हो जाऊँगी। तो भी आपको हमेशा नये और अप-टू-डेट फैशनके मुताबिक मेरे साथ रहना पड़ेगा। क्योंकि मैं पुराने तरीकोंको एकदम नापसन्द करती हूं। जैसे मर्द आदमी है वैसे औरत भी आदमी है। और आदमी Social creature (समाजप्रिय जीव) है, इसलिये बिना सोसाइटीके मैं जिन्दा नहीं रह सकती। मुझसे मिलनेके लिये मेरे सैकड़ों दोस्त आया करेंगे। और उनके साथ मैं हमेशा club, party dinner, theatre वगैरहमें जाया करूंगी। आपको मेरे किसी मामलेमें किसी क़िस्मका दख़ल देनेका कोई अख्तियार या हक़ नहीं होगा। जब आप मुझसे मिलना चाहेंगे तो आपको इसके लिये मेरे पास पहिलेसे दरख़ास्त भेजनी

पड़ेगी, जिसके मंजूर होनेपर आप मुझसे हफ्तेमें मेरी फुर्सतके वक्त पांच मिनटतक मुझसे मिल सकेंगे। इससे ज्यादा वक्त शायद मैं आपको न दे सकूंगी। क्योंकि मुझे फुरसत बहुत कम रहेगी। मैं उम्मीद करती हूं कि आप उन बेवकूफ और शक्की मर्दोंकी तरह न होंगे जो अक्लके अन्धे अपनी जोरुओंको पिंजड़ेमें बन्द करके सामने बैठे दिन-रात पहरा दिया करते है। बल्कि आप मर्दोंमें एक नमूना होंगे और ऐसा कि आप बड़े फख्रके साथ मुझे अपने नवजवान दोस्तोंसे introduce करते रहेंगे। फिर तो हमारी आपकी ज़िन्दगी खूब मज़ेमें निबहेगी। मुझे यक़ीन है कि आप मेरी इन आजादियोंको पसन्द करेंगे और इनकी क़द्र करेंगे। क्योंकि "क़द्रगौहर (अपनी तरफ इशारा करके) शाह दानद (मुसीबतमलकी तरफ) या चिदानन्द जौहरी (वर्माओंको तरफ)"…मगर……यह क्या? आपका चेहरा एकदम down क्यों हो गया?

मुसीबत०—मेरे सरमें मिर्गी आ गयी है।

कुलच्छनी—आह! यह तो अकसर बहुत लोगोंको आया करती है। मगर हमारी आपकी शादी इन सब बातोंको दुरुस्त कर देगी। अच्छा good byo! मैं Leck & Co के यहां जाकर एक मोटरकार और एक ladies

buggy के लिये order दिये देती हूं। और इन सभोंका बिल आपके नाम भेजवा दूंगी। (जाती है)

(सलाहबख्शका आना)

सलाह०—अच्छा! बाबू मुसीबतमल आप हैं? मैं आपहीको ढूंढ़ रहा था। इस शहरमें एक नया सौदागर आया हुआ है, उसके पास एक-से-एक बढ़कर हीरे जवाहिरातके जड़ाऊ गहने हैं। और शादीके वक्त अपनी लेडी साहबाको देनेके लिये आपको ऐसे गहनोंकी जरूरत भी है। इसलिये यही मैं आपसे कहने आया हूं, कि जेवरात उसके यहाँ जरूर खरीदिये।

मुसीबत०—अजी, मारिये गोली जेवरातको। अभी इनकी कोई जल्दी नहीं है।

सलाह०—क्यों क्यों? ख़ैर तो है? वह जोश-ओ-खरोश सब क्या हुए? (अलग) मुंहपर इतनी फटकार क्यों बरस रही है?

मुसीबत०—क्या बताऊँ बाबू सलाहबख्श, कुछ कहते नहीं बनता। मुझे इस शादीके बारेमें यकायक एक शक़ पैदा हो गया है। कल रात मैंने एक अजीब ओ गरीब सपना देखा था, जिसको बिना किसी क़ाबिल आदमीसे ठीक-ठीक बिचरवाये हुए मुनासिब नहीं मालूम होता है

कि मैं इस शादीके मामलेमें हाथ डालू। क्योंकि सपना आप जानते हैं, अकसर मानिन्द आइनेके होता है, जिसमें होनेवाली बात अक्लमन्दोंको साफ-साफ दिखाई देती है। इसी वजहसे जरा तबियत परेशान हो गयी है और दिलमें खलबली पड़ी हुई है। मैंने देखा है कि एक किश्तीमें बैठा हुआ हूं। बलाकी अन्धेरी रात है। तूफानका वह जोर और बादलोंकी वह गड़गड़ाहट……

सलाह०—इस वक्त तो मुझे माफ कीजिये। एक बड़े जरूरी काममें हूँ। और दूसरे मैं सपने उपनेके बारेमें कुछ समझता नहीं हूँ। अगर आपको कुछ शक पड़ गया है और इस शादीकी भलाई बुराई जानना चाहते हैं तो आपही-के पड़ोसमें एक बड़े आलिम फाजिल मौलाना और दूसरे एक बड़े भारी तत्त्वज्ञानीजी रहते हैं, इन लोगोंसे पूछिये। जो कुछ मुझे आपसे कहना था, वह तो मैं कह ही चुका हूँ। अच्छा, आदाबर्ज। (जाता है)

मुसीबत०—बेशक। इस मामलेमें इन लोगोंकी राय जरूर लेनी चाहिये। इनकी राय बड़ी पक्की और सही होगी।

(जाता है)

पहला दृश्य

ख़फ्तुलहवासका मकान

[मौलाना ख़फ्तुलहवास और मुसीबतमल]

ख़फ्तुल०—(जिस [illegible]से आता है उसी तरफ घूमकर) नालायक़ ! बदतमीज ! [illegible]का दुश्मन ! अहमक़ ! दूर हो। अभी दमेजादनमें [illegible]र हो। इल्मी दुनियासे मैं तुझे शहर बदर कराके छोड़ूँगा।

मुसीबतमल—अहा ! अच्छे ज़रूरतके वक्त मिले यह।

ख़फ्तुल०—(मुसीबतमलको न देखकर) बड़ी बड़ी वजूहातसे मैं क़ायम कर दूँगा। और आलिमोंके आलिम अरस्तूके सबूतोंसे साबित [illegible] मुस्तक़बिल और क़यासतक करनेवाले सीगोंमें भी [illegible] कर दूँगा कि तू—'अहमक़ुन अहमक़ाने अहमक़ून [illegible]ज़लुन अहमक़ाताने अहमक़ातुन' है।

मुसीबतः—बेशक। मगर यह लड़ किससे रहे हैं? (ख़प्तुलहवाससे) अजी मौलाना साहब—

ख़प्तुल०—(मुसीबतमलको बिना देखे हुए) मन्तक़का क़ायदा एक भी नहीं मालूम। मगर बहस करनेको मुस्तैद!

मुसीबत०—मारे गुस्सेके अन्धे हो रहे हैं। मुझे देखते तक नहीं (मौलानासे) जनाबमन—

ख़प्तुल०—यह बात इल्मकी सलतनतसे एकदम खारिज कर देनेके क़ाबिल है।

मुसीबत०—किसीने इन्हें बेतरह भड़का दिया है। मौलानासे) अजी हज़रत—

ख़प्तुल०—"मन् ज़ाइअल् हज़्मालम् यज़्फ़र बेहाजतही"

मुसीबत०—मैं ने कहा आदाबर्ज़ है मौलाना ख़प्तुल-हवास साहब!

ख़प्तुल०—तसलीम।

मुसीबत०—क्या मैं—

ख़प्तुल०—(जहांसे आता है वहीं फिर लौटकर) तुम्हें अपनी ग़ल्तियां मालूम भी हैं? बेमतलबका जुमला!!!

मुसीबत०—सुनिये तो—

ख़प्तुल०—फ़ायल ग़ायब, महफ़ूल बेजगह, फ़ेलज़ूमानी और मतलबका मतलब खत्म।

मुसीबत०--ज़रा मेरी--

खप्तुल०--मैं इसको जरूर गलत साबित कर दूंगा--"व मन् रम्मा बेलहामिल उजबी लमूयनली"--मतलब मानो रनव।

मुसीबतमल--जनाब मौलाना साहब, क्या मैं पूछ सकता हूं कि क्यों आप इतने खफा हैं?

खप्तुल०--इसकी एक बड़ी जबरदस्त वजह है।

मुसीबत०--मिहरबानी करके जरा मुझे भी बताइये।

खप्तुल--एक अमहक़ एक बिलकुल ग़लत बात--खूंखार और डरावनी बातको क़ायम करना चाहता था।

मुसीबत०--यह कौनसी बात है?

खप्तुल०--आह बाबू मुसीबतमल! क्या कहें जमानेकी बदनसीबी। किसी चीजकी हालत पूछनेके क़ाबिल नहीं है। यह दुनिया एक आम बरबादी, खराबी और तबाहीमें ग़र्क़ है। एक खौफनाक आजादी हर जगह रायज है। और कोतवालोंको जो कि सलतनतमें अमन फैलानेके लिये तैनात हैं ऐसी नाक़ाबिल बरदाश्त और शर्मनाक बातको जो मैं आपसे कहने जा रहा हूं बरदाश्त करनेके लिये चिल्लूभर पानीमें डूब मरना चाहिये।*

---

* यह इशारा पेरिसके विश्वविद्यालयकी तरफ था।

मुसीबत०—ओफ़ ओ! आख़िर ऐसी वह कौनसी बात है?

ख़ब्तुल०—क्या यह ख़ौफ़नाक बात नहीं है—वह बात जो इन्तक़ामके लिये गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रही है और जिसका शोरगुल सातवें आसमानतक सुनाई दे रहा है कि कोई शख़्स अलानियां तौरपर "जूतेको शकल" कहे?

मुसीबत०—इसकी फ़िलासफ़ी मेरी समझमें नहीं आयी।

ख़ब्तुल०—मैं कहता हूं कि हम लोगोंको 'जूतेकी बनावट' कहना चाहिये न कि 'जूतेकी शकल'। क्योंकि बनावट और शकलमें बहुत बड़ा फ़र्क़ है। जानदार कुदरती चीजोंकी ऊपरी सतहको शकल कहते हैं और बेजान मसनूई अशियाके ऊपरी ढांचेको बनावट कहते है। मगर शकल कभी नहीं कहते। (जिधरसे आया था फिर वहीं आकर) हां, बेवक़ूफ़ कुड़मग्ज़, तुझे इस तरहसे बातें करनी चाहिये। इसको अरस्तूने सिफ़तके ब्यानमें बड़े ज़ोरोंके अलफ़ाज़में लिखा है।

मुसीबत०—(अलग) हो गये अच्छी तरहसे फ़ाज़िल यह तो। इसीलिये लोग कहते हैं कि बहुत पढ़ना बुरा है।

(खप्तुलहवाससे) अजी मौलाना साहब, इन सालोंको मारिये गोली ।

खप्तुल०—मेरा गुस्सा इतना चढ़ा है कि मैं नहीं जानता कि क्या कर रहा हूं ।

मुसीबत०—अच्छा, अब जूते और शकलकी जान बख़्शिये । सुनिये, मुझे आपसे कुछ कहना है ।

खप्तुल०—(फिर उसी तरफ़ घूमकर) गुस्ताख़ ! कूड़मग्ज़ !

मुसीबत०—अब जाने दीजिये साहब !

खप्तुल०—(उसी तरहसे) नाहंजार ! मरदूद !

मुसीबत०—मैं आपसे मिन्नत करता हूँ ।

खप्तुल०—भला इस बातको कभी मैं मान सकता हूं ?

मुसीबत०—वह बात ही गलत है । हाँ मैं—

खप्तुल०—अरस्तूने इसको एकदम गलत साबित कर दिया है ।

मुसीबत०—क्यों नहीं ? सच है । मगर -

खप्तुल०—और बड़े ज़ोरोंके अलफाज़में ।

मुसीबत०—जी हाँ, आपका कहना दुरुस्त है । (उस तरफ घूमकर जिधरसे मौलाना आया था) बेशक ! तू बड़ा बेवक़ूफ है और बेअक़्लि है जो तू इतने बड़े लायक़ फायक़ आलिम-से जो लिखना-पढ़ना जानते हैं बहस करनेकी कोशिश

करता है। (खप्तुलहवाससे) लीजिये, अब वह झगड़ा खतम हुआ। मैंने भी उसे डांट दिया। मैं एक मामलेके बारेमें आपसे राय पूछने आया हूं। मैं आपका बड़ा ही एहसान-मन्द हूँगा अगर आप अपनी नेक सलाह बताकर मेरी परे-शानी कम कर देंगे। मेरा इरादा शादी करनेका है और उसके लिये मैंने एक बलाकी खूबसूरत और फैशनेबिल नव-जवान लड़की पसन्द की है। मैं उसे चाहता भी हूं और वह भी मुझसे ही ब्याह करना चाहती है। इसके चचा भी राजी हो गये हैं, मगर डर यह है कि कहीं ऐसा न हो कि बादको पछताना पड़े और हाथपर सर रखके रोना पड़े। आप हकीम हैं, आलिम हैं। आप मुझे यह बताइये कि मैं अब क्या करूं ? आपकी राय इस मामलेमें बड़ी पक्की होगी। आप मुझे क्या सलाह देते हैं ? शादी करूँ या न करूँ ?

खप्तुल०—"मन् जइअल हजमा लम् यजफर वेहाजत ही।" अगर जूतेकी शकलवाली बात क़ायम हो गयी तो मैं बेवक़ूफ साबित हो जाऊँगा।

मुसीबत०—मर, कमबख्त तो तू है ही। सबूतकी क्या जरूरत ? (खप्तुलहवाससे) अय क़िबला ! जरा इधर भी कान दीजिये। घण्टेभरसे आपसे बातें कर रहा हूँ और आप सुनते ही नहीं।

ख़प्तुल०—मोआफ़ोका ख़्वास्तगार हूँ। मारे खफ़गीके दिमाग उबल रहा है।

मुसीबत०—अच्छा, अब गम खाइये। जरा मेरी एक बात सुन लीजिये।

ख़प्तुल०—अच्छा, क्या चाहते हैं आप?

मुसीबत०—मैं आपसे कुछ बातें करना चाहता हूँ।

ख़प्तुल०—यह कहिये। अच्छा, बातें करनेमें आप कौनसी जबान इस्तमाल करेंगे।

मुसीबत०—कौनसी जबान!

ख़प्तुल०—हाँ।

मुसीबत०—अरे वही जबान जो मेरे मुंहमें है। क्या मैं किसी औरसे थोड़े ही माँगने जाऊंगा?

ख़प्तुल०—मेरा मतलब तर्ज़े ब्यान, तर्ज़े कलामसे है।

मुसीबत०—ओह! यह बात?

ख़प्तुल०—आप मुझसे अर्बी बोलेंगे?

मुसीबत०—अजी तोबा कीजिये क़िबला।

ख़प्तुल०—तो क्या तुर्की? मुसीबत०—नहीं।

ख़प्तुल०—अत्ताली? मुसीबत०—नहीं।

ख़प्तुल०—यूनानी? मुसीबत०—नहीं।

ख़प्तुल०—लातीनी? मुसीबत०—नहीं।

ख़प्तुल०—यहूदी ? मुसीबत० नहीं।

ख़प्तुल०—रूसी ? मुसीबत०—नहीं।

ख़प्तुल०—तातारी ? मुसीबत०—नहीं।

ख़प्तुल०—फ़ारसी ? मुसीबत०—नहीं।

ख़प्तुल०—पश्तो ? मुसीबत० नहीं।

ख़प्तुल०—मुलतानी ?

मुसीबत०—नहीं'''नहीं -- हि दुस्तानी हिन्दुस्तानी हिन्दुस्तानी।

ख़प्तुल०—आहा! हिन्दुस नी?

मुसीबत०—हां जनाब, वही।

ख़प्तुल०—लाहौल बिला कू ! तो आप उस तरफ़ जाइये। क्योंकि यह कान ख़ा इल्मी और ग़ैरमुल्की ज़बानके लिये मोक़र्रर है। औ मादरी और दहक़ानी ज़बानके लिये यह कान नहीं।

मुसीबत०—ऐसे आदमियों साथ बातें करना क्या पूरी क़वायद करनी पड़ती है।

ख़प्तुल०—अच्छा, आप ब ये। आप किस ग़रज़से यहां तशरीफ़ लाये हैं ?

मुसीबत०—एक मुशकिल पड़ी है। उसपर आपकी सलाह लेने आया हूं।

खप्तुल०—मैं समझ गया। यह कोई इल्मी मुश्किल होगी। है न यही बात?

मुसीबत०—माफ़ कीजिये जनाब! मैं—

खप्तुल०—शायद आप यह जानना चाहते होंगे कि माद्दा और सिफ़त हसतीके लेहाज़से हममानीया ज़ूमानी अलफ़ाज़ हैं?

मुसीबत०—नहीं साहब! मेरे—

खप्तुल०—या यह कि मन्तक़ हुनर है या इल्म?

मुसीबत०—अजी नहीं जनाब—

खप्तुल०—या यह कि मन्तकमें दिमाग़की तीनों खासियतोंकी ज़रूरत पड़ती है या फ़कत तीसरीकी?

मुसीबत०—उफ़! नहीं क़िबला। मगर कुछ—

खप्तुल०—या यह कि आसमान सात हैं या एक?

मुसीबत०—अरे कुछ सुनियेगा भी?

खप्तुल०—या यह कि नतीजा दलीलका खुलासा होता है?

मुसीबत०—नहीं नहीं, मैं—

खप्तुल०—या यह कि अच्छाईकी असलियत इश्तियाक़में होती है या मोआफ़िक़तमें?

मुसीबत०—उफ़! नाकमें दम हो गया!

खप्तुल०—या यह कि अर्बीमें हर्फ़ चे क्यों नहीं इस्त-माल होता ?

मुसीबत०—मुझे भी तो कुछ कहने दीजिये—

खप्तुल०—या यह कि फ़ारसी अर्बीसे निकलती है या अर्बी फ़ारसीसे ?

मुसीबत०—नहीं नहीं नहीं। भाड़में जा कम्बख़्त !

खप्तुल०—तब क्या आप पूछते हैं ? हमारी समझमें नहीं आता। अच्छा, आप ही बताइये।

मुसीबत०—मैं तो कहने जा रहा हूं, मगर आप सुनिये तो। मामला यह है कि मैं एक लड़कीसे शादी करना चाहता हूं। (इस जगहसे मौलाना भी साथ-साथ बोलने लगता है) जो कि बहुत खूबसूरत और नौजवान है। मैं उसे बेहद चाहता हूं और उसके चचाको उसकी शादी मेरे साथ कर देनेके लिये राजी भी कर लिया है। मगर डरता हूं—

खप्तुल०—(साथ साथ बोलता है) कलाम यानी तर्ज़ गुफ्तगू इनसानको अपने ख्यालात जाहिर करनेके लिये दिया गया है। जिस तरह ख्यालात चीज़ोंकी तस्वीरें हैं, उसी तरह हमारे अलफ़ाज़ ख्यालातकी तस्वीरें हैं। (मुसीबतमल उकताकर खप्तुलहवासका मुंह अपने हाथसे बार-बार बन्द करता है और जब हाथ उठाता है तब खप्तुलहवास बोलने लगता

है) मगर ये तस्वीरें और तस्वीरोंसे मुख्तलिफ़ हैं। क्योंकि और तस्वीरें अपने असलसे हर हिस्सेमें अलग रहती हैं, लेकिन गुफ्तगूमें इसका असल खुद शामिल रहता है। इस-लिये गुफ्तगू बाहिरी निशानोंमें जाहिर किये हुए ख्यालात हैं। इससे यह नतीजा निकलता है कि जो अच्छी तरहसे सोच सकता है, वही अच्छी तरहसे बोल सकता है। इस वास्ते गुफ्तगू—जो कि तमाम निशानोंमें बहुत ही क़ाबिल फहम निशान है—उसके जरियेसे अपने ख्यालातको जाहिर करो।

[मुसीबत खप्तुलहवासको धक्का दे देकर घरमें ढकेल देता है और दरवाजा बन्द कर देता है, ताकि निकल न सके]

खप्तुल०—(घरके भीतरसे) हां, गुफ्तगू क्या है? यह दिलका मुतरज्जिम और जानकी तस्वीर है। और (खिड़कीके ऊपर आकर) यह ऐसा आइना है, जिसमें दिलके छिपे हुए खुफिया राज़ साफ तरीकेसे जाहिर होते हैं। इसलिये जब आपमें बोलने और ब्यान करनेकी ताकत है, तो क्यों नहीं आप अपने ख्यालातको हमपर जाहिर करनेके लिये गुफ्तगूका इस्तमाल करते हैं?

मुसीबत०—यही तो मैं करना चाहता हूं, मगर आप सुनते कहां हैं?

खप्तुल०-- कहिये, मैं सुनता हूँ।

मुसीबत०—मैं आपसे यह कहता हूँ जनाबमन कि --

खप्तुल०—मगर इसका ख्याल रखिये जो कुछ कहिये थोड़ेमें।

मुसीबत०—बहुत अच्छा। मैं—

खप्तुल०—तूल तवीली छोड़ दीजियेगा।

मुसीबत०—उफ! जनाब क्या —

खप्तुल०—अपने ख्यालातको मुख्तसर कर चन्द जुमलोंमें कहियेगा।

मुसीबत०—मैं सब कुछ करूंगा। आप सुनें भी तो—

खप्तुल०—देखिये, तूल कलाम न होने पावे और न घुमाव फिराव हो। (मुसीबतमल मारे गुस्सेके ढेला उठा उठाकर मौलानाको मारनेके लिये खिड़कीपर फेंकता है)

खप्तुल०-अयं! यह कौनसी बदतमीजी? शुक्रगुजारी करनेके बजाय तुम गुस्सा होते हो। बस, मैं कुछ नहीं सुनना चाहता। जाओ, यहांसे। तुम उस आदमीसे भी ज्यादा गुस्ताख हो जो 'जूतेकी शकल' कहता था। मैं बड़े-बड़े सबूतोंसे, दलीलोंसे, बहससे और मन्तकके हर कायदेसे साबित कर दूंगा कि तुम बेवकूफके सिवा कुछ नहीं हो और न कभी इसके अलावा कुछ हो सकते हो। और मैं

जनाब मौलवी मौलाना खप्तुलहवास साहब हूं और हमेशा यही रहूंगा।

मुसीबत०—उफ! नाकमें दम कर दिया इसने। ऐसा तो खब्ती हमने देखा ही नहीं।

खप्तुल०—(दुसरी तरफसे स्टेजपर आकर) मैं आलिम हूं, मैं फाजिल हूं, मैं हकीम हूं।

मुसीबत०—अयं! फिर?

खप्तुल०—मैं ल्याकत और काबिलियतका आदमी हूं। (जाता हुआ) कुदरती, इखलाकी, मुल्की, हर इल्मका मैं उस्ताद हूं। (लौटता हुआ) मैं आलिम और बहुत ही बड़ा आलिम हूं। (जाता हुआ) मैं दुनियाके तमाम इल्मों-को जानता हूं। और सीगे मुबालगे मैं जानता हूं। इल्म किस्सा, इल्म तवारीख, इल्म तवारीखजिन, (लौटता हुआ) कायदा, नजम, इल्म फसाहत, इल्म बलागत, इल्म मानी इल्म कलाम, इल्म मन्तक। (जाता हुआ) इल्म तबीबी, इल्म हिसाब, इल्म हिन्दसा, इल्म तबाबत, (लौटता हुआ) इल्म तहरीर, इल्म उकलैदिस, इल्म मेमारी, इल्म ख्याल, इल्म इबारत, इल्म नजूम, इल्म रमल, इल्म कयाफा, इल्म दस्त-शनासी। (जाता हुआ) इल्म खुशनवीसी, इल्म जुगराफिया इल्म नबकातु, इल्म मुनाजिरा वगैरह! वगैरह! वगैरह।

[चला गया]

मुसीबत०—अरे आसमान फट पड़े-ऐसे बेवकूफ आदमियोंपर, जो कम्बख्त सुनता तक नहीं। दिमागकी चूल चूल बिगाड़ दी। उफ! नाकमें दम हो गया। ऐसे व्यक्तियोंसे ईश्वर ही समझे। अच्छा, अब तत्वज्ञानीजीके पास चलना चाहिये, शायद वह कुछ राय बतायें।

(जाता है)

रास्ता

[संकोचानन्द तत्वज्ञानी और मुसीबतमलका बातें करते हुए आना]

संकोच०—अच्छा, अपने आगमनका अभिप्राय प्रकट कीजिये।

मुसीबत०—एक मामलेमें आपसे कुछ सलाह लेने आया हूं। (अलग) शुक्र है, यह बात सुन तो लेते हैं।

संकोच०—बाबू मुसीबतमल! आप अपनी वार्ताके ढङ्गको बदलिये। हमारे तत्वका आदेश यह है कि कदापि कोई वार्ता निश्चय और दृढ़तापूर्वक वर्णन नहीं करनी चाहिये। मनुष्यको बात बातपर सङ्कोच और सन्देह करना और सदैव अपने विचारको अन्त तक रोके रखना चाहिये। इस न्यायके अनुसार आपको इस प्रकारसे कहना उचित नहीं था कि मैं आया हूं, वरन् आपको कहना चाहिये था कि मैं सोचता हूं कि मैं आया हूं।

मुसीबत०—मैं सोचता हूं?

सङ्कोच०—हां।

मुसीबत०—मुझे तो ऐसा सोचना नहीं पड़ेगा जब कि असलमें मैं यहां मौजूद हूँ।

सङ्कोच०—वार्ता अशुद्ध। यतः बिना वस्तुके उपस्थित हुए भी आप ऐसा विचार कर सकते हैं।

मुसीबत०—क्या? क्या यह सच नहीं कि मैं आपके पास आया हूं।

सङ्कोच०—इसमें सन्देह है। हमको हरएक विषयमें शङ्का करनी चाहिये।

मुसीबत०—क्या? क्या इस जगह मैं खड़ा नहीं हूं? क्या मैं आपसे बातें नहीं कर रहा हूं।

सङ्कोच०—हमको जान पड़ता है कि आप उस स्थान-पर उपस्थित हैं। और हम विचार करते हैं कि आप हमसे वार्ता कर रहे हैं। परन्तु यह निश्चय नहीं है कि ऐसा ही हो।

मुसीबत०—क्या क्या? आप दिल्लगी तो हमसे नहीं कर रहे हैं? मैं यहांपर हूं। और आप वहांपर हैं। यह साफ़ ज़ाहिर है। फिर इसमें 'मैं विचारता हूं' की क्या ज़रूरत? ईश्वरके लिये इस वक्त अपनी फ़िलासफ़ी छोड़िये। और ज़रा मेरी बात सुन लीजिये। मैं आपसे कहने आया हूं कि मैं शादी करना चाहता हूँ।

सङ्कोच०—हमको यह विषय ज्ञात नहीं है।

मुसीबत०—मैं तो बता रहा हूँ।

सङ्कोच०—हाँ, ऐसा हो सकता है।

मुसीबत०—जिस लड़कीसे मैं ब्याह करना चाहता हूं, वह बड़ी ही खूबसूरत और नवजवान है।

सङ्कोच०—यह असम्भव नहीं है।

मुसीबत०—शादी करनेमें मेरी भलाई होगी या बुराई?

संकोच०—अथवा यह वा वह।

मुसीबत०—(अलग) इनकी तुक उनसे भी निराली है। (प्रकट) मैं आपसे पूछता हूँ कि उस लड़कीके साथ शादी करनेसे, जिसकी मैंने अभी तारीफ़ की है, कोई ख़राबी तो नहीं होगी?

संकोच—वही होगा जो होनेवाला होगा।

मुसीबत०—इसमें मेरी भलाई होगी?

संकोच०—कदाचित्।

मुसीबत०—बुराई होगी?

संकोच०—सम्भव है।

मुसीबत०—मैं आपको हाथ जोड़ता हूँ, ठीक ठीक जवाब दीजिये।

सङ्कोच०—मैं सोचता हूं कि मैं ऐसा ही कर रहा हूं।

मुसीबत०—मैं उस लड़कीको बहुत चाहता हूं।

सङ्कोच०—हो सकता है।

मुसीबत०—उसके घरवाले भी उसकी शादी मेरे साथ करनेके लिये राज़ी हैं।

सङ्कोच०—असम्भव नहीं है।

मुसीबत०—मगर उसके साथ ब्याह करनेसे डरता हूं कि कहीं वह मुझे बादको उल्लू न बनाए।

सङ्कोच०—सम्भव है।

मुसीबत०—आख़िर आप क्या ख़्याल करते हैं?

सङ्कोच०—हमको कोई बात असम्भव नहीं जान पड़ती।

मुसीबत०—अगर आप मेरी जगहपर होते तो क्या करते?

सङ्कोच०—हम नहीं जानते।

मुसीबत०—आप मुझे क्या करनेकी सलाह देते हैं?

संकोच०—जो आपके मनमें आए।

मुसीबत०—(घबड़ाकर) इस बेवक़ूफ़ने तो और भी नाकमें दम कर दिया।

संकोच०—मैं इस विषयसे हाथ धोता हूं।

मुसीबत०—चूल्हेमें जा।

संकोच०—ऐसा होनेवाला होगा तो होगा।

मुसीबत०—(अलग) धत् तेरी लिफासोफरकी ऐसी तसी। रह, अब मैं तेरा सुर बदले देता हूं। (ठोंकता है)

संकोच०—हाय! हाय! यह अनर्थ!

मुसीबत०—यह तुम्हारी बदमाशीका इनाम है। अब जाके जी खुश हुआ।

संकोच०—अयं! यह क्या? यह कैसी दुष्टता। हमपर इस प्रकार आक्रमण कर हमारा मान नष्ट करना। क्यों रे मूर्ख! हम ऐसे योग तत्वज्ञानीको तुझे ताड़न करनेका साहस हो गया?

मुसीबत०—जनाब अपने वार्ता करनेके ढङ्गको बद-लिये। हरएक विषयमें सन्देह करना चाहिये। आपको यह नहीं कहना चाहिये कि तुमने मारा है; बल्कि हम सोचते हैं कि तुमने मारा है।

संकोच०—अच्छा, मैं तुरन्त जाकर उन चपेटाघातोंके लिये जो कि मेरे पश्चात् भागपर धमाधम पड़े हैं नालिश करता हूं।

मुसीबत०—मैं इस मामलेसे हाथ धोता हूं।

संकोच०—उनके चिह्न मेरे शरीरपर स्पष्ट रूपसे प्रकट हैं।

मुसीबतमल—हो सकता है।

संकोच०—तुम्हीं, तुम्हींने मेरे साथ इस प्रकार व्यवहार किया है।

मुसीबतमल—असम्भव नहीं है।

संकोच०—तुम्हारे नाम अब मैं सम्मन प्रेषित कराता हूं।

मुसीबत०—मैं इस बारेमें कुछ नहीं जानता।

संकोच०—तुम्हें इसका दण्ड अवश्य मिलेगा।

मुसीबत०—ऐसा होनेवाला होगा तो होगा।

संकोच०—याद रखना! हम समझ लेंगे।

(जाता है

मुसीबत०—(अकेला) उफ़ ओ! नाकमें दम कर दिया कमबख़्तोंने। इन अव्वल नम्बरके बेवकूफोंसे कोई एक लफ्ज़ भी तो नहीं पूछ सकता। इनके मिलनेके बाद आदमी उतना ही अक्लमन्द रहता है कि जितना पहले; बल्कि पागल हो जावे तो कोई ताज्जुब नहीं। मगर इस शादीके मामलेने मुझे इतना परेशान कर दिया है कि समझमें नहीं आता कि क्या करूं? 'मर्ज़ बढ़ता गया, ज्यों ज्यों दवा की।'

पहला दृश्य

दरियाका किनारा

(चार संन्यासियोंका मिलकर गाते हुए आना)

कोरस

''नमस्तेऽस्तु गंगे त्वदंगप्रसंगाद्

भुजंगास्तुरंगाः कुरंगाः प्लवंगाः ।

अनंगारिरंगाः ससंगाः शिवांगा

भुजंगाधिपांगीकृतांगा भवन्ति ॥१॥

नमो जह्नुकन्ये न मन्ये त्वदन्यै

निसर्गेंदुचिह्नादिभिर्लोकभर्तुः ।

अतोऽहं नतोहं सतो गौरतोये

वसिष्ठादिभिर्गीयमानाभिधेये ॥२॥

त्वदामज्जनात्सज्जनो दुर्जनो वा

विमानैः समानैः समानैर्हिमानः ।

समायाति तस्मिन् पुरारातिलोके

पुरद्वारसंरुद्धदिक्पाललोके ॥३॥

स्वरावास दंभोलिदंभोऽपिरंभा

परीरंभसंभावनाधीरचेतः ।

समाकांक्षते त्वत्तटे वृक्षवाटी

कुटीरे वसन्नेतुमायुर्दिनानी ॥४॥

त्रिलोकस्य भर्तुर्जटाजूटबंधा

त्स्व सीमांतभागे मनाक् प्रस्खलंतः ।

भवान्या रुषा प्रौढ सापत्नभावात्

करेणाहतास्त्वत्तरंगा जयंति ॥५॥

जलोन्मज्जदैरावतोद्दानकुंभस्फुरत्

प्रस्खलत्सांद्रसिंदूररागे ।

क्वचित्पद्मिनीरेणुभंगे प्रसंगे

मनः खेलतां जह्नुकन्यातरंगे ॥६॥

भवत्तीरवानीरवातोत्थधूलील

सत्स्पर्शतस्तत्क्षणक्षीणपापः ।

जनोऽयं जगत्पावने त्वत्प्रसादात्

पदेपौरुहूतेऽपिधत्तेऽवहेलाम् ॥७॥

तृतीय अङ्क

त्रिसंध्यानमन्नखकोटीरननाविधाने

करतांशुबिंबप्रभाभिः।

स्फुरत्पादपीठे हठेनाष्टमूर्ते

जटाजूटवासे नताः स्मः पदं ते ॥८॥

—कालिदास

पहला संन्यासी—

सारं भागीरथीतोयं सारं जाप्यं च वैदिकं।

ब्रह्मचर्यं तपः सारं माधवसेवनम्।"

दूसरा—हे प्रभो! आपने यथार्थ कहा। परन्तु अब तो संन्यासी लोग गंगाजलके स्थानमें भङ्ग सङ्का सेवन करते हैं। जप तपके बदले गांजे और चरसकी धूनी रमाते हैं।

तीसरा—और ब्रह्मचारी होनेकी भली कही। ये जटाधारी तो बड़े भारी व्यभिचारी भी हो रहे हैं।

चौथा—और लङ्गोटा चढ़ा, डण्ड पेल, अङ्ग-अङ्ग राख मल सांडकी नाईं संसारमें घूम-घूम गृहस्थोंको ठगते-फिरते हैं।

पहला—सत्य है मित्रो! सत्य है। यही कारण है कि पृथ्वी पापके भारसे प्रतिदिन अधिकाधिक पीड़ित होती

जाती है। भारतवर्षमें लाखों साधु-संन्यासी लोग जिनके निर्वाहमें देशके करोड़ों रुपये प्रतिवर्ष व्यय होते हैं उसके बदलेमें वे देशको क्या देते हैं? क्या बताते हैं? क्या सिखलाते हैं? कुछ नहीं। हम लोग फोकटमें हलुआ पुड़ी और मोहनभोग उड़ायें। और हमारे होते हुए गृहस्थोंको ज्ञानोपदेश देनेके लिये धर्म-कर्मका पथ बतलानेके लिये स्वार्थी ज्ञानहीन किरायेके टट्टू बुलाये जायँ। हमपर धिक्कार है। देशमें अनगिनत पाप होते जायँ। चोर, डाकू, लुटेरे कामी, जालियोंकी संख्या दिन दूनी और रात चौगुनी बढ़ती जाय। और हम टुकुरटुकुर देखा करें। हमपर धिक्कार है। हमें साधू और ज्ञानी होनेपर धिक्कार है। हमारा ज्ञान फिर किस दिनके लिये है?

दूसरा०—प्रभो! जिनको संन्यास लेना चाहिये वे तो संसारमें लिप्त हो रहे हैं। और जिनकी संसारमें आवश्यकता है वे वैरागी और संन्यासियोंके रूप धारणकर ठग-विद्याद्वारा विना परिश्रम किये हुए अपने पेट भर रहे हैं। और सन्त-साधुओंको बदनाम कर रहे हैं।

तीसरा०—ऐसा न होता तो बुढ़ापेमें लोग ईश्वरका स्मरणकर अपना परलोक बनाते कि अपना पुनर्विवाहकर किशोर अवस्थाकी विधवाओंकी संख्या बढ़ाकर समाजका

मुँह काला करते और अपने भी मुखपर इस लोक और उस लोकमें कालिख पोतते ?

चौथा—भला देखो तो विधवाओंकी संख्या बढ़ानेको क्या बाल विवाह अकेले असमर्थ था जो ये मनचले बूढ़े इसकी सहायता करनेके लिये कमर कसके तय्यार हुए हैं ?

पहला०—हे मित्रगण! आओ, चलें। अपना कर्तव्य पालन करें और देशमें धर्म और कर्मका ज्ञान फैलाकर पापको यथाशक्ति निर्मूल करें। हम गृहस्थोंको धर्म ज्ञान न सिखलायेंगे तो हमसे बढ़कर ज्ञानी उन्हें शिक्षा देने कौन आयगा? पृथ्वी अन्नके एक दानेके बदले सहस्रों दाने देती है तो हम क्यों न देशके साथ वैसा ही व्यवहार करें जो हमको प्रतिदिन उदरभर भोजन देता है।

(सबका प्रस्थान)

[मुसीबतमलका आना]

मुसीबत०—या ईश्वर! अब क्या करूँ ? अजीब उलझनमें जान है। दिल कुछ कहता है। समझ कुछ कहती है। आखिर उसके साथ कोई-न-कोई तो शादी करेगा ही। तो मैं क्यों चूकूं? मैं ही क्यों न कर लूं? क्या ही भभूका रङ्गरूप है। कैसी प्यारी सजधज है। कैसी ग़ज़बकी ख़ूबसूरती है। सच पूछो तो ईश्वरने मेरे ही लिये उसे अपने

हाथसे गढ़ा है। ऐसी फिर हमको कहां मिल सकती है? बेशक, मैं ज़रूर शादी करूँगा। मगर नहीं, न जाने क्यों दिल खटक गया है। रह-रहकर आपसे आप मेरा इरादा रुक रहा है। क्या कोई मुझे इस मुशकिलसे न उबारेगा? कोई ठीक राय न बतायगा? हे ईश्वर, आगे होनेवाली बातोंको तू ही बता दे।

[उल्लूकानन्दका आना]

उल्लूका०—जै जैकार शरकार। जै जैकार। कुछ ग्रह-दशा विचरवाइये।

मुसीबत०—आप कौन हैं?

उल्लूका०—मैं शरकार ज्योतिषी उल्लूकानन्द हूं।

मुसीबत०—अहा! ज्योतिषी हैं आप? बस बस, आपहीकी मुझे इस वक्त ज़रूरत भी थी। क्यों जनाब, आइन्दा होनेवाली बात आप बता सकते हैं?

उल्लूका०—हाँ, शरकार तीनों लीजिये। भूत, भविष्य, वर्तमान। तनिक हाथ तो दैखलवाइये। अह! अह! अह! शरकार आप बड़े भाग्यवान हैं।

मुसीबत०—हाँ? अच्छा ज़रा इधर बैठ जाइये। अब इतमीनानसे बताइये। मगर पहले मेरी बात सुन लीजिये—

उल्लूका०—चतुरदशी दिनम्। दुगशाल मूरत। गर्दभ-

मुखं। आह! हा। हा! शरकार ढेर दिन जीयेंगे। नाती पनाती शबको खाय खूयके मरेंगे।

मुसीबत०—हां हां, ठीक है। अभी मेरी उमर ही क्या है? मगर यह बताइये कि एक नौजवान और खूबसूरत लड़की जिसकी—"बरस पन्द्रह या सोलह कासिन।"

उम्बका०—हां हां ठीक फरमावते हैं 'शंप्राप्ते शोरशे वर्शे गर्दभी चापशरायते।' शोलह वरिशमें गदही भी परी कहलावती है।

मुसीबत०—तो उसके साथ शादी करें?

उम्बका०—अपने बेटौनाके शरकार? जरूर करके। बड़ाशुन्दर होई। (हाथ देखता है)

मुसीबत०—नहीं जी अपनी।

उम्बका०—(हाथ देखता हुआ) शरकारका बड़ा नाव चलेगा।

मुसीबत०—बड़ी नाव क्या जहाज़? हमारे यहां जहाज चलेगा? यह कैसे मुमकिन है?

उम्बका०—जहाज़ नहीं शरकार। नाव होइहे। बड़ाई बड़ाई!—देखिये—रेखा।

मुसीबत०—ओ मेरा बड़ा नाम होगा। क्या इस जोरू-की बदौलत?

उचक्का०—ई देखो धनके रेखा होए शरकार। बड़ा धन होई। शरकारके आम्दनी दिनोदिन बढ़ते जाई।

मुसीबत०—क्या इस जोरूकी बदौलत? वाह! वाह! मगर बात यह है—

उचक्का०—अरे शरकार बड़ा नीक है। बड़ा नीक है। यह तो पहिले देखबे नाहीं कीन। चटपट हाथपर शुब-रण शोना रखिये। अशर्फी होए चाहे ई मुन्दरी धरिये··· अच्छा, इश पर शवाशेर चान्दी रखिये। नाहीं तो पांच रुपया रखिये।

मुसीबत०—रुपया तो नहीं दुअन्नी है।

उचक्का०—राम! राम! का हांशी करावते हैं। शाइत बड़ा नीक है। रुपेया निकालिये चटपट······अच्छा अब अपाना हाथके मुट्ठी बान्ध लीजिये।

मुसीबत०—बड़ी खुशीसे।

उचक्का०—अगड़म बगड़म। उल्लूफासम। अब मोरे हाथपर अपाना मुट्ठी खोल दीजिये। इशसे चान्दी शोना शव शमरपयामि।

मुसीबत०—(अलग) यह तो बुरा हुआ। (प्रकट) देखिये, लौटाल दीजियेगा। हमारा नहीं है।

उचक्का०—आंख बन्दकर धर्तीपर माथा नवाकर

मुसीबतलाल सर झुकाये बैठा है। उच्चकानन्द इनकी सब चीजें जूता, पगड़ी, छाता वगैरह लेकर भाग जाता है।

तनिक देर राम राम कीजिये। जबलों हम न कहें उठिये, तबलों मूँड़ न उठाइयेगा। (मुसीबतमल सर झुकाता है। सच्चकामन्द इनकी सब चीजें जूता, पगड़ी, छाता वगैरह लेकर भाग जाता है)

मुसीबत०—गला टूटा। अब सर उठावें। बोलो भाई, हम तो उठाते हैं।

[वैसेही कुलच्छनी और घरबिगाड़का आना]

मुसीबत०—(सर उठाकर) अररररर! यह क्या देखता हूं? (छिप जाता है)

गाना

घरबिगाड़—प्यारी चलो सैर करें आली निराली है
देखो बहार।
दरिया किनारा है, क्या प्यारा प्यारा है,
सारा नजारा है क्या गुलेजार ॥
बेक़रार, हूँ दिलदार, अब तो यार, देदे प्यार।

कुलच्छनी—सचि कहो क़सम तुमको है मेरे सरकी।
तन औ बदनकी, जोबन फबनकी, क़सम है तुमको मेरे सरकी॥

घरबिगाड़—हूँ निसार, हूँ निसार तुझ पे वार, बार बार।

घरबिगाड़+कुलच्छनी—फिर आओ: गले लग जायँ,
उमंग बुझायँ, मगन, मगन, मगन, सनमके संग॥

मुसीबत०—(अलग) अररर्र ! यहां तो इन्दरसभा होने लगी।

घरबिगाड़—प्यारी मेरी मुहब्बतका ज़रा ध्यान रखना, ऐसा न हो कि शादीके बाद तुम मुझे बिल्कुल ही भूल जाओ।

मुसीबत०—(अलग) यह लीजिये। यह कमबख्त शादीके बाद भी इन्दरसभा जारी रखनेवाला है।

कुलच्छनी—नहीं मिस्टर घरबिगाड़, तुम मत घबड़ाओ। कहीं हम ऐसी नौजवान और चुलबुली लड़कियां बूढ़े मर्दको थोड़े ही प्यार कर सकती हैं ?

मुसीबत०—(अलग) तो फिर बूढ़े बेचारे काहेको शादी करते हैं क्या जूते खानेके लिये ? देखो तो इसकी बातें।

घरबिगाड़—तब फिर तुम इस बुड्ढे खूसटके साथ शादी करनेके लिये क्यों राज़ी हुई ?

कुलच्छनी—इसलिये कि इससे बढ़कर अक्लका अंधा और गांठका पूरा दूसरा नहीं मिला।

मुसीबत०—(अलग) अब और बना। एक न शुद दो शुद। अब जो कम्बख्त तू फिर उल्टी सुल्टी बकेगी तो शादी गई चूल्हे भाड़में। ऐसा तानके ढेला मारके खल दूंगा कि तू भी याद करेगी।

घरबिगाड़—तो यों कहो कि यह शादी क्या आड़में शिकार खेलनेके लिये खड़ी की जाती है। मगर वहां इतनी आजादी तुम्हें कहां मिल सकेगी कि तुमसे मैं बराबर मिलता रहूं?

कुलच्छनी—अजी यहां आज़ादी कहां है। चोरी छिपे तो मिलना पड़ता है। वहां बड़ी आजादी रहेगी। वहां तो तुम मुझसे बेखटके और खुले खज़ाने मिल सकते हो। वह चूं नहीं करने पायेगा। इसका जिम्मा मैं लेती हूं। क्योंकि उल्लूको उल्लू बनाते कितनी देर लगती है?
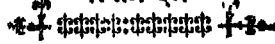
मुसीबत०—(अलग) अफसोस यही है कि अकेला हूं। नहीं तो तुम दोनोंको बिना मारे छोड़ता नहीं। और जो ज्यादा गुस्सा आ गया तो दरियामें ही कूद पड़ूंगा।

घरबिगाड़—तो भी आख़िर इस तरहसे कबतक चलेगा? कभी-न-कभी तो वह ताड़ जायगा।

कुलच्छनी—जब जिन्दा रहने पायेगा तब तो। शादीके बाद छही महीनेके भीतर उसको मरना पड़ेगा।

मुसीबत०—(अलग) ओ बापरे!

घरबिगाड़—यह क्योंकर? क्या कोई मार डालेगा उसको?

कुलच्छनी—नहीं जी मारे कोफ़तके वह खुदही मर जायगा।

घरबिगाड़—हां, अगर हयादार हो।

मुसीबत०—(अलग) अरे दादारे !

कुलच्छनी—प्यारे ! ईश्वरसे तुम रोज दोआ करना कि मुझे विधवा होनेकी खुशक़िस्मती जल्दी नसीब हो। फिर तो चैन ही चैन है। लाखों रुपये हाथ आयंगे और बेखटके मजे उड़ायंगे।

घरबिगाड़—जरूर दोआ करूंगा। मेरी दोआ कभी ख़ाली नहीं जाती।

[बातें करते हुए दोनों जाते हैं]

मुसीबत०—नहीं, ईश्वर नहीं। तुम्हें कसम है। इन लोगोंकी बात मत सुनना। मैं भी अब तुम्हें बहुत याद करूंगा। बड़ी खैरियत हुई। कि इन कम्बख़्तोंने मुझको देखा नहीं। नहीं तो यहीं गला घोंटकर मेरा फैसला कर देते। बापरे ! बाप ! बहुत बचा—शादीकी ऐसी तैसी। न बाबा। जान है तो जहान है।

झटपटरायका मकान

(झटपटराय अकेला)

झटपट०—ईश्वर न करे कि दुनियामें किसीके औलाद हो। और औलाद हो भी तो लड़की न हो। और अगर लड़की ही हो तो मेरी भतीजीकी तरह न हो। पैदा होते ही खान्दानका नाम डुबोया। नार कटते ही मां-बापकी भी नाक कटवाई। उसपर मजा यह कि मेरे भाई साहब—ईश्वर उनकी आत्माको वैकुण्ठमें चैन दे—उनकी अक्लपर पाला ही पड़ा हुआ था कि उन्होंने हिन्दुस्तानी पौधेको विदेशी ढङ्गपर लगाया। फिर विदेशके ही जनतरीसे उसके फूलने और फलनेका वक्त निकालकर इतमीनानसे बेफिकर बैठ रहे। और तुर्रा यह कि न पौधेको घेरा न घारा। जानवरोंको चरनेके लिये बिल्कुल आजाद छोड़ दिया। इधर हिन्दुस्तानी आबो हवाने बीचमें ही गुल खिलाना शुरू कर दिया और जनतरीके वक्ततक पौधेकी नस-नस ढीली कर दी। यहां वक्तके इन्तजारमें ही रहे। और वहां मौसिम बहार खतम भी हो चला। फल फूल गिर-

गिरकर सड़ने और गलने लगे। फिर तो ऐसी दुर्गन्ध मची है कि क्या कहूं ? ऐसी बदनामी और जगहंसाई हुई है कि हमी लोगोंका दिल जानता है। सर पटकके मर गये। कोशिशें करते-करते नाकमें दम हो गया। मगर कुलच्छनी-के साथ शादी करनेके लिये कोई नहीं राजी हुआ। हजार हजार शुक्र है ईश्वरका जिसने मेरे सरसे कम्बख्ती और परेशानीका बोझा उठाकर मुन्शी मुसीबतमलके सरपर यह आफत ढकेली। और मेरे गलेसे बदनामीकी फँसरी छुड़ा-कर उसके गलेमें डाली। जहांतक जल्दी हो सके, जैसे बने वैसे मैं भी इस बलाको मुसीबतमलके गले मढ़ दूं। और चटपट कुलच्छनीकी शादी उसके साथ कर दूं. फिर बाबा वह जाने और वह। वह लीजिये, दूल्हे साहब भी आ रहे हैं।

(मुसीबतमलका आना)

झटपट०—आइये दूल्हे साहब ! बिना बारातके दूल्हेका इस तरह आना निहायत ही अच्छा है। कम खर्च और बालानशीन। मैं भी इसको पसन्द करता हूं।

मुसीबत०—माफ कीजिये, साहब।

झटपट०—आपकी तेजीको समझता हूं। घबड़ाइये नहीं, मैं भी जल्दी कर रहा हूं।

मुसीबत०—अजी बाबू झटपटराय, मैं दूसरी बातके लिये आया हूं।

झटपट०—हाँ हाँ, बिना आपके कहे हुए मैंने उसका भी इन्तजाम कर लिया है। खातिर जमा रखिये किसी बातमें कमी न होगी।

मुसीबत० - अजी यह बात नहीं है।

झटपट०—आप तो झूठ मूठ तकल्लुफ करते हैं। यहां सब सामान ठीक है। आपकी ही देर थी। कहां गये बाजेवाले? कोई कह दो बाजा बजायें।

मुसीबत०—अरे! बाबू झटपटराय, मैं इसके लिये नहीं आया हूँ।

झटपट०—मैं समझ गया। आप दरवाजा चारके लिये अड़े हुए हैं। लीजिये, दो रुपये लीजिये। अब तो चलिये भीतर चटपट गठबन्धन हो जाय।

मुसीबत०—या ईश्वर! हर जगह नाकमें दम! मैं किसी और मतलबके लिये आया हूं।

झटपट०—भीतर तो चलिये। जहांतक मुझ गरीबसे हो सकेगा, वह भी पूरा करूंगा।

मुसीबत०—लेकिन मुझे आपसे कुछ कहना है।

झटपट०—फ़जूल देर कर रहे हैं। आइये, आइये। साथ चले आइये।

मुसीबत०—मैं नहीं आऊंगा। पहिले मेरी बात सुन लीजिये।

झटपट०—शादीके बाद इतमिनानसे सुन लूंगा। अभी उसकी क्या जल्दी है?

मुसीबत० - नहीं मैं इसी वक्त कहूंगा।

झटपट०—अच्छा, कहिये।

मुसीबत०—बाबू झटपटराय, मैं मानता हूं कि मैंने आपकी भतीजीसे शादी करनेका वादा किया और आप भी उसकी शादी मेरे साथ कर देनेके लिये तय्यार हो गये। मगर अब मैं समझता हूं कि मेरी उमर बहुत ज्यादा है और आपकी भतीजीके जोड़के लायक मैं नहीं हूं।

झटपट०—आप गलतीपर हैं। मेरी भतीजी इस शादीसे खुश है। मुझे यक़ीन है कि आप दोनोंकी ज़िन्दगी खुशी-खुशी कटेगी।

मुसीबत०—नहीं साहब! मैं जरा झक्की आदमी हूं। इसलिये मेरी बदमिजाजीकी वजहसे आपकी भतीजीको बड़ी तकलीफ होगी।

झटपट०—खातिर जमा रखिये। वह बड़ी सीधी है। उससे आप कभी गुस्सा नहीं हो सकते।

मुसीबत०—एक बात और भी तो है कि मैं हमेशा

बीमार ही रहता हूं और वैद्य लोगोंने बताया है कि मुझमें शारीरिक रोग बहुत हैं, जिससे वह मुझसे नफरत करेगी।

झटपट०- तब तो वह आपकी बहुत अच्छी तरहसे ख़िदमत करेगी। क्योंकि वह दाई (Nurse) का काम भी जानती है।

मुसीबत०—साहब, मुख्तसर यह है कि मैं आपको सलाह देता हूं कि उसकी शादी मेरे साथ मत कीजिये।

झटपट०—अजी जबान, देकर मुकरनेवाले कोई और होंगे। जान जाय तो जाय मगर मैं अपना वादा नहीं तोड़ सकता।

मुसीबत०—इसके लिये आप घबड़ाइये नहीं। आप बेकसूर रहेंगे। मैं ही—

झटपट०—नहीं साहब, आप मेरे बापके दोस्त हैं। आपके रहते किसी दूसरे आदमीके साथ थोड़े ही शादी कर सकता हूं?

मुसीबत०—(अलग) आग लगे इस दोस्तीपर।

झटपट०—अगर मुझे कोई कुलच्छनीसे शादी करनेके लिये राजा भी मिल जाय तो भी मैं आपका ही ख्याल करूंगा, क्योंकि आप बुज़ुर्ग हैं। आपकी मैं बड़ी इज़्ज़त करता हूं।

मुसीबत०—अजी जनाब ! मैं इसके लिये शुक्रिया अदा करता हूं। लेकिन मैं साफ-साफ कहता हूं कि मैं शादी नहीं करूंगा।

झटपट०—कौन ? आप ?

मुसीबत०—हां, मैं।

झटपट०—इसकी वजह ?

मुसीबत०—यही कि मैं शादी करनेके काबिल नहीं हूं।

झटपट०—शादी करना या न करना आपका अख्तियार है। मैं किसीपर जबरदस्ती नहीं करता। आपने शादी करनेके लिये पहिले वादा किया। जब इसके लिये सब इन्तजाम कर चुका, तब आप कहते हैं कि नहीं करूंगा। अच्छा, ठहरिये। मैं इस मामलेमें सोचकर अभी आपके पास जवाब भेजता हूं।

(जाता है)

मुसीबत०—(अकेला) जान बची लाखों पाये। मैं तो समझता था कि बड़ा झंझट पड़ेगा। मगर आदमी समझदार है। कैसी सहूलियतसे छुट्टी मिल गई। बड़ी अक्लमन्दी की कि शादीसे भाग निकला। नहीं तो आगे ईश्वर ही जाने कबतक सरपर हाथ धरके रोता। वह भी जब जान बचती तब तो। यह लो, बाबू झटपटरायका लड़का

बिगड़ेदिल चला आ रहा है। देखूं, मेरे लिये जवाब क्या लाता है।

(बिगड़े दिलका आना)

बिगड़े०—(बहुत झुक-झुकके सलाम करता और बड़ी नर्मीसे बातें करता है) अय······

मुसीबत०—सलाम भाई सलाम

बिगड़े०—मेरे लालाजीने मुझसे कहा है कि आप आये हैं।

मुसीबत०—हां, भाई इसके लिये मुझे खुद अफ़सोस है लेकिन—

बिगड़े०—आह! जाने दीजिये कोई हर्ज नहीं।

मुसीबत०—मैं आपसे सच कहता हूं कि मजबूरी थी, मुझे ऐसा ही करना पड़ा।

बिगड़े०—हुज़ूर इन बातोंको छोड़िये भी (बड़ी आजिज़ी और तकल्लुफ़से दो पिस्तौल निकालकर सामने लाता है) मेहरबानी करके इन दोमेंसे एक आप ले लीजिये।

मुसीबत०—मैं एक पिस्तौल ले लूं?

बिगड़े०—जी हां, बड़ी मेहरबानी होगी।

मुसीबत०—काहेके लिये?

बिगड़े०—हज़ूर, आपने मेरी चचेरी बहिनसे शादी
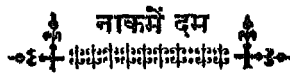
करनेका वादा किया और बादको शादी करनेसे मुकर गये। इसलिये मैं आपकी ज़रा ख़ातिरदारी करने आया हूं। उम्मीद है, आप इसको बुरा न मानेंगे।

मुसीबत०—अयं ! यह क्या ?

बिगड़े०—हम लोग और आदमियोंकी तरह इस मामलेमें ज्यादा शोरगुल मचाना नहीं चाहते ; बल्कि चुपचाप नर्मी और भलमनसाहतसे इस मामलेको तय करना चाहते हैं। इसलिये हजूरसे मैं यह कहनेके लिये आया हूं कि अगर हुकुम हो तो हम आप एक दूसरेकी खोपड़ीमें गोली मार दें।

मुसीबत०—(अलग) अररररर ! यह तो बड़ी ख़ूनी ख़ातिरदारी है।

बिगड़े०—लीजिये, हजूर पसन्द कीजिये।

मुसीबत०—अजी जनाब भाई साहब, ग़रीबपरवर फैजगञ्जूर दाम अक़बालहू। मेरे पास कोई फ़ालतू खोपड़ी नहीं है जिसमें गोली चलाई जाय। निशानाबाज़ी सीखनी है तो चान्दमारी जाइये। (अलग) कमबख्त कैसी भीगी बिल्लीकी तरह ज़हर भरी बातें उगल रहा है।

बिगड़े०—नहीं हजूर, आपके हुकुमसे मुझे ऐसाही करना होगा।

मुसीबत०—मैं आपके हाथ जोड़ता हूँ। अपनी ख़ातिरदारी अपने घर रखिये।

बिगड़े०—जनाब जल्दी कीजिये। मुझे और भी तो काम करना है।

मुसीबत०—मैं यह सब वाहियात बातें नहीं पसंद करता।

बिगड़े०—तो क्या आप नहीं लड़ियेगा?

मुसीबत०—नहीं, कभी नहीं।

बिगड़े०—सचमुच?

बिगड़े०—(मुसीबतमलको अपनी छड़ीसे खूब ठोकनेके बाद) देखिये, आपको बुरा माननेकी कोई वजह नहीं है। मैं सब बातें शरीफोंकी तरह कर रहा हूं। आपने अपना वादा तोड़ा। मैं आपसे लड़ने आया। आप लड़नेसे इनकार करते हैं। इसलिये आपको मारता-फिरता हूँ। है न सब क़ायदेके मोताबिक़? आप शरीफ़ आदमी हैं। इसलिये मेरे बरतावको आप ज़रूर पसन्द करते होंगे।

मुसीबत०—(अलग) बेहूदा, बदमाश, गदहा, पाजी, सूअर कहींका।

बिगड़े०—(पिस्तौल सामने लाकर) आइये हज़ूर, भले-मानसोंकी तरह काम कीजिये। काहेको मुझे आप अपने कान पकड़वानेको मजबूर करते हैं।

मुसीबत०—क्या फिर ?

बिगड़े०—मैं किसीको मजबूर नहीं करता। लेकिन या तो वह शादी आपको करनी पड़ेगी या आपको गोली चलानी होगी।

मुसीबत०—मैं आपसे सच कहता हूं कि न मैं यह करूंगा और न मैं वह करूंगा।

बिगड़े०—यही बात ?

मुसीबत०—यही बात।

बिगड़े०—तो फिर हुकुम है न ?

(छड़ीसे ठोंकता है)

मुसीबत०—अरे! हाय! हाय!

बिगड़े०—हजूर मैं क्या करूँ ? आपके साथ इस तरह-का बरताव करते मुझे खुद बुरा मालूम होता है। लेकिन जबतक हजूर शादी करने या लड़नेके लिये तैयार न हो जायेंगे, तबतक मैं हजूरको ठोंकता ही रहूंगा।

(छड़ी उठाता है)

मुसीबत०—अच्छा बाबा, मैं शादी करूंगा! शादी करूंगा।

बिगड़े०—बड़ी खुशीकी बात है कि हज़ूरका दिमाग़ दुरुस्त हो गया और सब बिगड़ी बातें बन गयीं। जितनी

हजूरकी मैं इज्जत करता हूं, उतनी किसीकी भी नही करता। फिर हजूर समझ सकते है कि हजूरके मारनेमे मुझे कितना दिली सदमा हुआ होगा। खैर, यह सब झगड़ा-बखेड़ा बड़ी सहूलियतसे तय हो गया। अच्छा, अब चलिये सीधे इस तरफ़। (डन्डा उठाता है। और उसे धमकाता हुआ भीतर ले जाता है)

तीसरा दृश्य

झटपट रायके मकानका दूसरा हिस्सा।

(झटपटराय कुलच्छनी वग़ैरह)

(बिगड़ेदिल और मुसीबतका आना)

बिगड़े० - लीजिये, दूल्हे साहब आ गये। और अब शादी करनेके लिये अच्छी तरहसे तैयार हैं।

झटपट०—तो फिर क्या कहना है। वाह! वाह! आइये आइये और अपने हाथमें लीजिये इसका हाथ। आप दोनों फले-फूलें, हमेशा आबाद रहें (अलग) या चूल्हे भाड़में जायें। शुक्र है जान छूटी और मेरे सरसे बला टली।

मुसीबत०—लो अब नाकमें दम पूरा हो गया।

(गानेवाले लड़कोंका झुण्ड लिये हुए सलाहबख्शका आना)

सलाह० - मुबारक हो! शादी मुबारक हो! देखिये दूल्हा साहिब, मैं अपने वादेका कितना सच्चा हूँ। कैसे मौकेसे आया हूँ, मुबारकबादी देने न कहियेगा? और बड़े सामानसे आया हूं। अरे लड़को, इस शादीकी खुशीमें ज़रा वही मुबारकबादी तो गाना। वही! वही!

तृतीय अङ्क

(लड़कोंका मिलकर गाना)

हुस्न वो खूबी कि है भंडार मुबारकबाशद ।
अब तो घर बैठे हो व्यापार मुबारकबाशद ॥
बीबी सोलहकी तो दूल्हा मियां सोलह पंचे ।
ऐसी नौचीको यह मुरदार मुबारकबाशद ॥
इस तरफ़ जुल्फ सियहफ़ाम उधर बाल सफ़ेद ।
सुबहदम रातके आसार मुबारकबाशद ॥
यांतो है जोशे जवानी वहां पीरीका खुमार ।
बाबा पोताका करें प्यार मुबारकबाशद ॥
गुलशने हुस्नमें दुलहिनकी जवानीके समर ।
इन दिनों खूब है तय्यार मुबारकबाशद ॥
दस्त गुस्ताख़ बढ़ाया तो यह दुलहिन बोली ।
लाज लीन्हिस मोरी दाढ़ीजार मुबारकबाशद ॥
लिये चलते हैं मुहल्लेमें नयी चीज जनाब ।
गर्म हो यारोंका बाजार मुबारकबाशद ॥
माल हो जर खूब उड़े और हो मिहमांदारी ।
रोज फ़ैशन पै हो तकरार मुबारकबाशद ॥
आपकी शादी मगर लोगोंके घर ईद हुई ।
सबको माशूक तरहदार मुबारकबाशद ॥

गुफ़्तगू आपसे भी होगी जो फ़ुरसत पाई।
दोस्तोंकी रहे भरमार मुबारकबाशद ॥

दिनमें जो चाहें करें आप मगर 'शब' फ़ जनाब।
दोस्त और यार हों मुख्तार मुबारकबाशद ॥

चैनसे कटती थी जञ्जालमें बेकार फंसे।
रात वो दिने कोकिये अब भार मुबारकबाशद ॥

'शाद' क्या खूब कहा तुमने यह मिसरा वल्लाह।
रात वो दिन जोरूकी फिटकार मुबारकबाशद ॥

(यह मुबारकबादी हमारे मित्र बाबू दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव "शाद" बी० ए० एल० एल० बी०, ने हमारे अनुरोधपर कही है। अतएव उनको हमारा हार्दिक धन्यवाद है।)

— जी० पी० वास्तव

[ड्रापसीनका गिरना और तमाशेका खतम होना]

॥ समाप्त ॥

जवानी बनाम बुढ़ापा

—या—

मियांकी जूती मियांके सर

Moliere { (5) George Dandin ; Ou, Le Mari Confondw
(6) La Jalousie Du Barbouille }

ऊपर लिखे हुए मोलियरके दोनों नाटकोंको मिलाकर मैंने इस नाटकको तैयार किया है। क्योंकि दोनोंका विषय एक ही था। पहिले मोलियरने इस विषयका ढांचा Lajalousie Du Barbouille नामक प्रहसनमें खड़ा किया था। बादको उन्होंने इसके फिलासफर—Doctor के चरित्रको जरा दुरुस्त करके "नाकमें दम" में मौलाना खप्तुलहवासका चरित्र खींचा। और बक़ीया मसालेसे George Dandin नामक नाटक तैयार किया। मैंने इस नाटकमें प्रहसनवाले Doctor को भकभकानन्दके रूपमें लाकर प्रहसन और नाटक दोनोंको मिला दिया है। गो ख़प्तुलहवास और भकभकानन्द अपनी पूर्व अवस्थामें एक ही कहे जा सकते हैं। मगर मैंने एकको मौलाना और दूसरेको पण्डित बनाकर और उनसे भिन्न बोली बुलवा

कर इन दोनोंके चरित्रोंमें कुछ भेद कर दिया है, जिससे एक नये मज़ाक़की यहां गुञ्जाइश हो गई है। यही एक ऐसा नाटक है, जिसमें मोलियरने एक ब्याही औरतको अपने कर्त्तव्योंको भूलती हुई और कुमार्गपर फिसलती हुई दिखलाया है। इसलिये इस नाटकको हिन्दुस्तानी बनानेमें हिन्दुस्तानी समाज और आदर्शने मेरी राहमें बड़ी रुकावटें डालीं। तब मुझे अन्तमें बुढ़ापेकी शादीकी तरफ झुकना पड़ा। इस तरहसे जवानी और बुढ़ापेमें ऐंचातानी दिखाकर मन-चले बूढ़ोंके शौक़को दबानेके लिये सामान जुटाकर इसको भी थोड़ा बहुत शिक्षाप्रद बनानेकी कोशिश की है। पात्रोंके नाम भी इस तरहके रखे गये हैं, जिससे किसीको बुरा न मालूम हो। इन बातोंपर भी मुमकिन है, हिन्दीवाले इस नाटकपर कुछ नाक भौं-सिकोड़ें। मगर अगर वह आंख खोलकर देखें, तो उन्हें मालूम होगा कि आजकल हिन्दीमें इस तरहके नाटककी भी सख़्त ज़रूरत है।

मोलियरने अपने इस नाटकमें उन भोलेभाले देहाती Bourgeois-अक्लमन्दोंका ख़ाका उड़ाया था, जो उन दिनों शहराती शरीफ़ज़ादों और फ़ैशनेबल औरतोंसे शादी करके शरीफ़ और जेन्टिलमैन बननेकी कोशिश करते थे। और यों अपने रुपये पैसे गवांकर अन्तमें ख़ासे उल्लू बन

जाते थे। यह पहिले-पहल Versailes में १८ जुलाई १६६८ को खेला गया था। मोलियरने मु० बरबाद और मोलियरकी स्त्रीने दिलारामका पार्ट किया था। मैंने यह हिन्दी नाटक १९१४ में लिखा था, जो मालवेके "हिन्दी-सर्वस्व" में क्रमशः कुछ प्रकाशित हुआ था। इसके बाद १९१८ में मैंने इसको दुबारा लिखकर नाटक और प्रहसन दोनोंको एक साथ मिलाया। यह नाटक हिन्दुस्तानी सांचे-में कुछ ऐसा उतरा है कि मालूम होता है कि यह "नाकमें दम" का दूसरा खण्ड है, जिसमें उसका परिणाम दिखलाया गया है। इसलिये मुनासिब यही मालूम हुआ कि इसको 'नाकमें दम' के अन्तमें प्रकाशित कराऊँ।

पात्र

१—मु० बरबाद—दिलारामका बूढ़ा शौहर।
२—घरबिगाड़—दिलारामका चाहनेवाला।
३—भण्डाफोड़—घरबिगाड़का नौकर।
४—डीवट—मु० बरबादका नौकर।
५—मिस्टर धरपकड़—दिलारामका बाप।

पात्री

१—मिसेज धरपकड़—दिलारामकी मां।
२—दिलाराम—मु० बरबादकी औरत।
३—उलझन—दिलारामकी नौकरानी।

जवानी बनाम बुढ़ापा

—या—

मियाँकी जूती मियाँके सर

पहला दृश्य

मुन्शी बरबादके मकानका बाहरी हिस्सा

(मुन्शी बरबादका बाहरसे आना)

मुन्शी बर०—(अकेला) लो और बुढ़ापेमें शादी करो! अरे ओ! भोलेभाले बुज़ुरगो! अरे वो बाहरी चटक-मटक पर रीझनेवालो मुझ जैसे बेवक़ूफो! आओ और मुझे कम्बख़्तकी हालतपर चार आँसू बहाकर क़सम खाओ कि जीते जी कभी भूलकर भी ज़मानेकी हवा खाई हुई फ़ैशने-बिल औरतोंके फेरमें नहीं पड़ूंगा। और ख़ासकर बुढ़ापेमें। भोलीसे भोली लड़की क्यों न हो, मगर बुढ़ापा वह चीज़ है

कि जहाँ इसके साथमें चली कि फिर तो वह चल निकली। पचास बरसकी उम्रमें शादी करना और एक नयी नवेलीके संग? और फिर यह उम्मीद करना कि पातिव्रत धर्मका वह नमूना होगी। ख़ाली उम्मीद ही नहीं करना, बल्कि उसे ऐसा बनानेके लिये हजारों कोशिशें करना, अफ़सोस सारी बेकार है। ऐ! मनचले बूढ़ो, अपनी तबियतको सम्भालो। इन खूबसूरत नागिनोंसे बचो। वह तुम्हारे वशकी नहीं है। तुम्हारी इतनी अक्ल नहीं है कि तुम इनकी चालोंको, इनके झांसोंको समझ सको। अगर मौत न आती हो तो शादी करो। अन्धा होनेका पक्का इरादा हो, तो शादी करो। छाती पर कोदो दलवानेकी ख्वाहिश हो तो शादी करो। इज्जत खाकमें मिलानी हो तो शादी करो। ये कम्बख्त फैशनकी पुतलियां तुम्हारे ही रुपयोंसे अपना रंग जमाती हैं। और तुम्हींको उल्टा नाच नचाती हैं। मैंने अपने दोनों पैरोंमें कुल्हाड़ी मारी। मुझसे बड़ी बेवकूफी हुई। बड़ी गलती हुई। बहुत खोकर मेरी आंखें खुलीं। मगर मेरे पुराने भाइयो, मेरी क़िस्मतको जरा ग़ौरसे देखकर तुम बहुत कुछ सीख सकते हो। मैं डूबा तो डूबा, मगर तुम तो धोखेसे बचो। मकानके भीतर पैर रखते ही कलेजा जल-भुनके ख़ाक हो जाता है। न इस करवट चैन और न उस करवट चैन। न

हाथोंमें इतनी ताक़त है कि इसका बदला ले सकूं और न खोपड़ी इतनी मज़बूत है कि रोज-रोज कुछ सहता जाऊं। आंखें खोलूँ तो बेवकूफ, नजर बचाऊं तो बेवकूफ। अक्ल-का अन्धा तो था ही, अब ईश्वरसे दुआ है कि जल्दी आँखों-का भी अन्धा कर दे। हाय! क़िस्मत!

[भण्डाफोड़ मुन्शी बरबादके मकानसे निकलता है।]

मुन्शी बर० – (भंडाफोड़को अपने घरसे निकलते हुए देखकर) यह कमबख्त मेरे मकानमें क्यों गया था?

भण्डा०—(मुन्शी बरबादको देखकर) यह बुड्ढा मुझे बुरी तरह घूर रहा है।

मुन्शी बर०—(अलग) इसको नहीं मालूम कि मैं कौन हूँ?

भण्डा० - (अलग) यह कुछ शक करने लगा।

मुन्शी बर०—(अलग) यह मुझसे कुछ कहना चाहता है। मगर इसकी हिम्मत नहीं पड़ती।

भण्डा० - (अलग) ऐसा न हो कि कहीं इसने मुझे इस मकानसे निकलते हुए देख लिया हो।

मुन्शी बर० – अरे! ए भाई ए! जरा इधर आना।

भण्डा० मुन्शीजी, सलाम।

मुन्शी बर०—सलाम! तुम्हारा मकान तो इस मोहल्लेमें है नहीं?

भण्डा०—नहीं मुन्शीजी, मैं तो कलही यहां आया हूं।

मुन्शी बर०—मगर यह तो बताओ कि तुम उस मकानमें क्या करने गये थे?

भण्डा०—अरे! चु–चु–चु–चुप। ऐसा कहियेगा भी नहीं।

मुन्शी बर०—क्यों?

भण्डा०—बस।

मुन्शी बर०—इसके पूछनेमें कोई खराबी है?

भण्डा०—ख़बरदार, यह किसीको नहीं मालूम होना चाहिये कि मैं उस मकानमें गया था।

मुन्शी बर०—आखिर क्यों?

भण्डा०—वैसे ही।

मुन्शी बर०—तौभी कुछ भी तो कहो।

भण्डा०—ज़रा आहिस्तेसे। कोई सुन न ले।

मुन्शी बर०—नहीं नहीं, यहाँ कोई नहीं है।

भण्डा०—बात यह है कि उस घरकी घरवालीसे और एक बाबूसाहबसे आंखें लड़ गयी हैं। उन्होंने मुझको वहां भेजा था। मगर देखिये इसको कोई जानने न पावे। इसलिये मैं आपसे मिन्नत करता हूँ कि भूलकर भी किसीसे न कहियेगा कि मैंने इसको उस मकानमें आते हुए देखा था।

मुन्शी बर०—बहुत अच्छा।

भण्डा०—छिपे चोरीका मामला है। इसलिये।

मुन्शी बर०—हां हां, समझ गया।

भण्डा०—हां, तो फिर आप जानते ही हैं। उसका मर्द सुनते हैं कि बुड्ढा है और बड़ा शक्की है। वह कम्बख्त दिन-रात अपनी जोरूकी रखवाली किया करता है। इसलिये यह बात उसके कानोंमें न पड़ने पावे। नहीं तो आफत मचा देगा।

मुन्शी बर०—अच्छा!

भण्डा०—हां भाई, उसको मालूम न होने पावे। नहीं तो सारा मजा किरकिरा हो जावेगा।

मुन्शी बर०—ठीक है।

भंडा०—वह कम्बख्त जितनी चौकसी करता है, उतना ही उल्लू बनता है। कहां वह बूड्ढा खूसट और कहां वह सोलह बरसकी नयी नवेली। वह चाल चलती है कि उसका बाप भी सर पटकके मर जाये तो भी कुछ पता न पाये। और मुन्शीजी, सच्ची बात तो यह है कि बुढ़ापेमें शादी करनेका यही नतीजा है।

मुन्शी बर०—हां, बुढ़ापेमें शादी करनेका यही नतीजा है।

भंडा०—और ऐसे आदमीको बेवक़ूफ़ बनानेमें कुछ भी नुकसान नहीं है।

मुन्शी वर०—हां हां, बल्कि ऐन सवाब है। अच्छा तो बाबूसाहबका नाम क्या है?

भण्डा०—भला-सा नाम है। हां याद आया 'बाबू घरबिगाड़'।

मुन्शी वर०—अरे! वही नये हज़रत जो इस मोहल्लेमें आये हैं?

भंडा० हां हां! वही, सामने जिनका मकान है।

मुन्शी वर०—(अलग) अब समझा। इसीलिये उस हरामज़ादेने मेरे मकानके सामने मकान लिया है। मुझे शक तो पहिले ही हुआ था। मगर करता क्या? बुढ़ापेमें शादी-का यही नतीजा है।

भंडा०—आदमी बड़ा भला है। ज़रासी बातके लिये उसने मुझे तीन रुपये दिये और दो उस बुड्ढेकी बीबीसे मिले हैं। पांचों अंगुली घीमें हैं। पांचो घीमें।

मुन्शी वर० (अलग) हाय! मेरा सर तो कढ़ाईमें है। (प्रकट) हां भाई! आजकल दलालों हीकी तो चान्दी है। अच्छा, अब यह तो बताओ कि उस औरतसे तुमसे मुलाकात कैसे हुई?

भंडा०—यह न पूछिये। दरवाजे ही पर उसकी नौकरा-नी मिली। अय! है! गज़बकी है वह तो। क्या प्यारा-सा नाम है उसका "उलझन"। अरे मेरी प्यारी उलझन! वह देखते ही ताड़ गई और फ़ौरन ही मुझे अन्दर ले गई।

मुन्शी बर०—(अलग) अरे! हरामजादी उलझन!

भंडा०—अरी मेरी प्यारी उलझन! मुन्शीजी अपनी उलझनकी तारीफ क्या करूं? उसने तो मेरा दिल ही उलझा लिया, अब भला बिना उससे शादी किये चैन कहाँ? अब तो उससे जरूर शादी करूँगा।

मुन्शी बर०—म-म-मगर बुढ़ापेमें?

भंडा०—अजी रहने दीजिये। सभी औरतें एक-सी थोड़ी ही होती हैं?

मुन्शी बर०—(अलग) यह लीजिये। पहिले सभी यही कहते हैं।

भंडा०—गो उम्र मेरी ढल चली है और जरा बुड्ढा भी हो गया हूं। मगर इससे क्या? दिल तो बुड्ढा नहीं है। और शादी होते ही मारे खुशीके फूलके फिर जवान हो जाऊँगा।

मुन्शी बर०—(अलग) पहिले सभी यही समझते हैं।

भंडा०—औरतको खुश रखनेकी सहल तरकीब। गहने दे-देकर खुश रखूंगा। और क्या?

मुन्शी बर०—पहिले सभी यही तरकीबें सोचते हैं। (प्रकट) मगर यह तो बताओ, उस औरतने तुमको क्या जवाब दिया ?

भण्डा०—उसने कहा कि··········ज़रा ठहर जाइये। मैं ठीक तरहसे याद कर लूं। हाँ! कहा कि "बाबू साहबसे मेरा सलाम कहना। और कहना कि इस कम्बख्त बुड्ढे से सख़्त परेशान हूं। यह मेरी राहमें कांटा है। मगर इस-को उल्लू बनाकर आपसे मिलनेकी कोई-न-कोई तरकीब ज़रूर निकालूंगी।"

मुन्शी बर० — (अलग) वाह री नेकचलन बीबी ! वाह !

भण्डा०—अरे मुन्शीजी। वह मज़ा आयेगा कि क्या कहूं ? उस उल्लूको कुछ खबर होगी ही नहीं कि यहां क्या गुल खिल रहे हैं। अच्छा! सलाम। अब देर होती है। मगर खबरदार! कहियेगा नहीं किसीसे।

मुन्शी बर०—बहुत अच्छा !

भण्डा०—नहीं तो मेरी उलझन मुझसे खफा हो जायगी।

[जाता है]

मुन्शी बर०—(अकेला) देखा मुन्शी बरबाद ? देखा ? तुम्हारी औरत तुम्हारी कैसी क़द्र करती है। क्या करोगे ?

चुप होके बैठ रहो। बुढ़ापेमें शादी करनेका यही नतीजा है। या ईश्वर! ऐसी औरतोंसे क्या, जो अपने मर्दकी मौतके लिये हर वक्त दोआ करे। जो उसकी जान लेनेकी सैकड़ों फिकिर करे। हाय! अफसोस। जबान हिलाता हूं, तो अपनी ही नाक कटती है और सख्ती करता हूं, तो अपनी ही जान जाती है। क्योंकि ऐसी औरतोंपर सख्ती करना गोया अपनी मौत बुलानेमें जल्दी करना है। क्या ही अच्छा होता कि कोई मुझको इस वक्त खूब मारता। मैंने क्यों ऐसी बेवकूफी की? क्यों इस उम्रमें शादी की? कुएंमें कूद पड़ना अच्छा, फांसी लगाकर मर जाना अच्छा मगर बुढ़ापेमें भूलकर भी शादी करना नहीं अच्छा। यह हरामजादी और कलकी बच्ची मुझको इस तरहसे उल्लू बनाये? मुझसे कभी सीधे मुंह बात न करे? हाय! किस्मत! मगर मैं भी वह आदमी हूं कि इसका मजा खूब ही चखाऊँगा। मैं अभी जाकर अपने सास-ससुरसे सारा हाल कहता हूं।

(जाता है)

धरपकड़का मकान

[मिस्टर और मिसेज धरपकड़के पास मुन्शी बरबादका घबड़ाये हुए आना]

मिसेज धर०—अय कौन है ? मुन्शी बरबाद ! मैं तो डर गयी थी।

मिस्टर धर०—क्यों क्यों, दामाद साहब खेरियत तो है ? आप आखिर क्यों इतने जामेसे बाहर हो रहे हैं ?

मुन्शी बर०—दिलमें आचा लगो और—

मिसेज धर०—अरे ! न सलाम न बन्दगी। यह बद-तमीजी मैं नहीं सह सकती।

मुन्शी बर०—सास साहबा ! माफ कीजिये, मैं और ही धुनमें था।

मिसेज धर०—फिर वही बात ? क्यों जी, तुम्हें क्या हो गया है ? तुम्हें जरा भी एटिकेट (Etiquette) का ख्याल नहीं ? तुम नहीं जानते कि तुम किससे बातें कर रहे हो ?

मुन्शी बर०—क्या हुआ क्या ?

मिसेज धर०—क्या यह कम्बख्त 'सास' का लफ़्ज़ तुम्हारी जबानसे अलग नहीं होगा?

मुन्शी बर०—अयं! आप मेरी सास नहीं तो क्या आप मेरी······

मिसेज़ धर०—फिर वही लफ्ज़? ख़बरदार! 'मैडम' के सिवाय मुझे और किसी नामसे पुकारा तो अच्छी बात नहीं होगी।

मुन्शी बर०—(अलग) बुढ़ापेमें शादीका यही नतीजा है। बुड्ढे दामादकी इज़्ज़त ऐसी ही होती है। (प्रकट) मगर इसके कहनेमें मुझसे बुराई क्या हुई?

मिसेज धर०—अफ़सोस! तुम नहीं समझते कि मामूली आदमियोंमें और जेन्टिलमैनोंमें कितना फर्क है। मैं तुम्हें जो कुछ चाहूँ, कह सकती हूं, मगर तुमको हमेशा अपनी हैसियतका ख़्याल करके एटिकेट (Etiquette) के मोताबिक़ तमीज़से हम लोगोंके साथ बातें करना चाहिये।

मिस्टर धर०—हाँ हाँ, ठीक है और दूसरी बात यह है कि हम औरोंपर यह जाहिर होने नहीं देना चाहते कि हमारे दामादकी उमर हमारे बावर्चीके नानासे भी ज्यादा है।

मुन्शी बर०—(अलग) बुज़ुर्ग दामादकी यह इज़्ज़त!

मिस्टर धर०—अच्छा तो मुन्शी बरबाद! तुम्हारी परेशानी की क्या वजह है?

मुन्शी बर० (अलग) दूसरी परेशानी Etquett की हो गयी। अपने दिलकी जलनको सम्हालूं या एटिकेट फेटिकेटकी पाबन्दी करूं? (प्रकट) अगर आप ऐसे जेन्टिल-मैनोंके साथ (Etiquette) की पाबन्दी निहायत जरूरी है तो मैं एटिकेटकी पूरी पाबन्दी करता हुआ मिस्टर धरपकड़से यह कहता हूं कि······

मिस्टर धर०—ठहरो जरा! तुम्हें यह ख़्याल नहीं कि जब कोई आदमी किसी जेंटिलमैनसे बातें करता है तो उसको उसका नाम नहीं लेना चाहिये। बल्कि ख़ाली जनाब यह या हजूर कहना चाहिये।

मुन्शी धर०—अच्छा तो जनाब सही हजूर सही या जनाब और हजूर दोनों सही और मिस्टर धरपकड़ नहीं। मुझको आपसे यह कहना है कि मेरी औरतने·········

मिस्टर धर०—ठहरो! जब तुमको हम लोगोंसे हमारी लड़कीका जिकिर करना है तो उस वक्त तुमको उसे अपनी औरत कहके नहीं पुकारना चाहिये।

मुन्शी बर०—आग लागे ऐसी एटिकेटपर। क्यों जनाब, क्या मेरी औरत, मेरी औरत नहीं है?

मिस्टर धर :—बेशक ! तुम्हारी औरत है। मगर यह भी तो ख्याल रखना चाहिये कि बुढ़ापेकी शादीमें और जवानीकी शादीमें कितना फर्क है।

मुन्शी बर०—(अलग) बुढ़ापेकी शादीका यही नतीजा है। (प्रकट) ईश्वरके लिये थोड़ी देरतक अपनी जेन्टिल-मैनी अलग रखिये। और मुझे थोड़ी-सी बातें जिस तरहसे मुझे कहनी आती है, कहने दीजिये। (अलग) भाड़में गयी ऐसी 'एटिकेट' जिसकी वजहसे बाततक करना मुशकिल है। (धरपकड़से) साफ बात यह है कि जनाब, मैं आपकी लड़कीसे सख्त परेशान हूं।

मिस्टर धर०—वजह, वजह इसकी वजह ?

मिसेज धर०—क्या ? क्या ऐसी खूबसूरत लड़की। खूब पढ़ी-लिखी। सब बातोंमें होशियार। तमीजदार। सारी खूबियोंसे भरी। और ऐसी लड़कीको कहते हो कि उससे परेशान हूं ? वह शादी जिसकी वजहसे तुम्हें इतने फायदे हुए.........

मुंशी बर०—मेरी भी सुन लीजिये 'मैडम'। क्योंकि 'मैडम' कहना बहुत ज़रूरी है। इस शादीसे तो असल फायदा आपका हुआ। आपके ऊपर नालिश हुई। आप कौड़ियोंकी मोहताज हो रही थीं। अगर उस वक्त मैं थैली

न खोल देता तो आप लोगोंकी सारी जेंटिलमैनीपर पानी फिर जाता।

मिसेज०—क्या तुम इसको कुछ गिनते ही नहीं कि तुमको बुढ़ापेमें ऐसी कमसिन खूबसूरत पढ़ी-लिखी होशियार फैशनेबिल लड़की मिली? ऐसी लड़की तो सपनेमें भी किसी जवानको नहीं मिलती।

मुंशी बर०—मगर इसीके साथ-साथ मेरी दौलत गयी। चैन और आराम गये और अब किसी दिन जान भी जानेवाली है।

मिस्टर घर०—क्यों? क्यों? क्यों?

मुंशी बर०—क्योंकि आपकी लड़की इस तरहसे नहीं रहती जिस तरह ब्याही औरतोंको रहना चाहिये बल्कि वह ऐसे काम करती है कि जिससे इज़्ज़तमें बट्टा लगनेका बहुत डर है।

मिसेज घर०—ज़रा सोच-समझके बातें करो। मेरी लड़की उस खानदान की है कि जिससे इज़्ज़त भी इतराती है। तीन सौ बरस हुए कि इस खानदानमें किसीने ऐसा काम नहीं किया कि कोई उंगली उठावे।

मुंशी बर०—हां! मेरे बापने भी घी खाया था। और मेरे हाथसे अबतक उसकी खूशबू आती है।

मिस्टर धर०—बहादुरीके लिये तो मैं नहीं कह सकता। मगर हमारे यहांकी औरतें खानदानी नेकचलन होती हैं।

मिसेज धर०—क्यों? क्यों? बहादुरीके लिये क्यों नहीं कह सकते हो? क्या तुम्हारी मां तुम्हारे बापकी और मेरी मां मेरे बापकी डंडोंसे नहीं खबर लिया करती थीं।

मिस्टर धर०—हां हां ठीक है, हमारे यहांकी औरतें बहादुर भी होती हैं।

मुंशी बर०—वह जमाना और था और यह जमाना और है। आपकी लड़कीने भी जमानेके साथ-साथ रङ्ग बदल दिया है। ये नासमझ औरतें ज़राहीसा पढ़कर फैशन-के फेरमें पड़कर अपने फर्जको भूल जाती हैं। इन चलते-पुरजे मर्दोंकी चालोंको नहीं समझतीं। दूसरे मर्दोंके साथ उठने-बैठनेसे हर घड़ी चहल-पहल रहनेसे यह कमज़ोर और अन्धी औरतें···।

मिस्टर धर० -- ज़रा साफ-साफ कहो। मेरी समझमें तुम्हारी बातें ठीक नहीं आतीं।

मिसेज धर०—तुम्हारा क्या मतलब है कि औरतोंको आजादी न दी जावे? इन बेचारियोंको बेवकूफ हिन्दुस्ता-नियोंकी तरह परदेकी सख्त क़ैदमें रख···।

मुन्शी बर०—बेशक दी जावे। मगर यह भी तो देखना

चाहिये कि औरतें आजादीके क़ाबिल हैं या नहीं। हमारे यहांके मर्द इतमिनानके क़ाबिल हैं या नहीं।

मिसेज घर०—कुछ नहीं, यह सब बुढ़ापेको शादीका नतीजा है। क्योंकि बूढ़े हददर्जेके शक्की होते हैं। और वह शादीके पहिले ही फ़र्ज़ कर लिया करते हैं कि मेरी औरत जरूर बदचलन हो जायेगी।

मिस्टर घर०—तो क्या हमारी लड़की इस आज़ादीकी वजहसे किसी बुरी राहपर आ पड़ी है?

मुन्शी घर०—हां! खुल्लमखुल्ला। गैरोंसे ख़त किताबत मेरी आंखोंके सामने जारी है।

मिस्टर घर०—मगर यह भी जाना कि किस नीयतसे?

मुन्शी घर० —बुरी नीयतसे! बुरी नीयतसे!!

मिस्टर घर०—हैं! हैं! यह क्या कहते हो? अगर यह सच है तो अभी हम उसका गला जाकर घोंट देंगे।

मिसेज घर० —यह बुढ़ापेको शादीका नतीजा है। यह सारा झगड़ा ख़ाली शकहीका बोया हुआ है।

मिस्टर घर०—वह कौन आदमी है कि जिसकी कम्बख़्ती आई?

मुन्शी घर०—उसका नाम घरबिगाड़ है। मेरे मकानके सामने रहता है।

मिस्टर घर०—मैं अभी जाकर उन दोनोंका काम तमाम करता हूं। मगर यह बात सच है न?

मुन्शी बर०—बिल्कुल!

मिस्टर घर०—(मिसेज़ घरपकड़से) Dear wife! जरा मैं मुन्शी बरबादके साथ उस घरबिगाड़के पास जाता हूं। मगर यह बात समझमें नहीं आती कि लड़कियोंको इतना पढ़ानेका नतीजा यह होता है।

(मिस्टर घरपकड़ और मुन्शी बरबादका जाना)

मिसेज घर०—मगर बुढ़ापेकी शादीका नतीजा तो यह होता है। कोई बूढ़ोंके दिलसे शक कैसे दूर करे जो अपनी जवान औरतोंकी कार्रवाइयोंको हर वक्त शकके चश्मेसे देखा करते हैं? ख़ैर, मैं भी अभी अपनी लड़कीके पास जाती हूं। और इस बातको एकदम झूठ साबित कर देनेमें उसकी मदद करती हूं।

तीसरा दृश्य

सड़क

(मिस्टर धरपकड़ और मुन्शी बरबाद)

मिस्टर धर०—अभी भेद खुल जायगा और सारा झगड़ा खतम हो जायगा।

मुन्शी बर०—देखिये, वह हरामजादा, वह चला आ रहा है।

(घरबिगाड़का आना)

मिस्टर धर०—क्यों जनाब, आप मुझको जानते हैं?

घर०—बदक़िस्मतीसे यह इज़्ज़त मुझको अभी नहीं हासिल है।

मिस्टर धर०—मेरा नाम मिस्टर धरपकड़ है।

घर०—आपकी मुलाकातसे मुझे बेहद खुशी हुई।

मिस्टर धर०—मैं एक बड़ा मशहूर जेन्टिलमैन हूं। इङ्गलैंड, फ्रांस, अमेरिका सब जगह मैं हो आया हूं।

मुन्शी बर०—(अलग) सरकारके खर्चेपर जब इन्हें कालापानी हुआ था।

मिस्टर धर०—मेरे बाप जिनका नाम मिस्टर लड़-

झगड़ था, उन्होंने कई एक शेरोंका शिकार किया था। और गीदड़ तो सैकड़ों ही मारे थे।

मुन्शी बर०—(अलग) न जाने सपनेमें या पिनकमें !

मिस्टर धर०—मेरे दादा भी पक्के जेंटिलमैन थे। क्योंकि उनके मरनेके बाद न जाने कितने पतलून और कोट उनके बक्ससे निकले।

मुन्शी बर०—(अलग) अयँ! क्या धोबी थे या दरजी?

धर०—इसमें क्या शक है!

मिस्टर धर०—मतलब यह है कि मैं खानदानी जेंटिल-मैन हूं।

मुन्शी बर०—(अलग) यह तो सूरतसे ज़ाहिर है।

मिस्टर धर०—मैंने सुना है कि आप एक नौजवान लड़कीसे मुहब्बत करते हैं जो कि मेरी बेटी है और जिसके यह शौहर हैं।

धर०—कौन? मैं?

मिस्टर धर०—हां जनाब! आप! अब इसका क्या जवाब देते हैं? और किस तरह आप अपनी सफाई साबित करते हैं?

धर०—मगर यह किस कमबख़्तने आपसे ऐसा कहा है?

मिस्टर धर०—जो कि इसको सच समझता है।

घर०—उस हरामज़ादेने आपसे बिल्कुल झूठ कहा है। मैं इज्ज़तवाला आदमी हूं। मेरे पास कई Good conduct के सर्टिफिकेट हैं। क्या मुझसे ऐसा कमीनापन हो सकता है? भला मैं उस खूबसूरत लड़कीको, जिसको आपकी बेटी होनेकी इज्जत हासिल है, प्यार कर सकता हूं। मैं आपकी बड़ी इज्जत करता हूं। जिस बेवकूफने आपसे कहा है वह सरसे पैरतक ख़ालिस उल्लूका पट्ठा है।

मिस्टर घर०—मुन्शी बरबाद!

मुन्शी बर०—जनाब!

घर०—वह कमीना है। वह दोगला है।

मिस्टर घर०—इनके सामने आकर जवाब दो।

मुन्शी बर०—अब आप ही जवाब दीजिये।

घर०—अगर मुझे मालूम हो जाय कि वह कहां है तो अभी-अभी मैं उसकी जबान काट लूं। और मुंहपर थूक दूं।

मिस्टर घर०—(मुन्शी बरबादसे) अब तुम अपनी बातका सबूत दो।

मुन्शी बर०—सबूत दे चुका। मेरी बात बिल्कुल सच है।

घर०—क्यों जनाब, यही आपके दामाद हैं। जिन्होंने···?

मिस्टर घर०—हां इन्होंनेही मुझसे यह बात कही है।

घर०—अफसोस ! अगर आपके दामाद न होते तो अभी-अभी बताता कि हम ऐसे शरीफोंको बदनाम करना कुछ खेल नहीं है।

[मिसेज धरपकड़, दिलाराम और उलझनका आना)

मिसेज धर०---अपनी औरतोंको पिञड़ेमें बन्द करके रखनेवाले, अक्लके दुश्मनो, शक्की मर्दों, तुम्हें कौन समझावे ? यह लड़की मेरी दिलाराम मौजूद है। सबके सामने अपनी सफाई देनेको तय्यार है।

धर०—(दिलारामसे मुन्शी नरबादकी तरफ इशारा करके) क्या आपने इनसे कहा है कि मैं आपको प्यार करता हूं ?

दिला०—कौन ? मैं ? भला मैं ऐसा कह सकती हूं ? क्या यह बात है ? अच्छा अगर ऐसा ही है तो मैं चाहती हूं कि तुम मुझको प्यार करके देख लो। हां हां, सिर्फ आजमानेके लिये मैं तुमको सलाह देती हूं। तुम ऐसा करो तो तुम्हें खुद ही सारी असलियत मालूम हो जायगी। जरा तुम अपने दिलका हाल कहला भेजो। प्रेमकी चिट्ठियां लिखो। (मुन्शी नरबादकी तरफ इशारा करके) जब यह घर-पर न हो, मुझसे मिलनेकी कोशिश करो। जितनी तरकीबें छिपे चोरीकी मुहब्बतमें की जाती हैं वह तुम सब करके देख लो तभी जानोगे कि इसका नतीजा क्या होता है।

और तुम्हारे साथ कैसा बरताव किया जाता है। समझे जनाब ?

उलझन—(अलग) समझनेवालेकी मौत है।

धर०—बस बस बस, माफ कीजिये। इतने बड़े लेक्चर-की कोई जरूरत नहीं। मगर यह झूठ-मूठकी ख़बर किसने उड़ा दी कि मैं आपको प्यार करता हूं ?

दिलाराम०—मैं खुद चक्करमें हूं कि मैं यहांकी बातों-का क्या मतलब निकालूं ?

धर०—बदनाम करनेवालेकी जबानको कौन रोके ? भला कभी मैंने कोई आपसे प्यारकी बातें की हैं ?

दिलाराम—अगर की होतीं तो तुम्हारी पूरी तरहसे ख़ातिर भी की जाती।

उलझन · हां बीबी ! इनके साथ ऐसी खातिरदारी की जाती कि बरसों याद करते कि हां किसीसे पाला पड़ा था।

धर०—मुझसे आप खातिर जमा रखिये। मैं वह आदमी नहीं हूं कि किसी औरतका दिल दुखाऊँ। मैं आपकी और आपके मां-बापकी इतनी इज्जत करता हूं कि आपको प्यार करनेकी मेरी हिम्मत नहीं पड़ सकती।

मिसेज धर०—(मुन्शी बरबादसे) अब तो दिलमें चैन आया तुम्हारे ?

मिस्टर०—क्या मुन्शी बरबाद, अब तुम क्या कहते हो ?

मुन्शी बर०—यह सब कहनेकी बातें हैं। क्या करूं, मुझको अब साफ-साफ कहना पड़ता है। आज दो पहर-को इस घरबिगाड़ने मेरी औरत नहीं, आपकी लड़कीके पास अपना आदमी भेजा था।

दिला० मेरे-मेरे पास आदमी आया था ?

घर०—मैंने आदमी भेजा ?

दिला०—क्यों ? उलझन ?

घर०—(उलझनसे) भला तुम कभी इसको मान सकती हो ?

उलझन—बे-पैरकी बात कौन मान सकता है ? ऐसी झूठी बात तो मैंने न कभी देखी न सुनी।

मुन्शी बर०—चुप हरामजादी कहींकी ! तू ही तो उस आदमीको भीतर ले गई थी।

उलझन—कौन ? मैं ?

मुन्शी०—हां हां तू ! देखो तो सूअरकी बच्चीको कैसी अनजान बनती है।

उलझन—हे गुदड़िया पीर ! इसमें अगर जरा भी सचाई हो तो सामनेवालेकी आंख फूटें।

मुन्शी बर०—मैं तुझे खूब जानता हूं। दगाबाज झूठी कहींकी।

उलझन०—बीबो दिलाराम !

मुन्शी बर०—चुप ! चुप ! चुप ! नहीं तो सारा गुस्सा तुझीपर बेखटके उतारूंगा। क्योंकि तेरा बाप कोई जेन्टिल-मैन नहीं है।

दिला०—झूठ ! झूठ ! एकदम झूठ ! मैं इसको नहीं सह सकती। मुझमें इतना दम नहीं कि मैं इसका जवाब दे सकूं। या ईश्वर, बे-क़सूरको सतानेकी सजा तू ही दे। अगर मुझसे कोई कसूर हुआ है तो बस यही कि मैं इनकी (मुन्शी बरबादकी तरफ इशारा करके) बातोंको हमेशा चुपचाप सहती आयी हूं।

उलझन०—यही तो बात है। बीबी दिलाराम ऐसी हैं कि इन बातोंपर भी हमेशा इनकी ख़िद्मत ही किया करती हैं।

दिला०—यह सारी मेरी बदकिस्मती और मेरी खिद्-मत करनेका नतीजा है। अगर मैं ज़रा तेज मिज़ाजकी होती तो आज मेरी झूठमूठकी बेइज़्ज़ती इस तरहसे न होती। मैं यह अब ज्यादा नहीं सुन सकती।

[जाती है]

मिसेज धर०—(मुन्शी बरबादसे) तुम ऐसी नेकचलन औरतके लायक नहीं हो।

[जाती है]

उलझन०—बेशक ! ऐसी सीधी औरतका ऐसा मर्द ! अगर मैं इनकी बीबी होती तो बता देती अच्छी तरहसे। (घरबिगाड़से) हां बाबू साहब ! मुन्शी बरबादको कम-से-कम जलानेके लिये आप जरूर बीबी दिलारामको प्यार कीजिये ! मैं अब आपकी बड़ी मदद करूंगी। क्योंकि मुझको इन्होंने झूठमूठ इतनी गालियां दी हैं। भला मैं इसका बिना बदला लिये माननेकी······

[जाती

मिस्टर घर०—मुन्शी बरबाद ! तुम ऐसी ही सजाके काबिल हो। जाओ और जाकर यह सीखो कि शरीफ औरतोंके साथ किस तरह रहना चाहिये। ख़बरदार जो तुमने फिर ऐसी ग़ल्ती की।

मुन्शी बर०—मैं, जो असलियतमें सच्चा था, झूठा साबित हो गया और वह झूठी सच्ची हो गई। हाय ! बुढ़ापेकी शादीका यह नतीजा है।

घर०—(मिस्टर धरपकड़से) मगर सुनिये तो। अब आपको मालूम ही हो गया कि मुझपर झूठमूठ कसूर लगाया गया। मेरी इतनी बेइज़्ज़ती हुई, इसका अब कौन जवाबदेह होगा ?

मिस्टर धर०—बहुत ठीक। शरीफोंकी इज़्ज़तमें बट्टा

लगाना कोई खेल नहीं है। मुन्शी बरबाद, अब क्या जवाब देते हो ?

मुन्शी बर०—कैसा सवाल जवाब ?

मिस्टर धर०—तुमपर यह हतकइज्जतीका दावा कर सकते हैं। क्योंकि तुमने इनको झूठमूठ बदनाम किया।

मुन्शी बर०—नहीं ! झूठमूठ नहीं। मेरा ईश्वर गवाह है कि मैं सच्चा हूं। और जो इनपर कसूर लगाया, वह बिल्कुल सच्चा है।

मिस्टर धर०—हुआ करे। मगर साबित तो नहीं हुआ। इन्होंने तुम्हारी बातोंको साफ इनकार करके सफ़ाई दे दी। तुम कभी भी उस आदमीपर कोई क़सूर लगा ही नहीं सकते हो, जो अपने क़सूरोंको मानता न हो।

मुन्शी बर०—यह तो ख़ूब रहा। कलेजेमें छुरी भोंक दे और इनकार करके साफ़ बेगुनाह बन जाय। फ़र्ज़ कीजिये—

मिस्टर धर०—हुश ! बहश करनेकी कोई ज़रूरत नहीं। तुम इनसे माफी मांगो, जैसा मैं कहता हूँ।

मुन्शी बर०—मैं ? मैं ? और इससे माफी मांगूं ?

मिस्टर धर०—हां ! हां ! सीधी तरहसे जल्दी माफी मांगो। जैसा मैं कहता हूं, वैसा करो।

मुन्शी बर०—मैं ऐसा नहीं······

मिस्टर घर०—मुन्शी बरबाद ! देखो फ़जूल गुस्सा मत दिखाओ। नहीं तो मैं इनकी तरफ़दारी करने लगूंगा और तुमपर नालिश कराके तुम्हें जेलख़ाने भिजवा दूंगा।

मुन्शी बर०—(अलग) बूढ़े दामादकी यही इज़्ज़त होती है।

मिस्टर घर०—पहले झुककर सलाम करो, क्योंकि यह जेंटिलमैन हैं और तुम जेंटिलमैन नहीं हो।

मुन्शी बर०—(सलाम करता हुआ—अलग) या ईश्वर, मेरा हाथ कट जाये।

मिस्टरघर०—जो मैं कहता जाऊँ, वही तुम कहते जाओ। अच्छा कहो।

"हुज़ूर"······

मुन्शी बर०—"हुज़ूर"—

मिस्टर घर०—मैं आपसे माफी मांगता हूं······(मुन्शी बरबादको हिचकिचाते हुए देखकर) आह !

मुन्शी बर०—मैं आपसे माफी मांगता हूं।

मिस्टर घर०—आपको झूठमूठ बदनाम करनेके लिये···।

मुन्शी बर०—आपको झूठमूठ बदनाम करनेके लिये।

मिस्टर घर०—मैं अपने कसूरको मानता हूं और बहुत पछताता हूं।

मुन्शी बर०—तुम्हारे क़सूरको मैं मानता हूं और बहुत पछताता हूं।

मिस्टर घर०—और हाथ जोड़कर मैं यह कहता हूं—हाथ जोड़ो।

मुन्शी बर०—न, यह तो न होगा।

मिस्टर घर०—क्या?

मुन्शी बर०—हाथ जोड़कर मैं यह कहता हूं।

मिस्टर घर०—कि मैं आपका गुलाम हूं?

मुन्शी बर०—कौन! मैं इस हरामज़ादेका गुलाम हूंगा?

मिस्टर घर०—(धमकाता हुआ) कहो!

घर०—बस! बस! हो गया। अब ज़्यादा कहनेकी कोई ज़रूरत नहीं।

मिस्टर घर०—नहीं नहीं। मैं Etiquette की पूरी पाबन्दी कराऊँगा। कहो कि मैं आपका गुलाम हूं।

मुन्शी बर०—मैं आपका गुलाम हूं—

घर०—(मुन्शी बरबादसे) मैंने आपको माफ कर दिया और उम्मीद करता हूं कि आप भी मेरी तरफसे अपने बुरे ख्यालात हटा देंगे। (मि० घरपकड़से) मिस्टर घरपकड़! मैं आपको सलाम करता हूं। आपको बड़ी तकलीफ हुई। इसके लिये मुझे बहुत अफ़सोस है।

मिस्टर धर०—इसके लिये मैं आपका बहुत शुक्रिया अदा करता हूं। और आप मुझसे जब चाहें, तब मिल सकते हैं।

धर०—मैं इस मिहरबानीका ज़रूर फायदा उठाऊंगा।

(जाता है)

मिस्टर धर०—देखो मुन्शी बरबाद, इस तरहसे माम-लात रफ़ा दफ़ा किये जाते हैं। समझे? अब कभी भी ऐसी ग़ल्ती न करना।

(जाता है)

मुन्शी बर०—मियांकी जूती मियांके सर। मुन्शी बरबाद, तुम इसी सज़ाके क़ाबिल हो। सच है, बुढ़ापेकी शादीका यही नतीजा है। अफसोस! एक ज़रा-सी छोकड़ी इतने बड़े साठ बरसके बुज़ुर्गको उंगलियोंपर नचावे। हाय!

गाना

बर०—फूटी क़िस्मत फूटी क़िस्मत जबसे की है शादी।
जोरू क्या कम्बख़्ती आई, सरपर अपने आफ़त ढाई।
रहती हरदम है लड़ाई, जीना अब है मुशकिल भाई।
बुढ़ापेकी शादीमें यही ख़राबी है अपनी तबाही है—
—घरकी हो जाती है पूरी बरबादी। फूटी क़िस्मत०

मुन्शी बर०—आखिर करूं तो क्या? किस तरहसे उससे पार पाऊं? मेरी अक्ल काम नहीं देती। अहाहा! पण्डित भकभकानन्द आ रहे हैं। इनसे राय लूं। यह जरूर कुछ राह बतायंगे।

(भकभकानन्दका आना)

भक०—"कविः करोति काव्यानि रसं जानन्ति पण्डिताः।
कन्या सुरत चातुर्यं जामाता वेत्ति नो पिता॥"

अतएव मैं कवियोंका दामाद हूं।

मुन्शी बर०—अहाहा! बड़े मौकेसे मिले आप। मैं आपहीके पास जानेके लिये सोच रहा था।

भक०—हे मित्र! तुम बड़े मूर्ख हो, बड़े असभ्य हो, बड़े दुष्ट हो, बड़े मूढ़ हो, बड़े शठ हो, बड़े मन्दबुद्धि हो, मार्गमें मेरेऐसे परम विद्वान पण्डितको टोकते हो।

"अनाहूतोपसृष्टानामनाहूतोपजल्पिताम।"

क्यों? ऐसी धृष्टता! तुम मुझे बिना अर्घ्यादिसे सत्कार किये हुए, बिना अष्टाध्यायी स्तुति पढ़े हुए सम्बोधन करनेका साहस रखते हो? क्या तुम नहीं जानते हो कि मैं महा वैयाकरण हूं। मेरे शुभनामके पूर्व व्यालीस दर्जन श्री तत्पश्चात् महामहोपाध्याय तत्पश्चात् वेदरत्न

विद्याभूषण इत्यादि-इत्यादि कहकर आदरपूर्वक मेरा नाम भकभकानन्द शास्त्री इति ग्रहणकर तत्पश्चात्......

मुन्शी बर०—माफ़ कीजिये। बड़ी गल्ती हुई। मेरी खुद अक्ल ठिकाने नहीं है।

भक०—नाम समाप्त भी नहीं हुआ और बीचहीमें तुम फिर विघ्न डाल बैठे। बड़े दुष्ट हो।

मुन्शी बर०—पण्डितजी, मुझे आपका नाम मालूम है। उसके कहनेकी कोई ज़रूरत नहीं है।

भक०—अच्छा बताओ, पंडित शब्दकी कैसे उत्पत्ति हुई? या पंडित शब्द बनता क्योंकर है?

मुन्शी बर०—अजी भड़भूजेके यहाँ बनता हो या लोहारके यहां बनता हो, इससे मुझसे क्या बहस?

भक०—तुम कुछ नहीं जानते हो। अहाहा—

"माता गदही पिता उल्लू येन बालो न पाठेता।
न शोभते सभामध्ये हँसमध्ये बको यथा॥"

देखो पवर्गका प्रथम अक्षर प तत्पश्चात् ण और ड संयुक्त ह्रस्व ईकार तत्पश्चात् त। अब समझे पंडित कैसे बनता है? अतएव मित्र, बिना समझे किसी शब्दका प्रयोग न किया करो। अन्यथा—

यावत् शोभते मूर्ख स्तावत् किञ्चिन्न भाषते।

अच्छा, तो क्या कह रहे थे मैं अभी......। हां, तुम मुझको क्या समझते हो ?

मुन्शी बर०—आप एक बड़े भारी लायक़ फ़ायक पंडित है। और मैं एक नालायक कम पढ़ा बेवकूफ हूं। और मुसीबतके चंगुलमें फँसा हूं। इसलिये मैं उम्मीद करता हूं कि आप मेरी मुसीबतोंको सुनकर मुझे उनसे छुटकारा पानेकी कोई तद्‌बीर बतायंगे।

भक०—मित्र, मैं केवल पंडित ही नहीं हूं, वरन् महा-वैयाकरण भी हूं। अतएव एक दो तीन चार पांच छे सात आठ नव दश मैं दशगुना पंडित हूं। प्रथम एक शब्द अहाहा!—

"एकोल्पार्थे प्रधाने च प्रथमे केवले तथा।
साधारणे समानेपि संख्यायां च प्रयुज्यते॥"

जिस प्रकार सकल संख्यावाचक शब्दोंमें शब्द एक प्रथम गिना जाता है उसी प्रकार मैं आकाश पाताल भूमि तीनों लोकमें, भूत भविष्य वर्तमान तीनों कालके पंडितोंमें प्रथम गिना जाता हूं। अतएव मैं एकगुना पंडित हूं। और दूसरे—

मुन्शी बर०—बहुत अच्छा पंडितजी महाराज। मगर—

भक०—अक्षरके दो विभाग हैं, स्वर और व्यञ्जन। और इन दोनोंका मुझे पूरा ज्ञान है। अतएव मैं दो गुना

पंडित महावइयाकरणोऽस्मि । तीसरे कलियुगमें तम्बाकू तीन प्रकारसे सेवन करनेके लिये बतलाया गया है।

"तमालं त्रिविधं प्रोक्तं कलौ भागीरथी यथा।

क्वचित् हुक्का क्वचित् शुक्का क्वचित् नासाग्रगामिनी ॥"

और मैं इन तीनों प्रकारोंसे इसका भलीभांति सेवन करता हूँ। इसलिये मैं तीन गुना पंडित हूं।

मुन्शी बर०—बहुत अच्छा, बहुत अच्छा महाराज। मगर बात यह है।

भक०—चौथे अन्धे चार प्रकारके होते हैं।

"न च पश्यति जन्मान्धाः कामांधो नैव पश्यति।

न पश्यति मदोन्मत्तो ह्यर्थी दोषान्न पश्यति ॥"

और यहां चारों गुण एकत्रित हैं। इसलिये मैं चार गुना पंडित हूँ। और पांचवें पिता पांच प्रकारके होते हैं।

"जनिता चोपनेता यश्च विद्यां प्रयच्छति।

यानी हम लोग

अन्नदाता भयत्राता पंचैते पितरः स्मृता ॥"

अतएव मैं पांच गुना पंडित हूं और इस तरहसे पांचों प्रकारसे तुम्हारा पिता यानी बाप हुआ।

मुन्शी बर०—क्या? क्या? क्या?

भक०—छठें नकारनेको छे विधियां हैं—

"मौनं कालविलम्बश्च प्रयाणं भूमिदर्शनं।
भृकुट्यन्यमुखी वार्ता नकारः षडविधः स्मृतः॥"

और मैं सब जानता हूं। इसलिये मैं छे गुना पण्डित हूं।

मुन्शी वर०—अच्छा बके जाइये। खूब पेट भरके बक लीजिये।

भक०—सातवें गान विद्याके सात मुंह हैं जिनको स्वर कहते हैं।

"षड्ज ऋषभ गंधार स्वर मध्यम पंचम मान।
धैवत और निसादको, स,ऋ,ग,म,प,ध,नी, जान॥"

परन्तु ये स्वर व्याकरणके स्वरोंसे भिन्न होते हैं जिनको भलीभांति जाननेके लिये इनका भी जानना अति आवश्यक है। और मुझे इनका पूरा ज्ञान है। अतएव मैं सात गुना पंडित हूं। आठवें—

"मूर्खस्य चाष्टचिह्नानि शीका टीका च मालिका।
प्रतिष्ठा लम्बधोत्राणि हार्जी हौर्जी च योग्यता॥"

और मैं इन आठों भूषणोंसे भूषित हूं। और नवें है मूर्ख मित्र—

मुन्शी वर०—अजी सुनिये तो? बात तो सुनिये—

भक०—और नव—

"इक्षुदण्डास्तिलाः क्षुद्राः कांत हेम च मेदनी ।
चन्दनं दधि ताम्बूलं मर्दनं गुणवर्धनम् ॥"

और मैं सबको जानता हूं। इसलिये नव गुना पंडित हूं। दसवें व्याकरणकी जड़ क्रियायें हैं और समस्त क्रियाय दश गुणों और दश ही लकारोंमें समाप्त हो जाती हैं। समझे? और मुझे यह सब ज्ञात हैं। अतएव मैं सर्वज्ञाता दश गुना पण्डित महामहोवैयाकरण हूं। इसलिये जो साक्षात् व्याकरणकी जड़ ग्रहण करना चाहते हैं वह मुझको अवश्य धारण करें। क्योंकि हे मूर्ख मित्र! तुम भलीभांति अब समझ गये होगे कि मैं एक दो तीन चार पांच छे सात आठ नौ दश दश गुना पण्डित हूं। सारांश यह कि मैं संसारभरके पण्डितोंका सार हूं।

मुन्शी०—अयं! इस बेतुको बकवादसे क्या मतलब। मैंने तो समझा था कि एक बड़े भारी पण्डितसे मुलाकात हुई, जो मेरी मुसीबतोंको दूर करनेकी राह बतायंगे, मगर यह तो अच्छे खासे पागल जुआड़ी निकले जो ज्ञान बतानेके बदले सोरहोकी चाल चलने लगे। एक दो तीन चार पाँच अहा हा हा! अजी पण्डितजी महाराज, आप अपनी

एकाई दहाईका पहाड़ा अलग रखिये और मुझे बातोंमें न बहलाइये। न मैं आपका वक्त फजूल ख़राब करना चाहता हूं और न मुफ्त आपसे राय लेना चाहता हूं। रुपया अधेलीसे मैं आपकी ख़ातिरदारी करनेको भी तैयार हूं—

भक्त०— रुपया! रुपया! रुपया लेकर मैं शिक्षादान कहीं कर सकता हूँ? हे मूर्ख मित्र! तुम भलीभांति समझ लो कि मैं शिक्षाका व्यापार नहीं करता। यदि तुम मुद्राओंसे भरा हुआ थैला दो और वह थैला चांदीके बक्स-में हो और वह बक्स रत्नोंकी वेदीपर धरा हो और वह वेदी मोतियोंके मन्दिरमें हो और वह मन्दिर मणिके पर्व्वतपर हो और वह पर्व्वत साक्षात् लक्ष्मीकी राजधानीमें हो और वह राजधानी हीरेके द्वीपमें हो और वह द्वीप क्षीरके समुद्र-में हो और वह समुद्र तीनों लोकमें हो। हां, यदि तुम यह तीनों लोक मुझको दो जिसमें वह क्षीरका समुद्र हो जिसमें वह हीरेका द्वीप हो जिसमें लक्ष्मीकी राजधानी हो जिसमें वह मणिका पर्व्वत हो जिसपर वह मोतियोंका मन्दिर हो जिसमें वह रत्नोंकी वेदी हो जिसपर वह चांदीका सन्दूक हो जिसमें वह मुद्राओंका थैला हो, तब भी मैं उसको (अपने सरसे एक बाल तोड़कर) इसके बराबर भी नहीं परवाह करता।

[जाता है]

मुन्शी० – ओहो ! यह तो बिल्कुल सतयुगी है। लालच जरा नहीं, तब यह ज़रूर असली पण्डित हैं। इनकी राय बड़ी पक्की होगी। जरूर लेनी चाहिये।

(आता है)

पहला दृश्य

मुंशी बरबादके मकानका बाहरी हिस्सा

(उलझन और भंडाफोड़)

उल०—बस मैं उसी वक्त समझ गयी थी कि यह सारा झगड़ा तेरा ही खड़ा किया हुआ है। तूने ही इस बातको किसीसे कहा होगा और उसने जाकर मुन्शी बरबादसे आग लगा दी।

भंडा०—मैं क्या करूं? मुझे इस मकानसे निकलते हुए एक आदमीने देख लिया था। उसीसे मैंने कहा था कि खबरदार! यह किसीसे कहना मत। मैं क्या जानता था······

उलझन०—बस बस, रहने भी दे।

भंडा०—हांजी, हटाओ भी इस झगड़ेको। मगर उलझन, ए जरा एक बात तो सुन लो।

उलझन०—खैर तो है?

भंडा०—जरा इधर देखो।

उलझन—अय! बोल ना! कहता क्यों नहीं?

भंडा०—उलझन।

उलझन—अरे क्या है?

भंडा०—बस समझ जाओ।

उलझन—क्या समझूं? कुछ कहेगा भी?

भण्डा०—तो कह दूं? कह दूं? अयं? बुरा तो न मानोगी?

उलझन—बोल।

भण्डा०—अच्छा, ज़रा और नज़दीक आओ।

उलझन—क्यों?

भण्डा०—बस यह न पूछो। हां।...उलझन! ए! ए! उलझन ए!

उलझन—हट! हट! दूर हट! तेरे कपड़ोंसे बू आती है।

भण्डा०—अरे, यह तो मुहब्बतकी बू है।

उलझन—मुहब्बतकी बू! बुढ़ापेमें?

भण्डा०—तभी तो ज़रा सड़ाइन्ध आ गयी है। बिल्कुल सिरकेका मज़ा है। शादीके बाद इसको तेज़ी देखना।

उलझन—क्या अपना अचार बनवानेका सामान कर रहा है? क्यों बे, भला तू करेगा मुझसे शादी?

भंडा०—मैं न कर सकूं तो तुम्हीं कर लो मुझसे। तुम्हारी ही जीत रहे भाई।

उलझन०—मगर मुंशी बरबादकी तरह फिर तू शक्की हो जायेगा, क्योंकि बूढ़े मर्द बड़े शक्की होते हैं।

भंडा०—अरे सिर्फ़ वही जोरूके लिये अपना रुपया खर्च करते हैं, सब नहीं। और यहां तो तुम कमाओगी और बन्दा चैन करेगा। मैं समझूंगा कि शादी क्या हुई, इस बुढ़ौतीमें घर बैठे गोया पेनशन मिली और उसपर जोरू मिली घातेमें। समझी? बस इसी बातपर जरा एक प्यार तो दे दो उलझन, फिर देखो कैसा जवान अभी हुआ जाता हूं। तुम्हारी क़सम!

उलझन—अय! चल हट! तुझे देखते ही न जाने क्यों डर लगता है।

भंडा०—ये है!

गाना

भण्डा०—जरा फिर तो वही नखरे दिखाना। हां जी जरा०
सैनों चलाना, नैना लड़ाना।
रह रहके चितवनका करना निशाना। हां जी०

उलझन—दूर निगोड़े, लुच्चे कमीने, चल दूर कहीं हाथ न लगाना।

भंडा०—प्यारी मत कर तकरार, मुझे दे दे एक प्यार।

उलझन—अरी रुक तो मुरदार, अभी देती हूँ प्यार।

भंडा०—बाप रे बाप!

उलझन—ले मुरदार!

भंडा०—बाप रे बाप!

भण्डा०—बस बस! नखरा बन्द कर। नहीं जान गयी। कुछ शादीके बादके लिये भी रख छोड़। ले ले घर-बिगाड़का खत ले। बाप रे बाप!

उलझन—चुप फिर गुल मचायेगा तो हां! जा यहांसे भाग, कह देना कि खत दे दिया।

भण्डा०—जाता हूं। अरे ओ पहाड़की बच्ची, सलाम। बिजलीकी अम्मा पालागन। लोहेकी तोप बन्दगी! बन्दगी! बन्दगी! बन्दगी!

[जाता है]

उलझन—अब जाकर यह खत बीबी दिलारामको दे दूं। अरे! यह तो खुद ही इधर आ रही हैं। मगर उनके साथ मुन्शी बरबाद भी हैं। तो अच्छा अभी नहीं। इनको चले जाने दो, तब।.........

[जाती है]
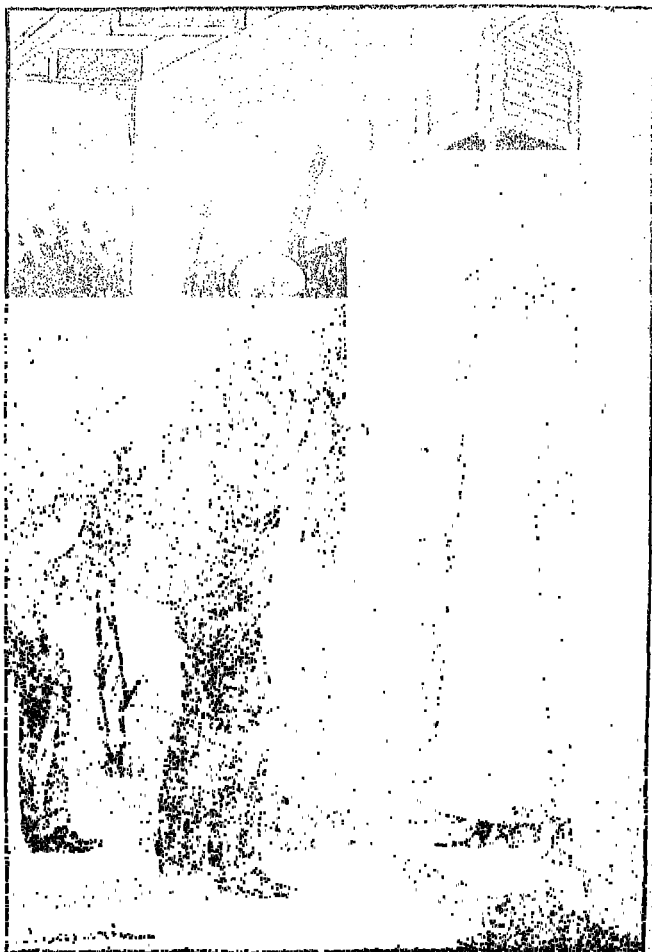
मुन्शी वर०—(घरबिगाड़को न देखकर) मुझको खूब मालूम है कि तुम ज़रा भी उस पाक रिश्तेके बन्धनको इज्जत नहीं करती जिसमें हम तुम दोनों बन्धे हैं ।

द्वितीय अङ्क

(मुन्शी बरबाद और दिलारामका मकानसे निकलना)

मुन्शी बर०—नहीं नहीं, मैं तुम्हारे चकमेमें नहीं आ सकता। जो कुछ मुझसे कहा गया था वह बिल्कुल सच है। तुम हजार क़समें खाओ तो क्या मगर तुम मेरी आंखों-में इस तरह धूल नहीं झोंक सकती।

(घरबिगाड़का बाहरसे आना और छिपकर अलग खड़ा होना)

घर०—(दूरसे-अलग) आह! वही तो है। मगर वह बुड्ढा भी साथ है।

मुन्शी बर०—(घरबिगाड़को न देखकर) मुझको खूब मालूम है कि तुम जरा भी उस पाक रिश्तेके बन्धनकी इज्जत नहीं करती जिसमें हम तुम दोनों बन्धे हैं। (दिलाराम और घर-बिगाड़ दोनों एक दूसरेको सलाम करते हैं) अजी, यह सलाम-बन्दगी रहने दो। मैं इस किस्मकी इज्जत करनेको नहीं कहता। यह हँसी-दिल्लगी अब मुझे एक आंख नहीं भाती।

दिलाराम—मैं तुमसे हंसी करती हूं? भला मैं क्यों ऐसा करने लगी?

मुन्शी बर०—जो तुम्हारे दिलमें है उसे मैं अच्छी तरह जानता हूं। (दिलाराम और घरबिगाड़ दोनों फिर एक दूसरेको सलाम करते हैं) आह! फिर वही बात। मैं इस इज़्ज़त का भूखा नहीं हूं और न मैं चाहता हूं कि तुम मेरी ऐसी

इज़्ज़त करो। बल्कि तुमको चाहिये कि तुम उस रिश्तेकी इज़्ज़त करो जिसके पाक बन्धनसे शादीके वक्त हम तुम दोनों बान्धे गये हैं। (दिलाराम घरबिगाड़को कुछ इशारेमें कहता है) अय! है! तुम हाथ-पैर क्यों चमकाती हो? मैं कोई बुरी बात नहीं कहता!

दिलाराम—कौन हाथ-पैर चमकाती है?

मुन्शी बर०—मैं खूब समझता हूं। तुम मुझे बूढ़ा समझती हो, इसीलिये मेरी ज़रा भी परवाह नहीं करती। और अफसोस! तुम यह ख़्याल नहीं करती कि मैं तुम्हारी कितनी खातिर करता हूं (दिलाराम घरबिगाड़की तरफ सर हिलाती है) अरे, तुम सर क्या हिलाती हो? क्या मैं कुछ झूठ कहता हूं?

दिलाराम—कौन मैं? मैं काहेको सर हिलाऊंगी?

मुन्शी बर०—और उल्टे मुझीसे पूछती हो। अच्छा उल्लू बनाती हो। कुछ नहीं, बुढ़ापेकी शादीका यही नतीजा है। क्या……

घरबिगाड़—(चुपचाप दिलारामके पीछे आकर) ज़रा एक बात सुन लो।

मुन्शी बर०—(दिलारामसे) अयँ क्या कहा तुमने?

दिलाराम—सपना देखते हो क्या? (मुन्शी बरबाद घूम

कर दिलारामकी दूसरी तरफ जाता है। वहां घरबिगाड़को देखता है। वैसे ही घरबिगाड़ मुन्शी बरबादको बहुत झुककर सलाम करके पीछे हटता है और चल देता है)

मुन्शी बर०—अब कहो।

दिलाराम—क्या कहूं?

मुन्शी बर०—देखो वह तुम्हारे पीछे घूम रहा है।

दिलाराम—तो मैं क्या करूं? यह मेरा क़सूर है?

मुन्शी बर०—बेशक, यह तुम्हारा ही क़सूर है। मर्दों-की भला क्या मजाल कि वे किसी औरतका पीछा बिना उसकी रजामन्दीके करें?

दिलाराम—तो क्या मैं उससे कहने गई थी कि तुम मेरे पीछे-पीछे आओ?

मुन्शी बर०—गो ज़बानसे तुमने नहीं कहा मगर तुमने अपनी चालढालसे रंगढंगसे तो उसे हिम्मत दिलाई। अगर औरत खुद न बिगड़े तो उसे कोई बिगाड़ नहीं सकता।

दिलाराम—चालढालसे हिम्मत दिलाना मैंने आज ही सुना।

मुन्शी बर०—क्या तूने उससे आँखें नहीं मिलाईं? क्या तूने उसे मीठी चितवनसे नहीं देखा? क्या तू उसको

देख-देखकर नहीं मुस्कुराई ? क्या तूने गर्दन घुमा-घुमाकर अपनी तिर्छी नज़रें बार-बार उसपर नहीं डालीं ?

दिलाराम--जो मुझे देखेगा उसको मैं क्यों न देखूं ? आखिर आँखें हैं किसलिये ? क्या मैं चालढाल फिर नये सिरेसे सीखूं ? क्या पैरके बल चलनेके बदले सरके बल चलूं ?

मुन्शी बर०--अगर तुम सच्ची और नेकचलन औरतोंकी तरह रहना चाहती हो तो तुम्हें यह बातें छोड़नी पड़ेंगी। यह ताकझांक छेड़छाड़, यह सब वाहियात खुराफात मुझे ज़रा भी पसन्द नहीं।

दिलाराम--मेरी बलासे। वाह! वाह! क्या मेरी इसीलिये शादी हुई है कि मैं जीते जी कब्रमें अपनेको डाल दूं ? दुनियांसे कुछ सरोकार न रक्खूं ?

मुन्शी बर०--क्या क्या क्या, जो इकरार तुमने शादीके वक्त किया था उसकी पाबन्द तुम नहीं हो ?

दिलाराम--मैं क्यों उसकी पाबन्द होने लगी ? जिनसे तुमने शादी ले की थी वह उसके पाबन्द हों तो हों। मैं थोड़े ही किसीसे कहने गई थी कि मुझसे शादी करो।

मुन्शी बर०--(अलग) जी चाहता है कि दो तमाचे लगाऊँ और इसके गुलाबी गुलाबी गालोंको लाल कर दूं। कुछ नहीं, मुन्शी बरबाद, अपनी ही किस्मत ठोको। बुढ़ापे-

की शादीका यही नतीजा है। नहीं तो इसकी हिम्मत होती कि मुझसे यों जबान लड़ाती! चलो अपना काम देखो। इससे बहसमें तुम नहीं जीत सकते।

(जाता है)

गाना

दिला०—जबसे हुआ है बुढ़ापेका संग।
जवानीका रंग, ढंग है कुढंग।
निगोड़ी जवानी, है कैसी दिवानी,
करती है हरदम मुझे तो यह तंग। जबसे०।
मैं कैसे समझाऊं, जियाका मनाऊं, कैसे मैं रोकूं दबाऊं उमंग।

हाय! चितवन यह चोखी, वो शोखी अनोखी,
सबका है रंग हुआ आखिर बदरंग। जबसे०।
रंग मेरा भंग हुआ, जीवन भी तंग हुआ,
यौवन बेढंग हुआ,
बूढ़ेके संग॥ जबसे०।

(उलझनका आना)

उलझन—बीबी दिलाराम! मैं बड़ी देरसे आपकी ताकमें थी, मगर मुन्शीजी टलनेका नाम ही नहीं लेते थे।

दिलाराम—क्यों ?

उलझन—भला यह ख़त किसका होगा ?

दिलाराम—ला ला मुझे दे। छिपाती क्यों है ?

(ख़त छीन लेती है)

उलझन—(अलग) मैं तो डरती थी कि कहीं बिगड़ न जायें। मगर नहीं इधर भी मामला गर्मागर्म है।

दिलाराम—देखो उलझन ! कितना प्यारा ख़त है। जी चाहता है कि इसको बार-बार पढ़ूं। (पढ़ती है और फिर हंसती है) अभी-अभी जाकर जवाब लिखती हूं।

(घरके भीतर जाती है)

(घरबिगाड़ और भंडाफोड़का आना)

उलझन—वाह ! बाबू साहब वाह इस मुण्डीकाटे-को आपने काहेको भेजा था ?

भण्डाफोड़—(घरबिगाड़से) ज़रा इस पत्थरकी ममानी-से अलग खड़े होइये।

घरबिगाड़—क्या करूं ? हिम्मत न पड़ी कि कोई अपना आदमी भेजूं। मगर उलझन, मैं तुम्हारा किस तरहसे शुक्रिया अदा करूं ? लो, तो भी यह तुम्हारे नजर हैं।

(पाकेटमें हाथ डालता है)

उलझन—सरकार राजा बाबू हैं। आपके ऐसा तो बांका जवान देखा ही नहीं। सच पूछिये तो बीबी दिला-राम आपहीके लायक़ है—

भण्डाफोड़—और मेरे लायक़ तू।

घरबिगाड़—यह सब तुम्हारी मिहरबानी है।

(रुपये देता है)

भण्डाफोड़—लाओ लाओ, इधर लाओ उलझन, उन्हें हम रखें। अब क्या? हमारी-तुम्हारी शादी तो होनेवाली ही है। फिर क्या? हम-तुम एक तो हैई हैं। जबतक तुम हमको अपना सन्दूक समझो।

उलझन—देखूं तो सही कि यह सन्दूक कितना मज-बूत है।

घरबिगाड़—उलझन, वह खत तुमने बीबी दिलाराम-को दे दिया था?

उलझन—हां हां, उसीका जवाब तो लिखने गई है वह!

घरबिगाड़—क्यों उलझन, भला मुझसे दो-दो बातें हो सकती है?

उलझन—अच्छा तो आइये मेरे साथ।

घरबिगाड़—मगर⋯मगर कहीं वह नाराज न हों। और कोई डर तो नहीं है?

उलझन—नहीं, कुछ भी नहीं। मुन्शीजी गये हैं अपने कामपर। और वह उनकी परवाह भला कब करती है? बस वह डरती है अगर तो सिर्फ अपने मां-बापसे। वह जानने न पावें।

घरबिगाड़—या ईश्वर, मदद कर।

(घरबिगाड़ और उलझन दोनों घरके भीतर जाते हैं)

भण्डाफोड़—कैसे नेक काममें ईश्वरको याद किया है? मगर वाह! उलझन एक ही औरत है। अक्लमें तो मेरी नानीसे भी तेज है। चालिस मर्दोंको एक साथ चरा सकती है। बड़ी क़ाबिल जोरू होगी।

(मुन्शी बरबादका आना)

मुन्शी बर०—(अलग) फिर यह आदमी यहां आया। या ईश्वर, कहीं यह सास और ससुरजीके सामने मेरी तरफ़से गवाही देनेपर राजी हो जाये तो मैं बाजी जीत जाऊँ। और···

भण्डाफोड़ अल्लाह! तुम भी यहीं मौजूद मगर अजीब बग़लोल हो यार। इसीलिये तुमसे मैंने वह बातें कही थीं कि जाकर सीधे आग ही लगा दो।

मुन्शी बर०—कौन? मैंने आग लगा दी?

भण्डाफोड़ नहीं तो भला उस हरामजादेको मालूम कैसे होता?

मुन्शी बर०—किस हरामजादेको ?

भण्डाफोड़—अरे, उसी कम्बख्त मुन्शी बरबादको। उस उल्लूके पट्ठेने तो ऐसी आफत मचाई कि एकदम जाके उस बेचारीके मां-बापसे उसने कह दिया। बस मालूम हो गया कि तुमसे कोई बात कहने लायक़ नहीं है।

मुन्शी बर०—अच्छा, सुनो दोस्त।

भण्डाफोड़—बस बस, अपनी दोस्ती अपने पास रखो। अगर तुम सबसे कहते न फिरते तो ऐसे मजेकी खबर सुनाता...मगर...नहीं नहीं, तुम इस क़ाबिल नहीं हो कि तुमसे कोई बात कही जाय।

मुन्शी बर०—ए भाई ए, बता दो, क्या कोई नयी बात और हुई है ?

भण्डाफोड़—कुछ नहीं। कुछ नहीं। और जा-जाकर लोगोंसे कहो।

मुन्शी बर०—सुनो तो।

भण्डाफोड़—माफ करो।

मुन्शी बर०—बस एक बात।

भण्डाफोड़—मैं जानता हूं कि तुम वही बात पूछोगे।

मुन्शी बर०—नहीं, ठहरो ठहरो। वह बात नहीं।

भण्डाफोड़—अजी चलो भी। तुम यही पूछना चाहते

होगे कि इस वक्त क्या हो रहा है। मगर मैं ऐसा उल्लू नहीं हूं जो तुम्हें बताऊँ कि घरबिगाड़ने उलझनको रुपये दिये हैं और वह उन्हें इस वक्त उस बुड्ढे के घरके भीतर ले गया है। मैं यह हर्गिज नहीं बतानेका।

मुन्शी बर० —ए—ए—सुनो…

भण्डाफोड़ --अजी जाओ। किसी औरतको चकमा दो……

(चल देता है)

मुन्शी बर० --(अकेला) कम्बख्त भाग गया। मैं चाहता था कि उसको किसी सूरतसे अपने ससुरजीके पास फुसला ले चलूं। मगर खैर, चलते-चलाते उसकी जबानसे यह निकल ही पड़ा कि 'घरबिगाड़' इस वक्त मेरे मकानमें मौजूद है। अब तो ससुरजी मेरी सचाई और अपनी बेटीका कमीनापन अच्छी तरहसे जानेंगे। मगर सारी खराबी यही है कि मैं करूं तो क्या करूं ? अगर घरके भीतर जाता हूं तो यह हरामजादा भाग जायगा। और जो कुछ अपनी आंखोंसे देखूंगा भी वह सब फजूल है। क्योंकि मैं लाख कसमें भी खाऊँ तो भी मेरी बात नहीं मानी जायगी। और अगर उसको बिना अपने घरमें देखे हुए अपने सास-ससुरको बुला लाऊँ तो फिर वही सुबहवाली मुसीबत मेरे सर

आयगी और मैं ही बेवकूफ साबित हो जाऊँगा। कैसे यह पता लगाऊँ कि वह कम्बख्त इस वक्त मेरे घरमें है? (दरवाजेकी सूराखसे देखता है) अरे! है! है! वह है हराम-जादा! और वाह री किसमत! मेरे सास-ससुर भी कैसे मौकेसे आ पहुंचे। अब क्या? मार लिया है।

[मिस्टर और मिसेज धरपकड़का आना]

मुन्शी बर०—लीजिये जनाब, अब तो मेरी बातको आप मानेंगे?

मिस्टर धर०—क्यों, खैरियत तो है?

मुन्शी बर०—हाँ, खैरियत तो सब है मगर मेरी इज्जत-की खैरियत नहीं है।

मिसेज धर०—क्या क्या, अभीतक तुम वहीं सुर अलाप रहे हो?

मुन्शी बर०—जी हाँ। छातीपर कोदो दला जाय। और…

मिसेज० धर०—क्या एटिकेट—Etiquette—

मुन्शी बर०—एटिकेट गई भाड़में। दिलमें आग धधक रही है और आप तमीज सिखा रही हैं। और उधर आप-की लड़की अलग नाकों चना चबवा रही है।

मिसेज धर०—क्या तुम अपनी औरतकी जरा भी इज्जत

नहीं करते ? क्यों, और उसके लिये ऐसे लफ्ज इस्तमाल करते हो ? शर्म !

मुन्शी बर०--और वह तो मेरी बड़ी इज्जत करती है न ?

मिस्टर धर०—मेरी समझमें नहीं आता कि जब आज ही सुबहको तुम्हारी नेकचलन औरतने अपनी सच्चाईका इतना पक्का सबूत दिया तब भी तुम्हारे दिलमें इतमिनान नहीं आता।

मुन्शी बर०--मगर अगर उस आदमीको इस वक्त मैं उसके साथ दिखा दूं तब तो आप मानेंगे ?

मिस्टर धर०—क्या उसके साथ ? कहां ?

मुन्शी बर०- अपने मकानमें।

मिस्टर धर० -तुम्हारे मकानमें।

मुन्शी बर० हां।

मिस्टर धर०—अगर यह सच है तो अलबत्ता तुम्हारी औरतसे हम लोग कोई सरोकार नहीं रखेंगे और उसको एकदम तुम्हारे ऊपर छोड़ देंगे।

मिसेज धर०--मगर कभी यह बात सच हो ही नहीं सकती।

(मुन्शी बरबादके मकानके दरवाजेका खुलना और दरवाजेपर बरबिगाड़, दिलाराम और झलझनका नजर आना)

मुन्शी वर०—लीजिये, अब तो सच हो गई। वह देखिये वह!

घरबिगाड़०—(मिस्टर धरपकड़ वगैरहको बिना देखे हुए) अच्छा तो आज रातको आपसे मुलाक़ात होगी न? ज़रूर? (मिस्टर धरपकड़ वगैरहको देखकर) अररररर? गज़ब हो गया! आपके माँ बाप और मर्द! तीनों यहाँ मौजूद हैं।

दिलाराम०—या ईश्वर! (घरबिगाड़से—अलग) ख़ैर! देखो घबड़ाहट मत जाहिर करो। मैं सब सम्भाले लेती हूं। (प्रकट—घरबिगाड़से) क्या तुम्हारी हिम्मत इतनी हो गई कि तुम चुपचाप मेरे मकानमें घुस आए? निकलो यहाँसे (धक्का देकर बाहर निकालती है और उसके पीछे दिलाराम और उलझन भी बाहर आ जाती है) तुम्हारी दग़ाबाज़ी मुझे ख़ूब मालूम हो गयी। आज सुबहको जब तुमपर यह क़सूर लगाया गया था कि तुम्हारी नीयत ख़राब है, उस वक्त तुमने ऐसी सफाई दिखलाई कि क्या कहना है। उसी वक्त मैंने भी सबके सामने अपने दिलका हाल साफ-साफ बता दिया था। फिर भी तुमको शर्म नहीं आती कि यह सब हो जानेपर भी तुम मेरे पीछे यों पड़े हो। मुझको तुमने क्या समझ रखा है कि तुम मेरे मकानमें यों बेधड़क चले आये? मेरा मर्द यहाँ नहीं है तो क्या, मैं तुम्हारे

फन्दोंमें आ सकती हूं ? मैं वह औरत नहीं हूं कि तुम्हारी लच्छेदार बातों और धमकियोंमें आकर अपनी सचाईको भूल जाऊं। गो मैं औरत हूं तो क्या मगर तुम्हारे लिये काफी हूं। उलझन, ज़रा एक डंडा तो देना। तुम्हारी बिना कुछ खातिर किये यों थोड़े ही जाने दूंगी, ताकि फिर कभी तुम मुझ जैसी शरीफ और नेकचलन औरतपर भूलकर भी नजर न डालो। (उलझन दिलारामको डंडा देती है और दिलाराम उससे घरबिगाड़को मारनेका बहाना करती है। मगर घरबिगाड़ हट जाता है और मुन्शी सरबाद जो पीछे खड़े रहते हैं, उन्हींपर सब डंडे पड़ते हैं)

घरबिगाड़--(इस तरहसे चिल्लाता है गोया वही मारा जाता है) हाय ! हाय ! अरे बाप रे ! जरा धीरे धीरे !

(घरबिगाड़ जाता है)

उलझन—और जोरसे बीबी दिलाराम !

दिलाराम—(उसी धुनमें) यह तुम्हारी बदमाशीका नतीजा है। तुम्हारी बातोंका जवाब इसी डंडेसे हमेशा दिया करूंगी।

मिस्टर घर०—शाबाश बेटी ! शाबाश !

दिलाराम—कौन मेरे बाप ? और मेरी मां ? आप लोग कब आये ?

मिसेज घर० -आ आ मेरी प्यारी बेटी, पहले मेरी छातीसे लग जा। बेशक तूने आज वह काम किया है कि तेरी यह बात नेकचलन औरतोंके इतिहासमें सोनेके क़लम-से लिखने लायक है।

मुन्शी बर० (अलग) मियांकी जूती मियांके सर! अब क्या करूं? यह हरामजादी फिर बाजी मार ले गई।

मिस्टर घर० -मुन्शी बरख्वा! देखते क्या हो? ऐसी नेकचलन और तपानेके लिये अपनी खुशकिस्मतीकी तारीफ करो तारीफ!

मुन्शी बर०---अभी तो मैं अपनी पीठकी मजबूतीकी तारीफ कर रहा हूं।

उलझन --मेरी मालकिन ही ऐसी सीधी हैं तभी तो यह मुसीबत घेरे है। मैं जो इनकी जगहपर होती तो एक मिनट भी इस घरमें न ठहरती। ऐसे मर्दका मुंह न देखती।

मुन्शी बर० चुप हरामजादीकी बच्ची। जलेपर नमक छिड़कने चली है।

दिलाराम—(रो-रोकर) उलझन, तुम न बोलो। मेरी किस्मतहीमें यह बदा है। जब अपना ही आदमी बदनाम करे तो दूसरे तो फिर दूसरे ही हैं।

मिसेज घर०--बदनाम करनेवालेका मुंह काला।

बेटी, तुम औरत नहीं औरतोंकी खूबसूरती हो, जेवर हो, घमंड हो। मुन्शी बरबाद, तुम अपनी औरतके पैरकी धूलको सर चढ़ाओ।

उलझन बेशक।

मुन्शी बर० चुप सुअरकी बच्ची। बेशक कहती है। मारूंगा वह तमाचा कि मुंह टूट जायगा।

दिलाराम (रोती हुई) देखो मां, तुम्हीं सुन लो इनकी बातें।

(भकभकानन्दका आना)

भक० अयं? यह क्या गड़बड़ हो रहा है? यह लड़ाई! यह झगड़ा! यह कलह! यह उपद्रव! यह अनर्थ! यह हल्ला! यह चपेताघात! यह कुटम्बस! बोलो बोलो। बात क्या है? बात क्या है? क्या तुम लोगोंमें सन्धि नहीं हो सकती? आओ आओ, इधर आओ। हमको अपना पंच बनाओ। हम तुम लोगोंमें मेल करा देंगे।

मिस्टर धर०—कुछ नहीं, मुन्शी बरबादकी अक्ल मारी गई है।

भक०—अक्ल मारी गई है? 'अयं इतनीसी बातके कहनेके लिये आपने इतने शब्दोंका प्रयोग किया। यह तो आप एक शब्दमें कह सकते थे।' जैसे, मुन्शी बरबाद मूर्ख

है या मूढ़ है या जड़ है या इनसे भी सरल शब्द कहना चाहते हों तो कहिये मुन्शो बरबाद गदहा है। व्याकरणका—

मुन्शी बर०—अजी, पहले मेरी भी बात सुन लीजिये तब आप अपने व्याकरणका क़ायदा सिखाइयेगा।

भक०—च! च! च! इस स्थानपर "अजी" शब्दका प्रयोग महा अशुद्ध है। शीघ्र इस शब्दको काटकर श्रीमान् बनाओ।

मुन्शी बर०—अच्छा श्रीमान् ही सही। मगर—

भक०—आहाहा! श्रीमान् शब्द कैसा आनन्दकारी है। हे अज्ञानी मित्र, इसको फिर कहो और फिर कहो।

मुन्शी बर०—महाराज, पहले झगड़ा फ़ैसल करनेके लिये कुछ मेरी भी सुनियेगा या ख़ाली श्रीमान् शब्द रटाइयेगा।

भक०—ठहरो! ठहरो! अहाहा! महाराज शब्द भी बड़ा श्रवणसुखकारी है। तनिक इसका रसस्वाद ग्रहण करने दो। आहाहा!

मुन्शी बर०—अब मेरा गुस्सा उबल रहा है।

भक०—उबल रहा है? च! च! च! कहो भड़क रहा है। बस तुम मत बोलो। तुम बहुत अशुद्ध बोलते हो। आप कहिये। इस झगड़ेका कारण बताइये। शीघ्र कहिये शीघ्र। परन्तु अशुद्ध न बोलियेगा।

मिस्टर घर०—महाराज ! असली बात यह है कि मेरा दामाद अपनी स्त्रीके साथ ठीक बर्ताओ नहीं करता।

मुन्शी बर०—क्योंकि यह (दिलारामकी तरफ) पतिव्रत धर्म ठीक तरहसे पालन नहीं करती।

मिसेज घर०—झूठ ! झूठ ! बिल्कुल ग़लत।

भक्त०—यथार्थ है। हे मूर्ख मित्र ! तुम अज्ञानी हो, तुम जड़ हो, तुम महामूढ़ हो। पतिव्रत ऐसे कठिन धर्मका पालन तुम इससे भला अभीसे कराना चाहते हो ? कहीं यह युवा अवस्था और यह कोमल आयु पतिव्रत धर्म पालन करनेके लिये है ? निस्सन्देह ! तुम महा महा महामूर्ख हो। सुनो—

"अशक्तस्तु भवेत्साधुर्ब्रह्मचारी च निर्धनः।
व्याधितो देवभक्तश्च वृद्धा नारी पतिव्रता॥
आर्ता देवान्नमस्यन्ति तपः कुर्वन्ति रोगिणः।
निर्धना दानमिच्छन्ति वृद्धा नारी पतिव्रता॥

और सुनो—

आदौ वेश्या पुनर्दासी पश्चाद्भवति कुट्टिनी।
सर्वोपायपरिक्षीणा वृद्धा नारी पतिव्रता॥"

परन्तु हे मूर्ख मित्र, यह तुम्हारा भी अपराध नहीं है। यह तुम्हारी दामाद-जातिकी बलिहारी है, क्योंकि······

(मुन्शी मरदाद गुस्सेसे बेकाबू हो जाता है और उसे गिराकर उसकी पगड़ीसे उसकी टांगे बांधकर घसीटता हुआ बाहर ले जाता है। और भक्तभक्तानन्द उसी धुनमें श्लोक पढ़ते चले जाते हैं और अंगुलियोंपर गिनते जाते हैं।)

भक०—क्योंकि -

> "सदा वक्रः सदा रुष्टः सदा पूजामपेक्षते।
> कन्याराशिस्थितो नित्यं जामाता दशमो ग्रहः ॥
> आदित्याद्या ग्रहाः सर्वे यथा तुष्यन्ति दानतः।
> सर्वस्वेऽपि न तुष्येत जामाता दशमो ग्रहः ॥

(पर्दा गिरता है)

तृतीय अङ्क

पहला दृश्य

मुंशी बरबादके मकानका बाहरी हिस्सा

(घरबिगाड़ और भण्डाफोड़)

घरबिगाड़—ओफ़ ओ ! रात इतनी अन्धेरी है कि अपना ही हाथ नहीं दिखाई देता। अरे भण्डाफोड़ ! अब बता किधर चलें ?

भण्डाफोड़—ज़रा आप मेरा हाथ पकड़े रहियेगा नहीं तो मैं इस अंधियालीमें जरूर खो जाऊंगा।

घरबिगाड़—मगर इस वक्त दिलाराम मिलेगी ?

भण्डाफोड़—यही मैं आपसे पूछनेवाला था कि इस वक्त उलझन मिलेगी ?

घरबिगाड़—दिलारामके मकानके पास पहुंच तो गये मगर अब क्या करें ?

भण्डाफोड़—बस चुपचाप घर लौट चलिये। मगर रास्तेमें जो कहीं गिरियेगा तो बताके गिरियेगा ताकि मैं न आपके ऊपर भहरा पड़ूं।

घरबिगाड़—(सीटी बजाता है) अगर बुड्ढा सो गया होगा, तो दिलाराम जरूर आयेगी।

भण्डाफोड़—ईश्वर करे मर गया हो।

घरबिगाड़—चुप! पैरकी आहट मालूम होती है।

(दिलाराम और उलझनका दरवाजा खोलकर बाहर आना)

दिलाराम—उलझन!

उलझन—जी।

दिलाराम—दरवाज़ा आधा खुला रखना।

उलझन—आधा खुला है।

(अँधियालीमें सब एक दूसरेको तरफ देखते हैं)

घरबिगाड़—देख, भण्डाफोड़ आ गई।

भण्डाफोड़—अन्धेरेमें कहीं उलझन मुझको मार न बैठे।

घरबिगाड़—चुप, धीरेसे बोल।

दिलाराम—चुप!

घरबिगाड़—(उलझनको दिलाराम समझकर) प्यारी!

दिलाराम—(भण्डाफोड़को घरबिगाड़ समझकर) आपने बड़ी तकलीफ़ की।

उलझन—(घरबिगाड़को भण्डाफोड़ समझकर) मूए, मुझे क्यों पकड़ता है?

भण्डाफोड़ (दिलारामको उलझन समझकर) अरी मेरी उलझन ! बस इसी बातपर शादी कर ले।

घरबिगाड़—कौन उलझन ?

दिलाराम—कौन भण्डाफोड़ ?

घरबिगाड़—दिखाई तो कुछ देता नहीं। दिलाराम, तुम कहाँ हो ?

दिलाराम—यह हूं मैं।

भण्डाफोड़—अररर ! मेरी उलझन किधर गई ?

(सरकके दूर निकल जाता है)

घरबिगाड़—आओ एक तरफ चलके बैठें। (तीनों एक किनारे जाके बैठते हैं)

(मुन्शी बरबादका मकानसे निकलना)

मुन्शी बरबाद—उस हरामजादी औरतने तो नाकोंमें दम कर दिया। किसीकी रात किसीकी बग़लमें कटती है और किसीकी रात पहरा देते हुए कटती है। बुढ़ापेकी शादीका यही नतीजा है। मगर इतनी जल्दी ग़ायब किधर हो गयी ?

भण्डाफोड़—(उलझनको ढूंढ़ता ढूंढ़ता मुन्शी बरबादके पास पहुंचता है और उन्हींको उलझन समझकर कहता है) अरी उलझन ! तुम कहाँ ग़ायब हो गयी थी ? यह तो ज़रा बता दो

कि वह कम्बख्त बुड्ढा मुन्शी बरबाद - ईश्वर उसका सत्यानाश करे— खूब बेखबर सो रहा है न ! उस उल्लूको तो नहीं मालूम कि उसकी बीवी इस वक्त घरबिगाड़के साथ बैठी हुई प्यारकी बातें और लगावटकी बातें कर रही है। वह बुड्ढा इसी क़ाबिल है। सोने दो खूब कम्बख्तको खर्राटे भर-भरके। मगर एक रोज उसकी मनहूस सूरत मुझको भी दिखा दो उलझन। मैं भी उसको ज़रा पहचान लूं। उलझन बोलती क्यों नहीं ? अरे ! एक प्यार जरा दे दो। (मुन्शी बरबादसे लिपटता है और चूमता है। दाढ़ी छूकर) धत तेरी की। घण्टे भरसे मैं बातें कर रहा हूं और यह मुंह उलटा किये खड़ी है (दूसरी तरफ जाकर उसकी पीठसे लिपटता है। मुन्शी बरबाद ढकेल देता है) अरे ! बापरे। तेरा सत्यानास हो।

मुन्शी बरबाद—तू कौन है ?

भंडाफोड़—कोई नहीं।

[भाग जाता है]

मुन्शी बर०—वह कम्बख्त भाग तो गया, मगर यह बता गया कि वह मेरी हरामजादी औरत इस वक्त फिर नया रंग लाये हुए है। मैं अभी-अभी इसी दम उसके मां-बापको बुला भेजता हूं। और इस दफ़े ज़रूर ज़रूर उससे

भरपूर बदला लेता हूं। और इसका कमीनापन उसके माँ बापको दिखाता हूं।......डीवट, ओ डीवट!

(डीवट खिड़कीपर दिखाई देता है)

डीवट—(खिड़की पर) कौन सरकार?

मुन्शी बर०—जल्दी आ नीचे।

डीवट—(खिड़कीसे कूदकर) अब इससे जल्दी क्या हो सकती है?

मुन्शी बर०—कहां है तू?

डीवट—यहां हुजूर। (जिस तरफ़से डीवटकी आवाज़ आयी थी, उसी तरफ मुन्शी बरबाद जाता है। मगर डीवट दूसरी तरफ जाकर खो जाता है।)

मुन्शी बर०—(जिधरसे डीवटकी आवाज आई थी) धीरेसे बोल कमबख्त। सुन। तू अभी मेरे सास-ससुरके पास जा। और उनसे मेरी तरफसे हाथ जोड़के कहना कि अभी इसी दम चले आवें। समझा? अबे सुनता है कि नहीं? डीवट!

डीवट—(दूसरी तरफसे जाकर) हुजूर!

मुन्शी बर०—अबे किधर है तू?

डीवट—यहाँ।

मुन्शी बर०—उल्लू कहींका। मुझसे भागता क्यों है

इस तरहसे ? (मुन्शी बरबाद उधर जाता है जिधरसे डीवटकी आवाज आई थी। और डीवट ऊंघता हुआ फिर दूसरी तरफ जाकर सो जाता है) तू फौरन मिस्टर धरपकड़के पास दौड़ जा। और अभी उनको साथ लेता आ। समझा? डीवट बोलता क्यों नहीं ?

डीवट—(दूसरी तरफसे जागकर) हुजूर।

मुन्शी बर०—मर कम्बख्त इधर आ। (दोनों आपसमें टकराके गिरते हैं) अरे! बापरे! रह हरामज़ादे! ऐसी मार मारता हूं कि तू भी याद करेगा। इधर आ।

डीवट—नहीं हुजूर।

मुन्शी बर०—अबे आता है कि नहीं ?

डीवट—आप मारेंगे।

मुन्शी बर०—नहीं मारूंगा। आ।

डीवट—अपनी कसम ?

मुन्शी बर०—और नज़दीक आ। (डीवटको पकड़कर) दौड़ता हुआ मेरे सास ससुरके पास जा। और उनसे कहना कि एक बड़ी ज़रूरत आ पड़ी है। फ़ौरन चले आवें। साथ लेते आना। समझा ?

डीवट—हां।

मुन्शी बर०—अच्छा दौड़ जा। (अपनेको अकेला समझकर)

अब मैं मकानके भीतर जाता हूं। अबतक—मगर यहां कोई बातें कर रहा है। यह तो मेरी बीबीकी आवाज़ है। हां वही हरामज़ादी है। छिपकर सुनूं क्या कहती है।

(मुन्शी बरबाद अपने मकानके दरवाजेके पास खड़ा होके सुनता है)

दिलाराम—अच्छा, अब जाती हूं। वह अब जागने-हीवाला होगा।

घरबिगाड़—क्यों अभीसे ?

दिलाराम—बहुत देर हो गयी।

घरबिगाड़—हाय ! मैं कैसे अभी आपको जाने दूं ? अभी तो कुछ अपने दिलका हाल कहा ही नहीं।

दिलाराम—ईश्वरने चाहा तो फिर मुलाक़ात होगी।

घरबिगाड़—मगर इस वक्त मेरे दिलकी क्या हालत होगी ?

मुन्शी बर०—(अलग) और इस वक्त मेरे दिलकी क्या हालत हो रही है ?

घरबिगाड़—मुझे तो यह ख्याल मारे डालता है कि आप फिर उस बुड्ढे कमबख्तके पास जा रही हैं।

मुन्शी बर०—(अलग) यह हरामज़ादे।

दिलाराम—इसमें मेरा क्या क़सूर ? मां-बापने ज़बर-दस्ती शादी कर दी। और तुम्हें डाह करनेकी कोई वजह

जवानी बनाम बुढ़ापा

जिस तरहसे बुड्ढे हम लोगोंके साथ ब्याह करके हमारी ज़िन्दगी ख़राब करते हैं। उसी तरहसे हमलोग भी इनकी आँखोंमें धूल झोंककर इनको ख़ूब उल्लू बनाते हैं।

भी नहीं है। मुझे वह एक आंख नहीं भाता। भला कौन नई नवेली बुड्ढे मर्दको प्यार कर सकती है? जिस तरहसे बुड्ढे हम लोगोंके साथ ब्याह करके हमारी जिन्दगी ख़राब करते हैं, उसी तरहसे हम भी इनको आंखोंमें धूल झोंककर इनको ख़ूब उल्लू बनाती हूं।

मुन्शी बर०—(अलग) शाबश! लो और सुनो। बुढ़ापे की शादीका यही नतीजा है।

घरबिगाड़—मगर मेरी तो यह देखके छाती फटती है कि कहां आप और कहां वह बुड्ढा! आप कभी भी उसके लायक़ न थीं।

मुन्शी बर०—(अलग) कहीं यह तेरी जोरू होती तब तुझे मालूम होता कमबख्त। अच्छा, घबड़ाओ नहीं। अभी तुम दोनोंको इसका मज़ा चखाता हूं। जाकर भीतरसे दरवाज़ा बन्द किये लेता हूं। बीबी साहबा, अब रहो रात-भर बाहर ताकि तुम्हारी नेकचलनी ज़रा तुम्हारे बाप भी आकर देख लें।

(मुन्शी बरबाद भीतरसे दरवाजा बन्द कर देता है)

उलझन—देखो बीबी, कितनी देर हो गयी। मेरा कलेजा कांप रहा है। कहीं यह जग न गये हों।

घरबिगाड़—अरे! उलझन! यह क्या ज़ुल्म करती है तू?

दिलाराम—अच्छा अब जाने दो।

घरबिगाड़—क्या जाने दूं? दिल तो लिये जाती हो।

दिलाराम—सलाम।

घरबिगाड़—प्यारी सलाम।

(घरबिगाड़का जाना)

दिलाराम—आओ चुपचाप भीतर हो रहें।

उलझन—दरवाज़ा बन्द है।

दिलाराम—मेरे पास चाभी है।

उलझन—आवाज न होने पावे।

दिलाराम—भीतरसे बन्द है। या ईश्वर अब क्या करूं?

उलझन—आहिस्तेसे डीवरको पुकारो।

दिलाराम—डीवर! डीवर! डीवर!

(खिड़कीपर मुन्शी बरबादका दिखाई पड़ना)

मुन्शी बर०—(मुंह चिढ़ाता हुआ) डीवर! डीवर! यह कौन पुकारता है इस वक्त? अख़्ख़ा! आप हैं? आदाबर्ज़ है मेरी नेकचलन बीवी साहबा! अब ज़रा बताइये तो मिजाज़ कैसा है आपका? हर दफे आप मुझे बेवकूफ बनाकर बाजी मार ले जाती थीं। अब आज कहिये कौनसी चाल चलियेगा?

दिलाराम—अररर ! यह क्या ? जरा इस वक्तकी ठंडी हवा खाने बाहर निकल आई तो उसमें हुई क्या बुराई ?

मुन्शी बर०—जी हां ! आपके हवा खानेका यही तो वक्त है। हवा खाने गई थीं कि यार लोगोंसे गुलछर्रे उड़ाने ? मैं सब देख चुका हूं। मेरी तारीफमें जो-जो बातें आप लोगोंने की हैं वह भी सब सुन चुका हूं। आज ही तो पकड़ मिली हैं आप। घबड़ायें नहीं। जरा आने दीजिये अपने मां-बाप को। दोनोंको मैंने बुलवा भेजा है। आते ही होंगे अभी।

दिलाराम—या ईश्वर !

उलझन—अरे बाप रे बाप !

मुन्शी बर०—अब जिगर थामके बैठो मेरी बारी आई। बीबी साहबा ! आप बहुत मुझे उल्लू बनाती थीं। हर दफे आप अपनी चालाकीसे मुझे झूठा साबित करती थीं। अपने मां बापकी आंखोंमें खूब ही धूल झोंकती थीं। मेरी सच्चाई हर बार आपकी चालाकीके नीचे दब जाती थी। मगर आज सारी कलई खुलेगी। आज ही तो आपको मालूम होगा कि सौ सुनारकी और एक लोहारकी दोनों बराबर हैं।

दिलाराम - हाथ जोड़ती हूं। मुझे भीतर आने दो।

मुन्शी बर०---नहीं नहीं। जरा और ठंढी ठंढी हवा खा लीजिये ताकि आपके मां-बाप भी तो आकर आपकी यह अनोखी हवाखोरीका तमाशा देख लें। जबतक आप उनको धोखा देने और अपनी नेकचलनी साबित करनेके लिये कोई चाल चलिये। कोई बहाना निकालिये कि गत्रि-पूजा करने गयी थीं या किसी लंगोटिया पीरको बतासे चढ़ाने गयी थीं।

दिलाराम नहीं, अब बहाना करनेसे क्या होगा? अब मैं कोई बहाना न करूंगी। क्योंकि अब तो तुमसे कुछ छिपा नहीं है।

मुन्शी बर० हां हां, अब क्यों न आप ऐसा कहेंगे क्योंकि कोई बचतकी राह अब दिखाई नहीं पड़ती।

दिलाराम—मैं मानती हूं। अब तो मुझसे क़सूर हो ही गया। मगर तुमसे मैं मिन्नत करती हूं कि मेरे मा-बापसे यह बात मत कहो, जल्दी दरवाज़ा खोल दो।

मुन्शी बर०—अभी खोलता हूं। बस ज़रा और सब्र करो। वे आ ही रहे होंगे।

दिलाराम—नहीं, मेरे प्यारे, मुझे बचा लो। हाथ जोड़ती हूं।

मुन्शी बर०---"मेरे प्यारे" अब हैं! आजतक तो तुमने कभी मेरे लिये इन रसीले शब्दोंको सपनेमें भी नहीं इस्तमाल किया था।

दिलाराम---मैं कसम खाती हूं कि मैं भूलकर भी तुम्हें कभी अब नाखुश होनेका मौका न दूंगी।......

मुन्शी बर०--माफ़ कीजिये। मैं इन लच्छेदार बातोंमें नहीं आनेका। मैं आपकी इस नेकचलनीका तमाशा आपके मां-बापको बिना दिखाये हुए मानूंगा नहीं।

दिलाराम मगर ईश्वरके लिये मेरी एक बात तो सुन लो। बस, एक ही बात।

मुन्शी बर०---अच्छा कहिये कहिये।

दिलाराम---बेशक, मैंने गलती की। मैं अपने कसूरको मानती हूं और इकबाल करती हूं कि मैंने बड़ा भारी कसूर किया। मैं क्या करूं? जवानीकी उमंगने मेरी समझकी आंखोंपर थोड़ी देरके लिये पर्दा डाल दिया और मैं तुम्हें सोता हुआ छोड़कर उस आदमीसे मिलनेके लिये निकल खड़ी हुई।.........

मुन्शी बर०---जी हां, बुढ़ापेकी शादीका यही नतीजा है कि बूढ़े मियां घरकी रखवाली करें और बीवी हवा खाने जायें।

दिलाराम—मगर अब मेरी आंखें खुल गयीं। मैं अपने क़सूरोंकी मांफी चाहती हूं। मेरे पापी मनको मांफ कर दो और मुझे बुराईसे बचा लो, क्योंकि अभीतक केवल मन ही मेरा पापी है, जीव नहीं, आत्म नहीं, शरीर नहीं। इसीलिये तुमसे बारंबार प्रार्थना करती हूं कि मेरे अपराधों को क्षमा करके मुझे बुराईसे बचाओ। भलाईका रास्ता दिखाओ। मुझे अपने भूले हुए कर्त्तव्योंका फिरसे पालन करने दो। मैं तुमसे कुछ नहीं चाहती। बस यही कि मुझे मां-बापके कोपसे बचा लो। द्वार खोलो। शरण दो। मैं तुम्हारी तन-मन-धनसे सेवा करूंगी। सम्पूर्ण हृदयसे तुम्हें अब प्यार करूंगी। द्वार खोलो।

मुन्शी बर०—धन्य हो मेरी पतिव्रता स्त्री, धन्य हो।

दिलाराम—बस बस, अब ज्यादा संस्कृत न छांटो।

मुन्शी बर०—तुम्हारी चिकनी-चुपड़ी बातोंमें मेरा ईमान फ़िसला जाता है।

दिलाराम—मुझपर दया करो।

गाना

दिलाराम—सइयां सइयां अपराध करो मेरा क्षमा।

कर जोड़े खड़ी हूं मैं पिया,

हे नाथ करो अब तो दया।

दासी तुम्हारी हूं नारी अपराधी हूं रह रह पछताती हूं--

कर दो क्षमा। सइयां सइयां—

तुम हो मेरे नाथ गुसइयां, तुमपर मैं जाऊंगी वारियां।

बलिहारियां। सइयां गुसइयां पै जाउं।

वारी वारियां,

मुन्शी चर०--(उंगलियोंसे अपने दोनों कान बन्द कर लेता है) बस! चुप! चुप! यहां Heart fail हुआ जाता है।

दिलाराम—यह अभागिनी तुम्हारी ही स्त्री है, मत ठुकराओ।

मुन्शी चर०---उफ! चुप।

दिलाराम---हाथ जोड़ती हूं।

मुन्शी चर०—नहीं नहीं। मैं कुछ न सुनूंगा।

दिलाराम—पांव पड़ती हूं। शरण दो।

मुन्शी चर०—कभी नहीं।

दिलाराम---नहीं नहीं, इस तरह मुझे हताश मत करो। नहीं, मैं बताये देती हूं, कि स्त्री मेरी ऐसी दशामें जो न कर बैठे वही थोड़ा है। मैं भी जो अपनी हठपर आऊँगी तो ऐसी कोई बात कर बैठूंगी कि तुम बहुत पछताओगे।

मुन्शी बर०---(कानोंसे उ'गली हटाकर) कौन-सी बात कह बैठोगी, जरा मैं भी तो सुनू' ?

दिलाराम—मैं अपनी जानपर खेल जाऊ'गी और इसी जगह इस छुरीको अपने कलेजेमें भोंककर जान दे दूंगी।

मुन्शी बर०-- आहाहा ! बहुत अच्छा।

दिलाराम—नहीं, यह हँसनेकी बात नहीं है। हम लोगोंके लड़ाई-झगड़ेका और तुम्हारी निर्दयता और कठोर व्यवहारका हाल किसीसे छिपा नहीं है। और जब यह लोग मुझे यहां मुर्दा देखेंगे तो सब यही समझेंगे और कहेंगे कि इसीने अपनी औरतको मार डाला है और मेरे बाप ऐसे आदमी नहीं हैं कि मेरी मौतका बदला न लें। वे तुम्हें जरूर जरूर फांसी दिलवा देंगे और इस तरहसे तुम्हारी इस कठोरता और निर्दयताका बदला मरकर लूंगी। बलासे मेरी जान जायगी। मगर समझ रखो, इसीके साथ तुम्हारी भी जान जायेगी।

मुन्शी बर०—बीबी साहबा, खुदकुशी करनेका अब फैशन नहीं रहा। वह जमाना गया। आजकल जान बड़ी प्यारी होती है।

दिलाराम—अब भी दरवाज़ा खोल दो। नहीं तो मैं सच कहती हू', कसम खाकर कहती हू' कि अभी मैं छातीमें छुरी भोंके लेती हू'।

मुन्शी ख़र० -कान पकड़ता हूं कि कभी फिर ऐसी बेवकूफी न करूंगा और आइन्दा तुम्हारे साथ अच्छा बरताओ रखूंगा।

मिस्टर ख़र० - खबरदार! याद रखना, अब जो तुम्हारी कोई बेतुकी बात सुनी तो जानो तुम्हारी ख़ैरियत नहीं।

मिसेज़ ख़र०—और जो मैं कहीं कुछ भी सुन पाऊंगी तो अब न मानूंगी और तुम्हें कच्चा खा जाऊंगी।

(दूसरे मकानकी खिड़कीका खुलना और उसपर भकभकानन्दका दिखाई पड़ना)

भक०—अयं, क्या फिर लड़ाई! फिर झगड़ा! फिर उपद्रो! फिर कलह! कोई घड़ी चैन नहीं। तनिक देर विश्राम नहीं। जब देखो तब कुहरवस! चपेलघात! मारामारी! उठापटक! अयं?

मिस्टर ख़र० - कुछ नहीं, मियां-बीवीकी लड़ाई थी। सुलह करा दी। अब कोई झगड़ा नहीं है।

भक० नहीं, इन दोनोंको व्याकरण पढ़ा दीजिये तब फिर कभी कोई झगड़ा नहीं होगा। हे मूढ़ मित्र, जबतक व्याकरण न पढ़ोगे तबतक तुम महा उल्लू रहोगे। इसीलिये इधर आओ, हम तुम्हें अभी सिद्धान्तकौमुदी पढ़ा दें। और आप लोग भी खड़े-खड़े सुनिये।

मिस्टर धर०—कै सफेका है ?

भक०—चार सौ पचहत्तर पन्नेका। अभी समाप्त कर दूंगा।

मिस्टर धर०—माफ कीजिये जनाब इस वक्त। मुन्शी बरबाद! अब हम लोग जाते हैं। मगर अब देखो, अपनी औरतको हमेशा खुश रखना। समझे ?

भक०—आहाहा! स्त्रीको मोहित करनेका उपाय तुम नहीं जानते। इसीसे कहता हूं व्याकरण पढ़ो। सुनो—

"हसता लभ्यते नारी रुदता लभ्यते धनम्।
पठता लभ्यते विद्या त्यजता लभ्यते यशः॥"

(मिस्टर और मिसेज् धरपकड़का जाना। डिलाराम और उलझनका मकानके भीतर आना)

भक०—अयं! सब चल दिये बिना इस श्लोकका अर्थ सुने हुये!

मुन्शी बर०—आह! मुन्शी बरबाद! जाओ, जैसा किया वैसा भुगतो। उसकी चालाकीके आगे तुम्हारी कभी दाल नहीं गल सकती। तुम्हारे लिये मुनासिब यही है कि गलेमें चक्की बांधके गंगामें डूब मरो। बुढ़ापेमें शादी और खास कर ऐसी औरतके साथ करनेका यही नतीजा है। छोड़ो उसे उसकी मर्जीपर। जैसा उसके जीमें आवे वैसा

उसको करने दो। जवानीके आगे बुढ़ापेकी चल नहीं सकती।

भक्त०- क्या बड़बड़ाते हो? बुढ़ापेका ब्याह! आहाहा! सुनो!

"अनभ्यासे विषं शास्त्रं अजीर्णे भोजनं विषं।
मूर्खस्य च विषं गोष्ठी वृद्धस्य तरुणी विषं।"

क्यों? इसकी कहानी भी सुनाता हूं। रुको जरा पोथी ले आऊं।

(खड़कीपरसे गायब होता है।)

मुन्शी बर० यहाँ रोज हो यही होता है। चलो मुन्शी बरबाद, मुंह लपेटके पड़ रहो। समझो कि आजसे तुम्हारे आंख-कान कुछ भी नहीं हैं।

[जाता है]

[ड्रापसीनका गिरना और तमाशेका खतम होना]

११—मीठी हँसी

ले०—श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल० एल० बी०

यथा नाम तथा गुण—प्रत्येक शब्द रोतेको हँसानेवाले और हृदयको गुदगुदानेवाले हैं। इसमें तीन खण्ड हैं। खण्ड क्या हैं, तीन प्रकारके आमोदके खजाने हैं। किसीमें हँसीका आनन्द है तो किसीमें कविताओंकी बहार। अन्तमें मनोहर गानोंसे सूखा हृदय भी पनप उठता है। गरज यह कि पुस्तक क्या है त्रिविध समीर भरी चमन है। पुस्तक हाथमें उठाते ही हँसने लगियेगा और तबतक हँसते रहियेगा जबतक समाप्त न हो जायगी। अनेको चित्रोंसे सुशोभित पुस्तकका मूल्य १॥) मात्र।

भगवानकी लीला

लेखकने पुस्तकमें इस अवनीतलमें हमारे आनेका उद्देश्य बतलाया है। उन्होंने दिखलाया है कि हम उस परमपिताकी लीलाके पात्र हैं। हम स्वयं कुछ नहीं कर सकते। अपनी इच्छाके अनुसार वह हमें नचाता है। इसलिये हमें फलाफलका कोई विचार नहीं करना चाहिये। यह शरीर उसका है और वही इसका मालिक है। मूल्य ॥)

नारी-रहस्य

लेखकने दिखलाया है कि समाजमें स्त्रियोंका वास्तविक स्थान वही नहीं है जो हमने दे रखा है। शास्त्रोंमें उन्हें अर्द्धाङ्गिनी संज्ञा दी गई है और वास्तवमें उनका वही पद है। जबसे स्वार्थान्ध होकर हमने उन्हें नीचे गिरा दिया तबसे हमारा भी पतन हो गया। पुस्तक इतनी उपयोगी है कि वर्त्तमान सामाजिक हलचलके युगमें इसे अवश्य पढ़ना चाहिये। १३६ पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य ॥)